

NOT FOR SALE

गिरिखिल गुरु तत्व सिद्धि विशेषांक

अप्रैल 2005

मूल्य : 18/-

गुरु-तत्त्व-यांक

विज्ञान

२५

अप्रैल

A Monthly Journal



गुरु - शाश्वत, अजन्जन, थुड़
अक्षय सिद्धि - इसी जीवन में

गुरु कृपा से - पूर्णत्व
मत घबटाइये - शक्ति से



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

त्रुक्खं पौथिन बाची, मैं कहुं आत्मिनं देखी



ज्ञान रूपी गंगा, क्रिया रूपी यमुना,
लाणी रूपी सरस्वती का मेल है -
सद्गुरुदेव के अमृत वचनों में,
जो क्षिंचन कर देते हैं साधकों के
हृदय और मन को।

जिस वाणी में है -
ब्रह्म का ज्ञान, शिव का ओज और
विष्णु का तेज समाहित है

ऐसे अमृत प्रबन्धन सुनिये बार-बार -



न्यौषाकर प्रति आँडियो - सीढ़ी 40/-

डाक खर्च अतिरिक्त



मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ण, हाईकोर्ट,
कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010

- ◆ गुरु गीता
- ◆ संगीत सरिता
- ◆ गुरु गंगा
- ◆ प्रातः कालीन वेद ध्वनि
- ◆ संध्या आरती
- ◆ प्रीत पायल
- ◆ बाजे कण-कण में
- ◆ गुरुनाम रस पीजे
- ◆ जब याद तुम्हारी आई
- ◆ ध्यान धारणा और समाधि
- ◆ दैनिक साधना विधि
- ◆ गुरु गति पार लगावै
- ◆ गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊ
- ◆ गुरु बिन गतिबासि
- ◆ गुरु हमारी आत्मा
- ◆ गुरु पादुका पूजन
- ◆ विशेष गुरु पूजन
- ◆ निखिलेश्वरानन्द स्तवन
- ◆ दुर्लभोपनिषद्
- ◆ मैं गमस्थ बालक को
- ◆ वेतना देता हू भाग 1-2
- ◆ शक्तिपात (पूर्वजन्म दर्शन)
- ◆ अमृत महोत्सव 1997 भाग 1-5
- ◆ गुरुपूर्णिमा हैदराबाद भाग 1-5
- ◆ गुरु हृदय स्थापन प्रयोग
- ◆ अक्षय पात्र साधना
- ◆ हनुमान साधना
- ◆ अमोघ सावर साधनाएं
- ◆ पुष्पदेहा आप्सरा साधना
- ◆ महाकाल प्रयोग
- ◆ महाकाली स्वरूप साधना
- ◆ कुम्भाण्डा प्रयोग

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उच्चति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मारिक पत्रिका

श्रीगुरुप्रकाश

॥ॐ परम तत्त्वाय नाकायणाय गुकभ्यो नमः ॥



सदगुरुदेव लिखा जीवन तरिया

सदगुरुदेव

सदगुरु प्रवचन

साधना

अक्षय तृतीया पर विशेष

तारा साधना 30

बगलामुखी साधना 31

इतर योनि साधना 32

सम्मोहन साधना 33

उर्वशी साधना 34

सावर साधनाएँ 37

मोहिनी महाविद्या 47

शनि साधना 51



स्तोत्र

गणेश स्त्रोतम् 82

विचेचन

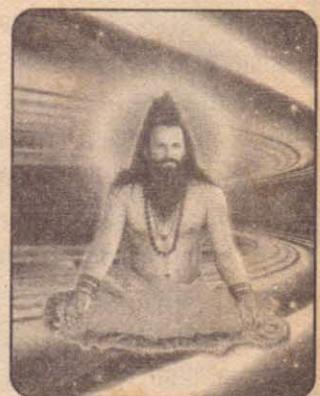
सदगुरुदेव निखिल युग

पुरुष-युग पुरोधा 23

अक्षय तृतीया 28

शनि देव 51

गुरु... गुरु... गुरु... 66



स्तरभ	
गुरुवाणी	44
शिष्य धर्म	46
नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
वाराहमिहर	63
जीवन सरिता	64
इस मास दिल्ली में	80
एक दृष्टि में	86



पूजन

गुरु पूजन 75



विशेष

गुरुदेव परमं गतिः 50

गुरु अमृत वचन 59

शक्तिपात युक्त दीक्षा 71

:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेब, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 011-27196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtvv@siddhashram.org

वर्ष 25 अंक 04
अप्रैल 2005 पृष्ठ 88



21

प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
से मुद्रित तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 18/-
वार्षिक: 195/-

त्रियम्

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धूमकंड़ साधु—संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद—विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद—विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद मैं असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद—विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें। इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता—असफलता, हानि—लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या सन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

★ प्रार्थना ★

वन्दे नारायणं देवं सद्गुरुं निखिलेश्वरं,
ज्ञानामृतरसेन्द्रैव पूतं वेनाच्चितं जगत्।
अज्ञानान्ध विद्याताय शिष्यसंतोष हेतवे,
साध्ये सिद्धिः सतामस्तु त्वत्प्रसादाभ्वरोत्तम्॥

जिसने अपने ज्ञान रूपी अमृत से समस्त विश्व को पावन किया है, उन नारायण स्वरूप गुरुदेव निखिलेश्वर को मैं भावपूर्ण हृदय से नमन करता हूँ। संसार के अज्ञान रूपी अन्धकार के नाश के लिए तथा शिष्यों के कल्याण हेतु है नरोत्तम! आप की कृपा से साधकों को साधनाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

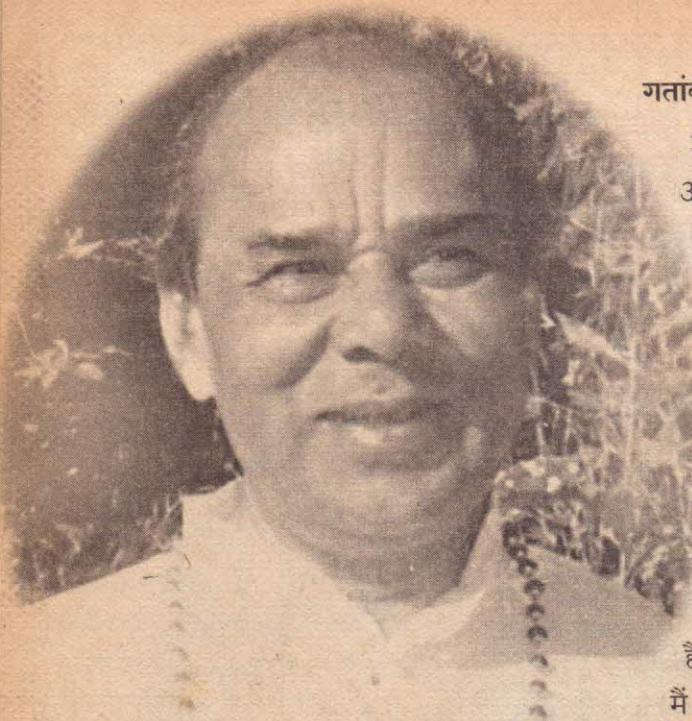
★ तिमिर ★

सूर्य की रश्मियों से ही चन्द्रमा में प्रकाश है और वह प्रकाशवान दिखाई देता है... जबकि यह दृश्य प्रत्यक्षतः स्पष्ट दिखाई नहीं होता है, कि सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा पर और अन्य तारा मण्डल पर पड़ रहा है और वे उसी से जगमगा रहे हैं... यह सब अदृश्य रूप से होता है और यह बात ध्रुव सत्य है... ठीक ऐसा ही शिष्य का जीवन होता है, उसके स्व के अन्दर कोई विशेषता नहीं होती, पर वह धीरे-धीरे प्रसिद्धि के शिखर की ओर उन्मुख होता ही जाता है, ज्यों-ज्यों उसके अन्दर गुरु के प्रति समर्पण, सेवा और भक्ति का चन्द्रमा जगमगता है... उसका नाम, यश, समाज में चन्द्रमा की किरणों की भाँति बिखरता ही जाता है और शिष्य को यह भान भी नहीं होता कि यह सब कैसे हो रहा है... वह तो सोचता है, कि यह प्रतिभा उसकी स्वयं की है और एक क्षण ऐसा आता है, कि वह प्रसिद्धि के मद में आकर गुरु के सान्निध्य को त्याग देता है, अपने निज के स्वार्थ की पूर्ति के लिए... और गुरु से अलग होते ही उसे वस्तु-स्थिति का भान हो जाता है, कि क्या सही है? समाज की विषमताओं के बीच जाकर धीरे-धीरे वह अधोगामी होता जाता है। इस सम्बन्ध में मुझे एक कथा स्मरण आ रही है -

पौष की कड़कड़ाती ठंड में ऋषि गर्ग विचार मग्न बैठे हुए थे... सांझ की बेला थी... ठंड कम करने के लिए कोयलों से भरा अलाव धाक रहा था... गर्ग का प्रिय शिष्य 'विश्रवानन्द' जिसके ज्ञान की गरिमा की चर्चा जनमानस में फैलती जा रही थी, इस बात से उसे धीरे-धीरे अभिमान त्यागने का निश्चय कर वह गुरु के पास गया... ऋषि गर्ग उसकी मनोस्थिति को पढ़ रहे थे... पर फिर भी मौन थे, उन्हें अपने पर पूरा विश्वास था, कि मेरे द्वारा लगाया पौधा मुरझा नहीं सकता... विश्रवानन्द ने गुरु से आज्ञा मांगी... ऋषि गर्ग मौन बैठे रहे... थोड़ी देर बाद उन्होंने धधकते अलाव से एक कोयले के टुकड़े को जो काफी तेजी से दहक रहा था... बाहर निकाला... कोयले का टुकड़ा कुछ देर तक तो जलता रहा... पर धीरे-धीरे उसकी दहकता शांत होती गयी, उस पर राख की परत चढ़ती गयी, देखते-देखते उसकी आभा धूमिल हो गयी... विश्रवानन्द खड़े-खड़े यह क्रिया देख रहे थे... समझ लिया गुरु के मौन संकेत को... और चुपचाप आश्रम के अन्दर जा कर साधनारत हो गये।



सद्गुरु देव मिल्या जीवन तरिया



गतांक से आगे -

सद्गुरु और शिष्य का आपसी मिलन, भावों का आदान प्रदान ही शिष्य के जीवन की महान् घटना है, गुरु ही प्रठार कर अपने शिष्यों के इन बन्धनों से काटते हैं जो सर्प की भाँति उसे संसार चक्र में जकड़े होते हैं शिष्यों को उसके जीव का ज्ञान कराता हुआ सद्गुरुदेव का यह ओजस्वी प्रवचन -

जिसके माध्यम से उसको देखते ही सामने वाला कोई भी जड़, जीव, जन्म, चाहे पक्षी, चाहे मृग, चाहे शेर, चाहे घरवाली हो, वह तो आपको देखें और अपने आप उसके मन में यह योग उठे कि मुझे उससे मिलना है। आई वॉन्ट टु टॉक, मैं उससे बात करना चाहता हूँ या मैं बातचीत करना चाहती हूँ। अब यहां पर, यहां भी क्रिया हो गई, उसके बाद मैं आपकी उम्र क्या है, आपकी जाति क्या है, आपका रंग क्या है, आपका कद क्या है, आपकी लंबाई या चौड़ाई क्या है, ये सब बेकार चीजें हो जाती हैं वह अपने आप में इतनी रखती। प्रेम के लिए ये बाकी चीज गौण है, आपकी आंख अपने आप में महत्वपूर्ण है, उन आंख में वह क्रिया भरे।

वेल्यु नहीं

रखती। प्रेम के लिए ये बाकी चीज गौण है, आपकी आंख अपने आप में महत्वपूर्ण

है, उन आंख में वह क्रिया भरे।

यह उन श्लोकों में समझाया गया है और मैं समझता हूँ कि संसार में उससे उच्चकोटि के श्लोक नहीं हैं। उन श्लोकों के आधार पर सांदीपन ने जो कृष्ण के गुरु थे, उन्होंने उनको सम्मोहन प्रयोग सिखाया। उस द्वापर युग में भगवान् कृष्ण के अलावा कोई और व्यक्ति ही नहीं था जो इस प्रकार का हो। कौरव भी उनको अपना मार्गदर्शक मानते थे, युधिष्ठिर भी मानता था ये मार्गदर्शक है, भीष्म भी मानते थे, पांडव भी मानते थे, कुंती भी मानती थी, द्रौपदी भी मानती थी, गोपियां भी मानती थीं, रुक्मणी भी मानती थी, मां यशोदा भी मानती थी, देवकी भी मानती थी, सब लोग चाहे कौरव हो, चाहे पांडव हो, चाहे शत्रु हो, चाहे मित्र हो। जो निधर भी देखता वो सोचता कि कृष्ण हमारे सलाहकार है, सखा है, मार्गदर्शक है, दुश्मन तो नहीं मान सकते, जबकि ये मालूम है कि ये पांडव की तरफ है हमारे तरफ है ही नहीं, तो कौरव कैसे उनको हाथ जोड़ते, कैसे उनके चरणों में रहते?

क्यों उनकी बात मानते, बात क्यों मानते, उनके शरीर में तो कोई ऐसी चीज थी ही नहीं, उनकी आंख में चीज थी। उस आंख में वो सम्मोहन था, जिसके माध्यम से शत्रु भी उनके वश में रहते। यह क्रिया यह चीज कैसे प्राप्त हो, इसके लिये कभी बोला ही नहीं। सन्न्यासी जीवन में तो बोला, परंतु वहां भी कंट्रोलिंग में बोला। गृहस्थ में तो बोला ही नहीं क्योंकि अगर बोला तो ये शिष्य तो हाथ से चले ही जायेंगे वापस आयेंगे नहीं। क्योंकि प्यार के फ़िल्ड में घुमते रहेंगे, वहीं पर रहेंगे। मतलब आज बात चल रही है, क्या चीज है? जिसके माध्यम से हम भी ऐसा कर सकते हैं?

पर पहली बात मैं यह कह रहा हूँ कि अगर प्यार जीवन में नहीं है तो हरियाली नहीं है, जीवन में अद्वितीयता नहीं है। जीवन में आनन्द नहीं है, जीवन में उमंग नहीं है। सुबह उठे स्नान किया, पत्नी को एक-दो गालियां दी, उसने हमको गालियां दी जाते वक्त हाथ में एक थैली पकड़ा दी, सब्जी लेते आना शाम को आते वक्त। आप चले गये नौकरी को और एक टिफिन भी दे दिया। खाना खाया, अफसर को भी गालियां दी बेकार है साला, कैसा अफसर बैठा है? इसके मरे बगैर इससे पिंड नहीं छूटेगा। यह पिंड छूटेगा भी या नहीं? शाम को वापिस घर आये खाना खाया

और सो गये, बस खत्म।

इसके अलावा आपके जीवन में सरसता कहां है? कौन सी मधुरता है?, कौन सा हास्य है? उम्मीद कहां है? जोश क्या है? मैं तुमसे कह रहा हूं हंसो, मुस्कुराओं, हंसोगें कहां से? तुम्हारे जीवन में उमंग है ही नहीं, कहां से हंसोगें तुम? मेरा कहना बेकार सा है क्योंकि तुम्हारे जीवन में वो चीज नहीं है जिसको प्रेम कहते हैं। वो सम्भव ही नहीं है।

इसलिये मैं कहूंगा भी तो आप दांत खोल, मुँह चौड़ा कर नकली हंसी हंस दोगे। मैं सोचूंगा आप मुस्कुरा दिए। वापिस आप वैसे के वैसे खड़े हो जाओगे जैसे थे। मेरे कहने से भी आपके चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं आ सकती, ओज नहीं आ सकता, उमंग नहीं आ सकती और नहीं आ सकती तो आप खुद सोच लीजिये आपके जीवन में आपको क्या प्राप्त हुआ? उमंग नहीं, जोश नहीं, आनन्द नहीं, अगर यह स्थिति ही नहीं है तो फिर ये कवाली, गजलें, ये शॉयर, ये शायरी यह सब कुछ का तो आपके जीवन में मतलब ही नहीं है। नृत्य, डांस ये सब कुछ बेकार हैं और जिसको जीवन में कुछ प्राप्त नहीं होता है वो दूसरों को गालियां देता रहता है।

प्रेम करना, प्यार करना या प्रणय करना अपने आप में गुनाह है ही नहीं और यदि आंख में वो वशीकरण, वो सम्मोहन किया है तो आपके और पत्नी के बीच में लड़ाई, झगड़ा हो ही नहीं सकता। सबसे बड़ी Problem आपकी पत्नी ही है आपके घर में। बाकी कोई हैडक है ही नहीं और वो हैडक मिट नहीं सकती। उसको आप घर से निकाल नहीं सकते। क्योंकि घर में एक बार ले आये, तो ले आये। अब करें क्या? उसको समझायें तो समझें नहीं। मनाये तो मानें नहीं। बात करें तो बात करे नहीं। क्योंकि उसे तो यह हक है कि मैं पत्नी हूं और पतिव्रता हूं और पतिव्रता उसको कहते हैं जो पति को व्रत कराती रहे, एकादशी का व्रत कर, पूर्णिमा का व्रत कर, आज ये व्रत कर और जबरदस्ती व्रत कराती रहे। जो जबरदस्ती व्रत कराती रहे वही पतिव्रता है। जो पतियों को व्रत कराती है वो पतिव्रता है। आगे पतिव्रता की कोई परिभाषा नहीं है। बस इतनी ही परिभाषा है।

हम किस प्रकार इस खूंखार शेरनी को वश में करें। कैसे उन दुष्टों को, जो आस-पास हमको गालियां देते हैं उनको वश में करें और उनको वश में करने के बाद प्रेम भरें और अपने जीवन में उमंग आये, हरियाली आये, मस्ती आये, जोश आये, जिन्दादिली आये। उसके लिये हमको सांदीपन का सहारा लेना पड़ेगा। सांदीपन के श्लोकों का सहारा लेना पड़ेगा। जिसमें उस अचूक ज्ञान, उस चिंतन, उन भावनाओं को, उस क्रिया को दिया है। जिस क्रिया को उसने कृष्ण को दिया और कृष्ण जैसा प्रेमी पैदा ही नहीं हुआ और पैदा हो नहीं सकता क्योंकि कृष्ण को पूरी तरह से सांदीपन ने उस ज्ञान, उस क्रिया को, उस मंत्र को दिया। जिस मंत्र के माध्यम से उन्होंने वह समस्त देवताओं को भी, शत्रु को भी, मित्र को भी, गोपियों को भी, गोपिकाओं को भी, सबको अपने नियन्त्रण में बनायें रखा।

वैसा हमारा जीवन भी बनना ही चाहिये और उसके लिये उम्र कोई बाधक होती ही नहीं, उसके लिये जाति भी, बाधक होती नहीं, उसके लिये रंग कोई बाधक होता नहीं, कोई ठिगना या ऊंचा कुछ बाधक नहीं होता।

मैंने कहा ये सब आंख के बाद की क्रियाएँ हैं। जब पहली बार, आपने देखा आपका ऑफिसर है और आपने देखा और उसने आपकी तरफ देखा, उसके बाद वह आपको मना कर ही नहीं सकता, किसी बात के लिये। उसको सम्मोहन सिद्धि कहा जाता है।

होली का यह अवसर है। यह बात प्रेम की, बीच में छिड़ गई। हमें तो साधनाओं की बात करने की आदत है। यह भी आपने आप में एक साधना है। आपने बगुले को देखा होगा, पानी के अन्दर बगुला एक पैर पर खड़ा रहता है। दूसरा पैर पानी में फेंकता नहीं और उसकी आंख पानी में बिल्कुल रहती है, एक घंटा, डेढ़ घंटा बिल्कुल आंख की पलक नहीं झपकाता। और ज्योंहि मछली पास में आती है झट से खा लेता है वो भी बिना पलक झपकायें, पलक झपकाता ही नहीं है एक घंटे भर भी। एक ही टांग पर, दूसरी टांग जमीन पर रखता ही नहीं है वो। हमारे जीवन में भी अब ये प्रसंग छिड़ा है और होली का यह पर्व है। ऐसा पर्व जिस पर्व तो ये साधनाएँ अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। मैंने पहले ही यह बताया था सांदीपन के पहले श्लोक में यह लिखा है कि जिसमें नक्षत्रों का मेल हो, जिसमें उल्लास हो, उसने उल्लास शब्द होली को बोला, होली के ये क्षण उल्लास के क्षण होते हैं, उल्लास के दिन हैं। उन दिनों में यदि यह प्रयोग किया जाये तो अपने आप में पूर्ण सम्मोहन प्रयोग सिद्ध होता है।

कृष्ण को सांदीपन ने उसी दिन दीक्षा दी थी जिस दिन होली का पर्व था।

प्रारम्भ में मैंने आज का प्रवचन शुरुआत करने से पहले कहा कि आप मुस्कुराहट के साथ खड़े रहो। मगर मैं जानता था कि आपकी मुस्कुराहट क्षणिक है क्योंकि आपके अन्दर प्रेम की वह रचना बनी ही नहीं है, आपके अन्दर वो पंक्ति ही नहीं बनी जिसके माध्यम से प्रेम किया जा सकता है और हम जीवन में प्रेम करते रहे। हम प्रेम करें, ना करें यह तो सैकण्डरी चीज़ है। हम खड़े रहे और लोग हमें प्रेम करें। हमारे पीछे घुमे, हम बोलें, उसकी आज्ञा पालन करें। यह तभी सम्भव है जब हमारी आंखों में वो ताकत और श्रद्धा आ जाये, इस प्रकार की साधना को सम्मोहन साधना या सम्मोहन प्रयोग कहते हैं।



जो हमारा गोत्र है, जो हमारा शरीर है वो अपने आप में वापिस प्रफुल्लित हो जाये और वापिस तरोताजा हो जाये उसको संगीत कहते हैं। जो ऐसा कर दें उसको संगीतकार कहते हैं। जब एक आदमी मस्त हो जाये, झूमने लग जाये, एहसास होने लग जाये ऐसा ही व्यक्ति हृदय वाला होता है। जो शुष्क और पाषाण होते हैं, सुखे हुए काठ होते हैं, ना उनमें हरी पत्तियां आती हैं, ना उनमें फूल आते, ना फल आते हैं, ना उनमें मुस्कुराहट होती है। कुछ होता ही नहीं है। सरस हृदय, अमृत हृदय ही होना चाहिए। हर समय एक जैसा दिमाग, व्यस्त, भक्ति के मार्ग में ऐसा नहीं चलता। ऐसा कोई भक्त पैदा ही नहीं हुआ है जिसने प्रेम नहीं किया हो, जो झूमा नहीं हो, जो नाचा नहीं हो, चाहे सूर को देखें, चाहे तुलसी को देखें, चाहे मीरा को देखें, चाहे नानक को देखें सभी लोगों ने जीवन में प्रेम किया है। तब ऊँचाईयों पर पहुंचे हैं, तभी हृदय कमल विकसित हुआ है। जब हृदय कमल विकसित होगा, तब आंख में आंसू आयेंगे, क्योंकि हृदय कमल जब विकसित होगा। तब एक बैचेनी होगी, एक दर्द होगा, एक पीड़ा होगी, एक अहसास होगा कि कोई मेरा है। कोई मुझे याद कर रहा है जो मुझे मिला नहीं और ज्योंही यह बात हृदय से निकलेगी, आंख में आंसू आयेंगे और आंख के आंसू सब बात कह देंगे, जो आपके अन्दर है, जो आपके अन्दर छुपी हुई है, जो आप मुंह से बोल सकें नहीं बोल सकें और अगर आंसू नहीं आ सकते, आंखें आसुओं से नहीं भीग, हृदय कमल विकसित नहीं हो सकता।

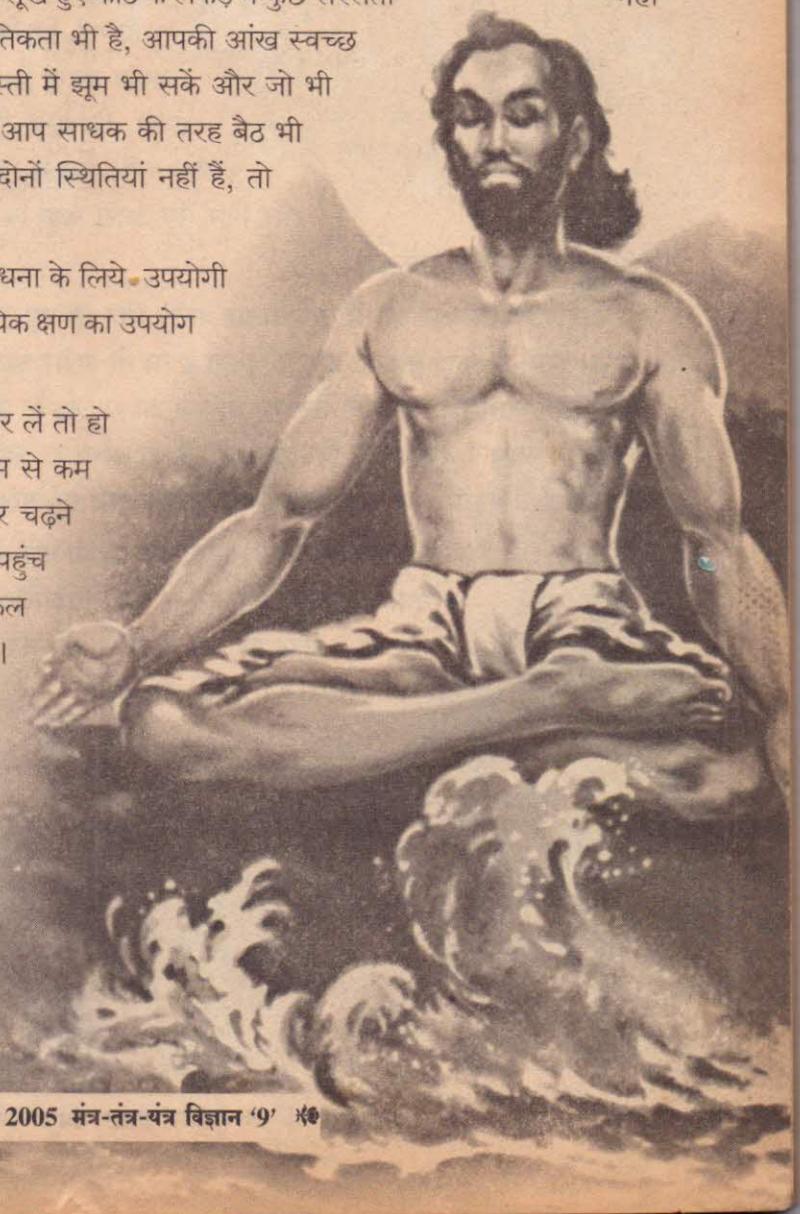
शुष्ककाठंच पुरुषंच

आंख में आंसू, हृदय में प्यार, प्रेम, स्नेह, ऐसा सूखे हुए काठ के लकड़े में कुछ सरसता आ सकती। आपके जीवन में सरसता भी है, भौतिकता भी है, आपकी आंख स्वच्छ भी है, आपके जीवन में पवित्रता भी है, आप मर्स्ती में झूम भी सकें और जो भी साधना आपको मैं करवा रहा हूं उस साधना में आप साधक की तरह बैठ भी सकें। ये दोनों स्थितियां होनी चाहिये अगर ये दोनों स्थितियां नहीं हैं, तो पुरुषत्व नहीं है।

नहीं

कल का दिन और आज का दिन किसी भी साधना के लिये उपयोगी है, एक-एक पल हमारे लिये ज्यादा कीमती है। प्रत्येक क्षण का उपयोग करना ही हमारे जीवन के लिये महत्वपूर्ण है।

अगर आप अपने जीवन में मुझसे कुछ प्राप्त कर लें तो हो सकता है कि हिमालय जाने के लिये आपको कम से कम पांच हजार मील चलना होगा। हिमालय के ऊपर चढ़ने के लिये दो हजार लोग चढ़ते हैं केवल दो लोग पहुंच पाते हैं। बाकी वापिस नीचे लौट आते हैं या असफल हो जाते हैं। मगर जो हिमालय पर चढ़ जाता है। उसको सारी दुनिया देखती है, सारी दुनिया की





ही नहीं
और फिर मैंने उनसे कहा कि मुझे विश्वास नहीं होता कि मैं इन साधनाओं में

सफलता प्राप्त कर सकूँगा।

उन्होंने मुझसे कहा या तो तुम्हारा यह शरीर गिर जायेगा, समाप्त हो जायेगा या साधना में सफलता प्राप्त कर लोगे। इनमें से कोई एक ही रास्ता चुनना है या तो शरीर खत्म हो जायेगा, जब मांस गल जायेगा और केवल हड्डियां रह जायेगी। मांस तो उस पर वापिस आ सकता है, उसकी तुम चिंता ना करो। जब तक मांस नहीं गल जाये तुम साधना करो। जब बिल्कुल हड्डियों का ढांचा रह जाये। तब तक साधना करते ही रहो, साधना सिद्धि मिलेगी ही मिलेगी और जब मिलेगी तो दुनियां तुम्हें देखेगी।

और उसके तीन-चार महीने बाद पहली बार साधना में सफलता
साधना में सफलता मिलने के पीछे साढ़े तीन-साल
और बहुत कुछ मेरे मन में रहा। जब तक
पूर्वज का कोई दोष, छल
कि सी

मिली। मगर पहली बार
तक तनाव, द्वंद्व
मेरे और मेरे

प्रकार का रक्त में रहा होगा तो साधना में थोड़ा बिलम्ब हुआ होगा। इसका मतलब यह नहीं है कि साधना में सफलता मिलती ही नहीं। उसमें धैर्य, बहुत अधिक धैर्य और असीम धैर्य की आवश्यकता होती है। लेकिन जब एक बार सफलता मिल जाती है, फिर दूसरी, तीसरी आगे की साधनाओं में कोई समस्या नहीं आती। फिर हर महीने में एक-दो साधनाओं में सफलता प्राप्त कर लेता।

फिर दूसरे संन्यासी के यहां गया, वहां पर भी जल्दी सफलता प्राप्त कर लेता था। मेरे कहने का मतलब है कि कई बार आदमी बीच में आकर साधनाओं को छोड़ देता है और कई बार ऐसा होता है कि वह साधना की सफलता की ओर 98 प्रतिशत है और बीच में कोई ऐसा पाप कर्म आ जाता है और वह साधना छोड़ देता है। और सोचता है कि यार कुछ होता तो है नहीं, ये सब छोड़ों। जब कि वो 98 प्रतिशत सफलता प्राप्त कर चुका होता है और सिर्फ दो प्रतिशत ही उसे आगे बढ़ना होता है और वो आगे बढ़ना छोड़ देता है।

इसलिये उस बात का तो हमें ध्यान रखना ही है कि अगर यह शरीर गल भी जायेगा तब भी कोई बात नहीं शरीर तो वापिस बन ही जायेगा। महीने, दो महीने जब आप अच्छी तरह भोजन करेंगे। मगर यदि आप साधना छोड़ देंगे तो उस साधना की सफलता आपको नहीं प्राप्त हो सकती। आपके परिवार में भी आपका कोई सम्मान नहीं होगा। समाज में तो खैर ठीक है आप हैं बस हैं, सैकड़ों लोग हैं, आप भी हैं। आपके पड़ोस में किशनलाल रहता है। ना आप उससे परिचित है, ना वो आपसे परिचित है। मगर एक ऐसे संन्यासी विशुद्धानन्दजी हैं उनका नाम आपको भी मालूम है, मुझे भी मालूम है। विवेकानंद पैदा हुए उनका नाम आपको भी मालूम है मुझे भी मालूम है। मैं उसकी जाति का नहीं हूँ, गोत्र का नहीं हूँ, उसका मेरा कोई रिश्ता नहीं है, ना भाई, ना मां, ना बाप क्योंकि ये सब अपने-अपने क्षेत्र में हिमालय पर चढ़े हुए हैं। बुद्ध हुए, महावीर हुए, कृष्ण हुए, राम हुए, नानक हुए, ईसा-मसीह हुए वो जो भी हुए हिमालय पर चढ़े हुए हैं तो सारी दुनिया देख रही है

और आज 2500

वर्षों बाद भी हम



देखते हैं कि शंकराचार्य जी अपने आप में अद्वितीय व्यक्तित्व थे या शंकराचार्य जैसा कोई व्यक्ति नहीं हो सकता। आपके जैसा भी दूसरा कोई व्यक्ति पैदा नहीं हुआ है। आप हैं और केवल आप हैं। ये आपके जीवन की विशेषता होनी चाहिए। इसलिये मैं आपको तैयार कर रहा हूं कि आप अपने आप में युनिक बनें, अद्वितीय बनें, श्रेष्ठ बनें। यह सारा प्रयास इसी बात के लिये है और आपको ऐसा ही आशीर्वाद दे रहा हूं कि आप सफलता प्राप्त करें।

सभी की धुम फिर के एक ही बात आती है कि -

‘‘मेरे तो जिरक्षर जोपाल दूसरा ना कोई’’

मैं तो केवल शूली ऊपर सेज पिया की, उन्होंने तो केवल प्रेम के माध्यम से ही ईश्वर तक पहुंचने का प्रयास किया है और सफल हुए है। संत कबीर भी, भक्त रविदास भी और दक्षिण के जो संत हुए हैं वे भी और चाहे अन्य क्रष्ण, मुनि, योगी, यति, सन्न्यासी। मैं यह नहीं कहता हूं कि इसके अलावा कोई रास्ता है ही नहीं। इसके अलावा भी रास्ता है हठ योग का रास्ता है और वे अपने शरीर को सुखा देते हैं और केवल हरे पत्ते खाकर कुछ समय साल डेढ़ साल, बिना पानी पीये सात-दस दिन बिता देते हैं, एक पैर पर खड़े होते हैं। हठ मतलब जिह, यह भी एक रास्ता है।

औघड़ भी एक रास्ता है जो सिर्फ श्मशान में रहते हैं। मुर्दे के ऊपर बैठते हैं और साधनाएं करते हैं। मगर ये सभी साधनाएं व्यक्ति को एक निरस बना देती हैं, ठूंठ बना देती है। इसमें एक चेतना, एक हिलोर, एक उमंग, एक ओझ, एक उत्साह, एक मधुरता, प्रेम नहीं छलकता। वो तब छलकता है जब उसे जीवन में कोई गुरु मिल जाता है। जब उसको एक सहारा मिल जाता है। जब उसे अहसास होने लग जाता है कि कोई जीवन्त व्यक्तित्व हमारे बीच में है। दो प्रकार के सहारे हैं। एक जो बीत चुके हैं जो गुरु अपना शरीर त्याग चुके हैं, छोड़ चुके हैं। राम, कृष्ण बुद्ध, महावीर, चैतन्य यह सब भी गुरु ही थे।

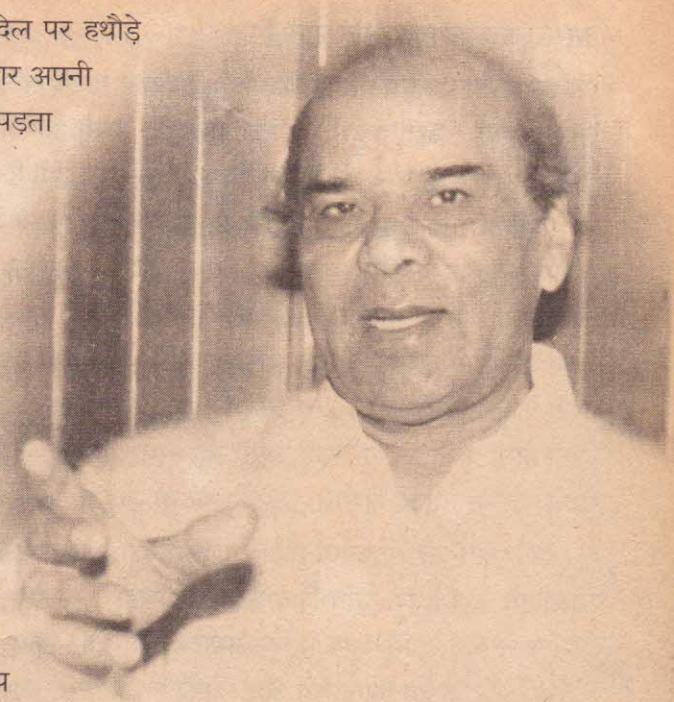
कृष्ण वन्दे जगद्गुरुं

संसार के जो जगद्गुरु है श्री कृष्ण, आपके और मेरे ही नहीं सारे संसार के वो गुरु ही थे। उनके साथ समय बिताना, जीवन बिताना कठिन नहीं है। कोई Difficulty है ही नहीं। क्योंकि आप जो भी कहेंगे, जो भी करेंगे वो अपनी मर्जी से करते रहेंगे। मगर जीवन में गुरु के साथ मैं समय बिताना और उनके साथ मैं रहना बहुत कठिन है। कांटों पर चलने लायक है क्योंकि वह जवाब दे देता है। ये तुम नहीं कर सकते, ऐसा नहीं कर सकते। तुम्हें यही करना है और क्रोधित हो सकते हैं, डांट सकते हैं, जबरदस्ती भी कर सकते हैं आपके साथ। वो मूर्ति नहीं कर सकती। जीवन्त गुरु के साथ यात्रा करना बड़ा कठिन है। हर पग पर एक तलवार की धार

पर चलना पड़ता है। पैर लहुलुहान होता है, हर बार दिल पर हथौडे
पड़ते हैं, हर बार अपने अहम को तोड़ना पड़ता है, हर बार अपनी
Personality को, Ego को, Image को खत्म करना पड़ता
है।

मैं करोड़पति हूं, मैं लखपति हूं, मैं ऑफिसर हूं, मैं दस
साधनाएं कर चुका हूं। सबको तोड़ना ही पड़ता है। क्योंकि
गुरु तोड़ता है वहां। तोड़ता है और वहां उस स्तर पर
ले आता है लेवल पर ले आता है और जब लेवल पर
आता है तब समर्पण होता है, सम+अर्पण। ऊंच-नीच
अर्पण नहीं हो सकता, ऊंच अर्पण नहीं हो सकता,
नीच अर्पण नहीं हो सकता, सम+अर्पण होता है।
इसीलिये वे सौभाग्यशाली शिष्य होते हैं जो जीवन्त
गुरु के साथ अपना समय व्यतीत करते हैं। बहुत
सौभाग्यशाली होते हैं। वे निश्चय ही सौभाग्यशाली होंगे
जिन्होंने कृष्ण के साथ अपना जीवन बिताया होगा। आप
और हम सौभाग्यशाली उस Point पर नहीं हैं। वे बहुत अधिक
सौभाग्यशाली होंगे, जिन्होंने चैतन्य महाप्रभु के साथ अपना जीवन
बिताया होगा, रामकृष्ण परमहंस के साथ जीवन बिताया होगा।

मगर वे इतिहास की एक वस्तु बन गये हैं। उनके प्रति नमन है, प्रणाम है, मगर दुर्भाग्य ये है कि हम कुछ पूछें,
वे आज जवाब नहीं दे सकते। वे नहीं बता सकते कि कौन सा रास्ता है? वे नहीं बता सकते कि हमारी मंजिल कहां
है? पड़ाव कहां है? हमें कितना दूर चलना है? हम किस जगह खड़े हैं? पांच-सात किलोमीटर दूर चलना है या
बीस-पचीस किलोमीटर दूर चलना है? कि इस चलने में कभी कुछ मिलेगा भी या नहीं मिलेगा। वे मूर्तियां, वे चित्र,
वे तस्वीर, वे गुरु नहीं बता सकते। यद्यपि वे श्रद्धेय हैं, यद्यपि उनके प्रति नमन है। मगर न्यूनता इस बात की है कि
आप उस जगह पर खड़े नहीं हो सकते हैं कि जहां उनके साथ आपकी बातचीत हो सकें। उस जगह आप खड़े नहीं
हैं। और समर्पण भी नहीं हो सकता। उनके साथ समर्पण हो ही नहीं सकता, उनके साथ प्रेम नहीं हो सकता, उनके
और हमारे बीच एक गैप रहता है। मीरा और कृष्ण के बीच हमेशा गैप रहा। मीरा हमेशा चिल्लाती रही कि तू मेरा
है, मैं तुझमें समा गई हूं मगर कृष्ण ने जवाब दिया ही नहीं कि तू मेरी है या नहीं है। तू मुझमें समा गई या नहीं गई।
कृष्ण ने जवाब दिया ही नहीं। वन साईड चलती रही। यही राम कृष्ण परमहंस ने किया, वे काली-काली चिल्लाते
रहे। काली आई लेकिन काली ने एक दिन भी जवाब नहीं दिया। अब तू मुझमें समा गया है, तेरा मेरे बीच में पूर्ण
समर्पण है। अब कहीं असत्य नहीं है, कोई लहर नहीं है। बिल्कुल किनारा पा चुका है। इसलिये उनके साथ, अपने
समय को बिताना बहुत आसान है, उसमें हमारी मन मर्जी है। उसमें चन्दन लगा दिया तो वो बोले नहीं, पानी चढ़ा
दिया तो भी वो बोले नहीं, गंगाजल चढ़ा दिया तो भी वो बोले नहीं, नहीं चढ़ाया तो वो बोले नहीं। हमने जो कुछ
किया अपनी मर्जी से करते गये और वो बोले नहीं। लेकिन जीवन्त गुरु के साथ ऐसा नहीं चल सकता। वो तो दो
मिनट में आपका गला पकड़ कर हिला देंगे कि ये क्या कर रहा है। ऐसा नहीं हो सकता, थप्पड़ भी मार दें, लात भी
मार देगा क्योंकि उसको मालूम है, इसको मुझे कहां पहुंचाना है? किस जगह, जहां मैं खड़ा हूं उस जगह पहुंचाना
है। तब समर्पण हो पायेगा और वहां तक पहुंचाना मेरा धर्म है, मेरा कर्तव्य है, मेरी दूयुटी है। इसीलिये समर्पण एक
छोटा सा शब्द नहीं है अपने लेवल पर लाना और लेवल पर लाने के लिये वह वेदना उठानी पड़ती है गुरु को।
क्योंकि हृदय उसकी नजर, दृष्टि इस पाइंट पर है कि मैं इसको उस जगह शीघ्र ले जाऊं, जहां मैं खड़ा हूं और हर



बार उसके पैर लहुलूद्यान होते हैं।

हर बार उसको प्रताङ्गना मिलती है, हर बार डांटते रहते हैं, हर बार धक्के मारते रहते हैं, हर बार मुझे कहते ही रहते हैं, मगर उस डांट में भी एक आनंद है। उसमें आपको कुछ बोलते हैं, लात मारते हैं, डांटते हैं या जो कुछ भी करते हैं उसमें आनन्द की उपलब्धि होती है। और ऐसी क्रिया, आंखों के अन्दर समाजाने की क्रिया जीवन्त गुरु के साथ ही हो सकती है। तस्वीरों, चित्रों, मूर्तियों और किसी के माध्यम से नहीं हो सकती, केवल स्वप्न हो सकता है। इसलिये सुबह जब मैंने बताया कि जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है और ये उपलब्धि आज और कल की नहीं है। ये मैस्मोरिजम हिन्नोटिजम आज की बात नहीं है। ये सम्मोहन विद्या कोई दो, चार, दस, पचास साल पहले की भी नहीं है। ये तो लगभग पन्द्रह-बीस-पचीस हजार वर्षों पहले से चली आ रही हैं। जहां आर्यों ने पहली बार सिन्धु नदी के किनारे वेद की ऋचाएं उच्चरित की हुई होगी। तब भी उनके जीवन में एक हिलोर उठी होगी। वो प्राण चेतना उठी होगी क्योंकि अगर नहीं उठती तो ऋचेद, यजुर्वेद जैसे ग्रंथ नहीं लिख पाते वो। बगैर चेतना वो वेद नहीं लिख पाते। जरूर उनकी सभ्यता, उनकी चेतना, बहुत ऊँचाई के धरातल पर खड़ी होगी।

यदि आप रुद्राष्टाध्याय पढ़ें। तो उसमें जो कुछ कहा है ऋषि ने कि - मैं पूर्णतः खाली जगह दौड़े और पूर्णतः इसलिये कहा है कि ऋषि शिव के सामने खड़े थे। शिव गुरु थे और ऋषि उनके सामने थे। इसीलिये उसमें पूर्णतः रंग जाने की, अपने-आप में पूर्ण नमन हो जाने की क्रिया थी। इसीलिये इन्हें उच्च कोटि के मंत्र लिखे गये, इन्हें उच्च कोटि के वेद लिखे गये और आपके कोई शब्द, कोई बात उच्च कोटि के बन नहीं पा रहे हैं। इसलिये नहीं बन पा रहे हैं क्योंकि आप उस जगह पहुंच नहीं पा रहे हैं। आपका मेरा प्रेम है, अटैचमेंट है, तो मैं आपके पास आ करके आपके धरातल पर खड़ा रहूँगा। तो आप मुझसे प्रेम कर सकेंगे। अगर मैं हिमालय पर बैठा रहूँगा तो आप मुझसे प्रेम नहीं कर सकेंगे। सम्भव नहीं हो सकता।

आप बातचीत करें और यदि मैं मौन रहूँ कि मैं गुरु हूँ। मुझे बोलना नहीं चाहिए, मुस्कुराना नहीं चाहिये क्योंकि भारतवर्ष में गुरु हंस नहीं सकते और दुनिया के सब गुरु हंसते हैं। भारतवर्ष में यदि हंसते हैं तो सारा छिछोरापन है, गुरु नहीं है। हंसते हैं, वो तो बात-बात में हंसते हैं, लो अब गुरु हंस नहीं सकते। भूले से भी फिल्म नहीं देख सकते, गुरुजी सिनेमा घर गये नहीं और सब सत्यानाश हुआ नहीं। गुरुजी क्या बात आप, हमने तो सिनेमाघर में देखा आपको। आप क्या मुंह से बोलते हैं। हमने देखा है आपको सिनेमा घर

में जाते हुए। अरे भाई सिनेमाघर गया, पाप क्या हुआ? कोई अपवित्र काम क्या हुआ? हिन्दुस्तान में गुरु सिनेमा नहीं देख सकता, होटल में खाना नहीं खा सकता। मैं खाना खाऊं और मेरे पास मैं आकर बैठ जाएं, गुरु जी यहां क्या कर रहे हैं? भई खाना खा रहा है ठीक है पर होटल में। अरे! भाई तो गड़बड़ क्या हो गई। नहीं गुरुजी मुझे आपसे यह उम्मीद नहीं थी। मैं आज से आपका शिष्य नहीं हूँ बस। देख लिया। यहां गुरु केवल मर सकता और कुछ नहीं कर सकता और आप मैं से जो गुरु बनना चाहे आप यहां बैठें, मैं तो वहां बैठने के लिये

तैयार हूं। मगर ये संभव तब हो सकेगा जब आपमें गुरुत्व आ सकेगा। जब मैं आपकी बराबर में आ सकूंगा। मैं आपको हंसा सकूंगा, आप मुझसे प्रेम दिखा सकेंगे। मैं आपके प्राणों में उतर सकूंगा। आप मेरे प्राणों से जुड़ सकेंगे। इसको सम्मोहन सिद्धि प्रयोग कहा गया है।

इसी सम्मोहन और वशीकरण प्रयोग के माध्यम से हम सम्पूर्ण विश्व को ऐसे आकर्षण में बांध सकते हैं, पृथ्वी से हम जुड़े हुए हैं। इसलिये कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण है। अगर वह गुरुत्वाकर्षण नहीं है, गुरु-आकर्षण। वह गुरुत्वाकर्षण है तो हम पृथ्वी को छोड़ भी नहीं सकते हर समय। जिंदा हैं तब भी, जन्म लेंगे तब भी, मरेंगे तब भी पृथ्वी को नहीं छोड़ सकते। क्योंकि उसमें गुरुत्व भी है और आकर्षण भी है और यदि आकर्षण है तो कोई आपको छोड़ भी नहीं सकता। यह अलग बात है कि प्रत्येक चीज का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों होते हैं। आप एक चाकू दस रुपये का खरीद कर लाये उससे से सब्जी भी काट सकते हैं, उससे किसी का गला भी काट सकते हैं। ये चाकू बेचारा कुछ भी नहीं बोल रहा। ये तो आपके ऊपर डिपेंड हैं कि आप उसका उपयोग किस तरह से करते हैं। विवेक क्या है? इस विवेक के लिये भी गुरु की जरूरत है। वो गुरु आपको समझायेगा, ज्ञान देगा, उतनी स्टेज तक ले जायेगा। जहाँ आप दूसरों को अपने अनुकूल बना सकें, दुरुपयोग न कर सकें उपयोग कर सकें और संसार में कोई भी चीज दुरुपयोग नहीं होती है प्रत्येक चीज उपयोगी है। जो भी आप करते हैं वो सही है। यदि आप शिष्य हैं यदि आप साधक हैं तो गलत काम कर ही नहीं सकते और गलत काम कुछ होता ही नहीं। मैं आपको देखूँ इसमें कोई गलत है ही नहीं। मैं होटल में जाकर के खाना खाऊँ शुद्ध सात्त्विक, तो कोई पाप नहीं है और अगर मैं सिनेमाघर चला जाऊँ तो कोई पाप नहीं है और अगर कभी पेट पहनकर मैं प्रवचन दूँ आपको, उसमें भी कोई पाप नहीं है। हमारी आंखे कमजोर हैं, हमारी चेतना कमजोर है, हमारे विचार कमजोर है, हमारी धारणा कमजोर है क्योंकि पिछले पांच हजार वर्षों में उन्होंने केवल धोती पहन कर ही प्रवचन दिये। वो गुरु की एक स्पेशलटी बन गई, धोती। धोती पहनी गुरु बन गये। पेट पहनी ठीक है, पेट पहन कर धूमते हैं गुरुजी आजकल। अरे! भाई कपड़े से कहाँ फर्क पढ़ गया। पेट पहनने से मेरा ज्ञान कहाँ खत्म हो गया। मगर नहीं। आपकी नजर में से गुरुजी गये। बस गुरुजी ठीक हैं। गुरु जी तो पेट पहन कर ही धूमते रहते हैं और यदि मैं पैंट के दो टुकड़े कर दूँ। निकर बना दूँ तो उसके बाद तो आप मेरे पास भी आयेंगे नहीं। बहुत ही कठिन क्रिया है, गुरु बनने की। उससे भी कठिन क्रिया है आपको साथ में गतिशील करने की।

मगर मेरा यह धर्म है, कर्तव्य है कि नीम की गोली भी अगर मैं आपको दूँ तो शक्कर में लपेट करके दूँ। आप निगल सकें। देनी तो है ही। क्योंकि मलेरिया बुखार उतारना है आपका। गोली आप खायेंगे नहीं क्योंकि गोली बहुत कड़वी हैं। मेरी यह साधनाएं बहुत कड़वी हैं, एकदम से उत्तरती नहीं। कौन मंत्र जाप करे, कैसे करें? बस उसको शक्कर में लपेट कर मुझको आपको देनी पड़ेगी। बातचीत, प्रवचन, आत्मीयता, प्रेम और इतना प्रेम दो कि शायद



किसी को मिल ही नहीं सकता। आप दिन भर खड़े रहते हैं मिलने के लिये आते हैं, बैचेन हैं। मैं कोशिश करता हूं कि आप लोगों से मिलूं, नहीं मिल पाता हूं। कई बार जीवन की न्यूनताएं होती हैं कई बार समय की स्थितियां बनती हैं। फिर भी आपके प्यार में, प्रेम में कर्मी है भी नहीं। इसमें तो कोई दोराय नहीं, विधाता ने मेरी भाग्यलिपी सोने की कलम से ही लिखी होगी कि आपको अद्वितीय शिष्य मिलेंगे, श्रेष्ठ शिष्य मिलेंगे और इसीलिये मैंने सम्मोहन और वशीकरण। सम्मोहन का मतलब है अपने मोह में उसको आत्म कर देना और अपने मोह में उसको तो बांध देना और स्वयं मोह न, खुद में मोह कुछ हो नहीं। बिल्कुल किनारे पर खड़े रहे, खुद भी इसमें अगर लिस हो गये। अगर गुरु से शिष्य आकर लिपट जायें और गुरु भी लिपट जायें बीच में, चल बैठा तु भी क्या, मैं भी क्या? चलो। लिपट रहे हैं गुरु भी लिपट रहे हैं, शिष्य भी लिपट रहे हैं। दोनों लिपट रहे हैं लोग देख रहे हैं। कोई शिष्या आकर लिपट रही है और गुरु भी लिपट रहे हैं। आप खुद सोच सकते हैं इसलिये उन्होंने कहा है सम्मोहन। उसमें मोहन है इसलिये आप मोह ना करें। आप खड़े रहें तटस्थ रहें, यह गुरुत्व है। ये जीवन की श्रेष्ठता है।

ये जीवन की उच्चता है। यह प्रयोग तुम और हम नहीं कर रहे हैं, यह प्रयोग कृष्ण ने भी किया, राम ने भी किया, विश्वामित्र ने भी किया और अगर तुमने रामायण पढ़ा हो उसमें लिखा है कि राम तुम तब तक विजय नहीं प्राप्त कर सकते, जब तक तुम्हारी आंखों में आकर्षण नहीं आ पायेगा, सम्मोहन नहीं आ पायेगा। तब तक तुम विजयी नहीं बन सकते, केवल अयोध्या के राजा बन सकते हो, शासन कर सकते हो, पूरी दुनिया को अपने पीछे नहीं धुमा सकते, मोहित नहीं कर सकते, विजयी नहीं बन सकते। जब विश्वामित्र जैसा योगी भी यही बात कहता है, जब सांदीपन जैसा ऋषि यह बात

कहता है, जब बुद्ध भी यही बात कहता है मेरी आंखों में सम्मोहन की अथाह करुणा है। स्वयं महावीर भी अपने बारे में कहते हैं कि जिस दिन मेरी आंखों में अथाह प्रेम पैदा हुआ। उस दिन मुझे केवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ। इन आंखों की वासनाओं की पर्त हट करके के अथाह प्रेम पैदा हो सकता है? वासना तो फिर परे चीज रह जाती है। वासना में तो सुगन्ध भी है, दुर्गन्ध भी है। यदि आप गलत काम कर रहे हैं, गलत काम का मतलब धोखा दे रहे हैं, विश्वासघात कर रहे हैं तो एक न्यून है। यदि आप दो टूक बात करते हैं कि मैं शादीशुदा हूं इच्छा है तो प्रेम कर, इच्छा नहीं है तो प्रेम मत कर। मैं हूं मेरे बच्चे हैं, अब देख ले तू खुद सोच लें। अगर उसके बाद मैं भी प्रेम होता है, उसमें कोई दोष नहीं है। मगर उसमें आप दुरुपयोग करते हैं तो वो गलत है। कोई भी चीज का उपयोग और दुरुपयोग बिल्कुल एक काटे की धार पर चलता है।

इसलिये मैं सम्मोहन प्रयोग को आज तक दे ही नहीं रहा था। इसलिये नहीं दे रहा था कि आज से दस-ग्यारह साल पहले एक बिहार का लड़का आया था। था चौबीस-पच्चीस साल का, अच्छा सुन्दर और ऑफिस के बाहर एक पैर पर खड़ा हो गया था। मैं सुबह आठ बजे ऑफिस खोलता तो एक टांग पर खड़ा दिखता और ऐसा अभ्यास करके आया हुआ था कि एक टांग पर ही खड़ा रहता। 9-10-11-12 एक डेढ़ दो बजे तक एक टांग पे खड़ा ही रहता। मैं शुरू-शुरू में नेगलेक्ट करता रहता हूं। महीने दो महीने तक, चार महीने तक अगर घास-फूस होगा तो अपने आप खत्म हो जायेगा। मौसमी फूल होंगे तो वो भी खत्म हो जायेंगे। सदा बहार फूल होंगे तो देख लेंगे पकड़ लेंगे। इसलिये पांच-छः महीने तो मैं उसको टेस्ट करता रहता हूं। पांच-सात दिन तो मैंने कोई ध्यान दिया ही नहीं आगे तो फिर तीन महीने बीत गये और इन तीन महीनों में उसने मुझे

कुछ कहा नहीं, मैंने भी कुछ बोला नहीं। कभी पूछा भई क्या बात है, बस गुरुदेव!, गुरुदेव! कहते हुए यों एक पैर पर खड़ा रहता। मैंने देखा ये कोई अच्छा साधक है तो इसको कोई अच्छी साधना विधि देनी चाहिये क्योंकि तीन महीने तक, 90 दिन तक अगर वो एक पैर पर खड़ा रह सकता है।

मैंने एक दिन उसको बुलाकर पूछा - बताओ क्या बात है? कहां से हो तुम?

तो उसने कहा - मैं बिहार का हूँ।

मैंने पूछा - क्या सीखना चाहते हो?

गुरुदेव मैं वशीकरण प्रयोग सीखना चाहता हूँ और गुरुदेव ऐसी कोई भी बात नहीं। बस सीखना है तो सीखना है। नहीं तो मैं पूरी जिन्दगी एक टांग पर खड़ा रहूँगा। रात को सो जाऊँगा, सुबह आकर एक टांग पर खड़ा हो जाऊँगा।

माताजी ने कहा - तीन महीने हो गये, मैं रोज देखती हूँ यह घंटों तक एक टांग पर खड़ा रहता है और आखिर समझदार भी है। आपको सम्मोहन प्रयोग सिखा देना चाहिये। ये तो ज्ञान है, ज्ञान सिखाने में तुम्हें क्या आपत्ति है?

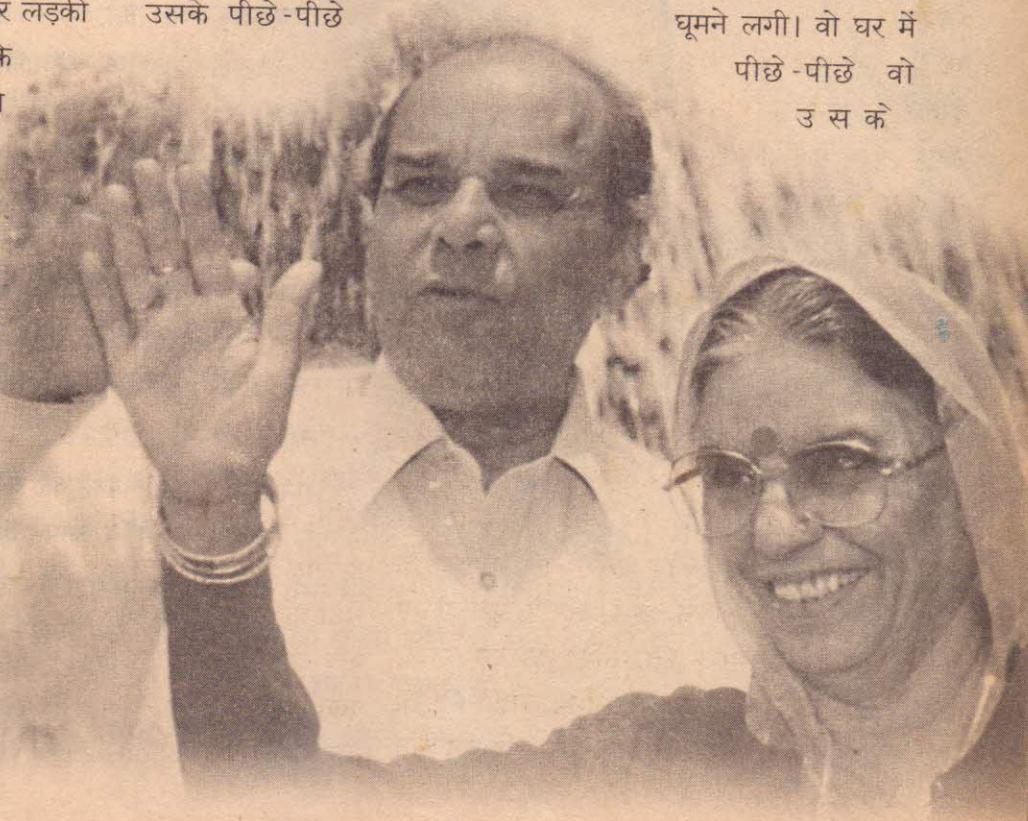
मैंने कहा - आपत्ति तो कुछ नहीं है और आखिरकार मैंने उसको सम्मोहन की पहली स्टेज और दूसरी स्टेज सिखाई। लेकिन तीसरी स्टेज नहीं सिखाई और तीसरी स्टेज का मतलब होता है कि आप पत्थर पर सम्मोहन करो और पत्थर भी आपके पीछे-पीछे चलने लग जाये। वो सीखा और जिस दिन मैंने उसे पूरा ज्ञान और चेतना दी। उसके दूसरे दिन ही गायब हो गया और वो आया ही नहीं।

मैंने कहा - बिहार का पक्का है। ये तो है बिहार का ही, इसमें भी कोई दोराय नहीं। यह तो कन्फर्म हो गया।

बीस-पच्चीस रोज बाद मेरे पास पुलिस का वारन्ट आया कि आपको बिहार में समस्तीपुर में आकर के गवाही देनी है कि आपने जुर्म किया है। बिहार तो मैं गया ही नहीं दस साल से। ये साला क्या जुर्म हो गया?

वो गया घर और घर जाकर के जिस सरपंच की लड़की से वो पर सम्मोहन किया और लड़की उसके जाये तो लड़की उसके बाहर जाये तो लड़की पीछे-पीछे और गांव में तो ये बातें तीन सैकण्ड में फैल जाती हैं। शहर में तो मान लो फिर भी, कहीं पार्क में जाकर चौंच भिड़ाकर आ गये। कहीं दूर जाकर चौंच भिड़ाकर आ गये। मगर गांव में कहा चलेगी ऐसी बात। गांव के पुलिस ने पकड़ा उसको और पीटा उसको, क्या है

प्रेम कर रहा था। जाकर के उस घूमने लगी। वो घर में पीछे-पीछे वो उस के



तू?, कहां से है तू?

उसने कहा - मेरे गुरुदेव जोधपुर में बैठे हुए हैं। उन्होंने ही सम्मोहन सिखाया।

पुलिस ने कहा - अच्छा ये सब गुरुदेव के कारण है, कैसे लड़की को कंट्रोल करना चाहिये, फँसाना चाहिये? ये सब गुरुदेव ने सिखाया है।

उसने दे दिया बयान।

गुरुदेव कौन है?

जोधपुर रहते हैं।

क्या नाम है?

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली, हाई कॉर्ट कॉलोनी, जोधपुर।

बस और सीधा वॉरन्ट आ गया मेरे पास।

मैंने पत्नी को कहा - देख ये आया कहां से, क्या बात है बिहार में गया नहीं, कोई लड़की का चक्कर नहीं।

मैंने कहा - ऐसा तो हो ही नहीं सकता। अब बहुए हसेंगी बैठी-बैठी। ये बाहर जाते हैं और खेल तो कोई दूसरा खेल कर आते हैं। अब तो मारे जायेंगे। घर में बता नहीं सकते। सुबह-सुबह एस.पी साहब घर पर आये।

उन्होंने कहा कि - श्रीमाली जी आपसे बात करनी है।

मैंने कहा - बोलिये।

उसने कहा - लड़की का लफड़ा क्या है।

मैंने कहा - कोई लफड़ा-वफड़ा नहीं है।

उसने कहा - बिहार आप गये थे क्या?

मैंने कहा - मैं तो गया हूं नहीं।

नहीं गये होंगे।

उसने कहा - इस लड़की का चक्कर क्या है? इसमें तो बिल्कुल साफ लिखा है कि आपने ही तो उसे फँसाया है।

और उसी बीच मुझे मालूम पड़ा ये लड़की का चक्कर क्या है?

उस लड़के का नाम क्या है? उस लड़के ने यहां से जाने के बाद क्या-क्या किया?

मैंने उनको बताई बात कि मेरी यह गलती हो गई कि मैंने उसको सम्मोहन

प्रयोग सिखा दिया था और उसकी दशा भुगत रहा हूं कि आपको यहां आना पड़ा। दो कप चाय आपको पिलानी पड़ी मेरे को। बाकी काहे के लिये मैं उनको घर में बुलाता।

आज वापिस बारह साल बाद आज मेरी इच्छा हुई और मैं आज आपको यह सम्मोहन प्रयोग सिखा रहा हूं। या तो कोई मेरे ऊपर शनि की दशा आ गई है पक्की, गारन्टी के साथ मैं। क्योंकि पहले तो एक को ही सिखाया था। अब इतने लोगों को सिखाने के बाद मेरी दुर्दशा क्या होगी? और तुम इसके अलावा कुछ करोगे नहीं यह गारन्टी नहीं है। तुम करोगे ही घर गये और किया नहीं। यहां तो आप लाख कह दोगे, नहीं गुरुजी ऐसा नहीं हो सकता। लेकिन घर जाने के बाद सीधा पहला खेल यही करेंगे आप। कि चलो देख लेते हैं गुरुजी ने वशीकरण प्रयोग सिखाया है। लेकिन मैं तो आपको सिखा दूँगा लेकिन आप कुछ करें भी तो मेरा नाम नहीं लें कि ये गुरुजी ने मुझे सिखाया है। इसलिये मैंने ऐसा किया।

इसलिये मैं कह रहा हूं। आप अपने तक ही रखिये जो कुछ आपने किया, आप अपने आप मैं ही करते रहना। ऐसा नहीं कि आप सीधा मेरा, हाई कोर्ट कॉलोनी का पता दे दें। वहां जाकर पूछे, उन्होंने ही मुझे सम्मोहन सिखाया है।

यह दुरुपयोग हुआ या सदुपयोग हुआ। इसलिये देवताओं ने, ऋषियों ने, मुनियों ने, साधुओं ने, संन्यासियों ने, योगियों ने यदि विश्वामित्र जैसा योगी मेनका जैसी अप्सरा को वश में करता है तो कोई तो उसकी आंख में आकर्षण होगा, विश्वामित्र तो हड्डियों का ढांचा था, बिल्कुल सूखा हुआ। पिचके हुए गाल थे। क्योंकि वो बारह साल से पत्ते खाकर ही जिन्दा रहा। साधनाएं की, अन्न खाया नहीं और वो ऐसा सूखी हड्डियों का ढांचा मेनका को भी वश में कर लेता है। तो जरूर उसकी आंखों में कोई ऐसी बात होगी, वहीं उसकी आंखों में आकर्षण था, वशीकरण था, एक सम्मोहन था।

इसलिये विद्या कोई भी गलत नहीं है उपयोग किया है उस पर डिपेंड है। चाकू की कोई गलती नहीं है आप उसका उपयोग कैसे करते हैं? और जीवन की श्रेष्ठतम साधना कोई है तो सम्मोहन साधना है। क्योंकि देवताओं को भी हम उससे सम्मोहित कर सकते हैं। अप्सराओं को भी सम्मोहित कर सकते हैं, मनुष्य को भी कर सकते हैं, घर के पशु-पक्षियों को भी कर सकते हैं, पत्नी को भी कर सकते हैं, पति को भी कर सकते हैं, नौकरों को भी कर सकते हैं,

हैं, अफसरों को भी कर सकते हैं कहीं किसी भी फ़िल्ड में हम ही विजयी होंगे। ये गारन्टी हो जाती है।

ये जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है, ये जीवन की बहुत बड़ी महानता है। हम किसी के पीछे घूमे नहीं, लोग हमारे पीछे घूमे हमारा चेहरा देखने के लिये, हमारे से बातचीत करने के लिये, एक मिनट भी बात हो जाये तो वो अपने जीवन का सौभाग्य समझे यह उपलब्धि है और यह उपलब्धि किताबों के माध्यम से नहीं मिल सकती।

मैंने भी लिखा है आज से पच्चीस साल पहले प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्जम, ट्राट्क, वाट्क सब कुछ लिखा था और तीन-चार लाख किताबें बिकी थीं।

लेकिन यह सब प्रैक्टिकल थीर्किंग है। प्रैक्टिकल भी है और साधनात्मक भी है। जो मैं आज आपको प्रयोग समझाने जा रहा हूं कि किस प्रकार से पूरा शरीर अपने आप में सम्मोहन बन जायें। वशीकरण दूसरों को करें। सम्मोहन से अपने शरीर को इतना अधिक आकर्षित बना दें कि दूसरे हमें देख कर के रुक जायें, ठहर जायें, देखें। बात करने के लिये तरसें। हम जो कुछ कहें वो करें, ये सम्मोहन है और फिर भी हम एक निष्ठ रहें, हम अपने आप करें।

डिगाये नहीं। अपने आपको कहीं कीचड़ में, कहीं न्यूनता में घसीटें नहीं।

अपने आप में कंट्रोल रखें। अपने आप में विकार नहीं आये, आपकी

आंख में विकार नहीं आये। जो चाहे जैसा हो ये मंत्रों के माध्यम

से भी संभव है। क्योंकि मंत्रों के माध्यम से पूरा शरीर चैतन्य

हो सकता है और पूरा शरीर चाहे कैसा भी हो। सम्मोहन

में केवल आंख का ही प्रभाव है। शरीर अपने आप में

बहुत छोटी चीज रह जाती है। शरीर का बहुत बड़ा

रोल जिन्दगी में नहीं रह पाता। वह ज्ञान, वह चेतना

सम्मोहन क्रिया के माध्यम से संभव है और यह

अत्यधिक सामान्य और सरल है। जब तक ज्ञान

नहीं है, अगर सामने टेलीविजन भी पढ़ा है और

जब ज्ञान नहीं है कौन सा बटन दबाना चाहिये

और कौन सा चैनल लगाना चाहिये, वह बीस

हजार का टेलीविजन भी मेरे लिये बेकार है। सिर्फ

एक बटन दबाना है, परन्तु कौन सा बटन दबाना

है और कैसे दबाना है? ठीक उसी तरह कौन सा

मंत्र जप करना है और किस प्रकार से करना है?,

किस विधि से करना है? और किस सामग्री के साथ

करना है? सामग्री का, शरीर का, मंत्र का अपने

आप में पूरा एक एडजस्टमेंट है।

मंत्राधिनास्थ देवता: /

मंत्र के आधीन देवता है और देवता जो कुछ हमें प्रदान

करना चाहें, जो देने वाले हो, हम जीवन में जो कुछ भी

प्राप्त करना चाहें, यह विद्या, यह ज्ञान बहुत अधिक था और

भारतवर्ष का एक अद्वितीय ज्ञान था, एक अद्वितीय चेतना थी

और गुरु सबसे अंत में अपने शिष्य को यह ज्ञान देकर विदा करता

था। और तुम विजयी भव। तुम जीवन में जिस किसी भी क्षेत्र में जाओ,

जहां कहीं भी जाओ, सर्वत्र तुम्हारी यश की ही पताका फहरायेगी, तुम कहीं पर भी न्यून नहीं बन पाओगे।
उस मंत्र के माध्यम से भी, उस प्रयोग के माध्यम से भी उसको किया जा सकता है।

मैं इस प्रयोग को आपको करवा रहा हूँ, इसके पहले मैंने आपको एक मंत्र दिया था, मनोवांछित कार्य सिद्धि
मंत्र उस मंत्र के लिये भी मैंने कहा था। जब समय मिले चार माला या पांच माला या छः माला मंत्र जाप करें।
इसलिये की शरीर में ऊर्जा पैदा कर सकें। अपने शरीर में चेतना पैदा कर सकें। यदि हम गाते हैं तो भाव विभोर
होकर के एकदम से ताली बजाने लगते हैं। हाथ अपने आप उठ जाते हैं, उन शब्दों का आपके ऊपर सीधा प्रभाव
पड़ रहा है। शब्दों का प्रभाव आप पर पड़ रहा है तो मंत्रों का भी प्रभाव पड़ेगा। यदि मैं आपमें से किसी को गाली
दूँ कोई भद्दी सी गाली दूँ वो एकदम से खड़ा हो जायेगा। वह गुस्से में एकदम से लालसुख्ख हो जायेगा और पास
में कोई किताब या पत्थर होगा तो उठा लेगा, फेंकने के लिये। मैंने क्या किया? मैंने तो केवल एक शब्द बोला
और उसे उत्तेजित किया। उसके और मेरे बीच में दस फीट की दूरी है फिर भी उस शब्द ने ऐसा इफेक्ट किया
कि वो झट से खड़ा हो गया और पूर्णतः क्रोधित होते हुए मारने के लिये तैयार हो गया। शब्द तो छोटा ही था
और मंत्र भी भले ही छोटा ही है। मगर वह भी सीधा इफेक्ट करता ही है, जैसे वो गाली। मुस्कुराने की बात या
हंसने की बात कहुँगा तो आप हंसेंगे ही। मुझसे आप दस-

चाली स
बात

कहुँगा तो आप हंसेंगे ही। मैं आप के पास आकर^{कोई} गुदगुदाता तो नहीं हूँ मगर आप हंस जाते
हैं क्योंकि मेरे उन शब्दों का प्रभाव आप पर^{पड़} रहा है। गाली दूँगा तो उसका भी
प्रभाव पड़ेगा। आपके और मेरे बीच में
जो एक चीज है उसको शब्द कहा
गया है और शब्द को 'ब्रह्म' कहा
गया है। ब्रह्म जो कि मैं स्वयं हूँ -

अहम् ब्रह्मास्मि

आप अपने आप में पूर्ण ब्रह्ममय
बन सकें। मेरे वचनों से आपके जीवन
में ओजस्वीता आये, ऐसा ही आशीर्वाद
प्रदान करता हूँ। यही आशीर्वाद प्रदान
करते हुए आपके मंगलमय जीवन की
कामना करता हूँ।

- सद्गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द

परमहंस।

वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इससे प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक संकट्यता को प्राप्त कर आप पार्देंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

सिद्धिप्रदा अंगला

जिसे प्राप्त कर आप स्वतः इसकी महिमा का गुणगान करने लगेंगे, क्योंकि यह एक सिद्धिप्रदा अंगला है और किसी भी प्रकार की साधना में सफलता के लिए आवश्यक है। इस अति विशिष्ट उपहार द्वारा पत्रिका ने तो आपके लिए सौभाग्य का द्वारा खोल दिया है।

किसी भी दिन प्रातः गुरु पूजन के बाद किसी प्लेट में स्वस्तिक बना कर अंगला को स्थापित कर दें, उसके बाद धूप, दीप दिखाकर सामान्य पूजन करें। सामान्य पूजन के पश्चात् ३ माला गुरु मंत्र की जप करनी चाहिये। इसके पश्चात् आपको जिस साधना में सफलता पानी है उसका स्मरण करें। गुरुजी से साधना में सफलता प्राप्ति हेतु आशीर्वाद प्राप्त करें। इसके बाद गुटिका को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें।

इस गुटिका को अपने पूजा स्थान में सवा महीने तक धूप-दीप दिखायें, इस बीच आपको किसी प्रकार के मंत्र जप की आवश्यकता नहीं है, आप केवल प्रतिदिन इसका पूजन करें। सवा महीने पश्चात् इसे नढ़ी अथवा जल सरोवर में विसर्जित कर दें।

पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता ग्रहण करने पर उपरोक्त यंत्र आप प्राप्त कर सकते हैं। अपनी मनोनुकूल इस यंत्र का नाम पोस्टकार्ड संख्या 4 पर लिखें। वी.पी.पी. द्वारा सामग्री आपको सुरक्षित भेज दी जाएगी तथा वी.पी. छूटने पर वर्ष पर्यन्त पत्रिका नियमित रूप से भेजी जाएगी।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage

ऋग्पक्ष

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) . 0291-2432010

सन् १९९५ में उद्घरित तांत्रिक हीन् भारती के विचार

जो आज भी शाश्वत सत्य है

सद्गुरुदेव निखिल युग पुरुष - युग पुरीधा है

'महापुरुष जन्म लेंगे, सूना न जहां होगा, पर सद्गुरुदेव निखिल जैसा कोई न होगा'

भारतवर्ष की धरा पर अनेकों महापुरुषों ने जन्म लिया, अपने कार्यों से समाज को सुधारते और श्रेष्ठ बनाने का प्रयास किया, खामी बिबेकानन्द, ईश्वरचन्द्र बिद्या सागर, राजा राममोहन राय, खामी दयानन्द, रामतीर्थ, महर्षि अरविन्द मां आनन्दमयी आदि महान् व्यक्तित्व हैं।

सद्गुरुदेव ने ऐसे ही महापुरुषों द्वारा किये गये प्रयासों को तीव्र गति प्रदान कर बैदिक, सनातन धर्म की रक्षा की। सद्गुरुदेव ने समाज में धर्म की स्थापना कर, भारत में एक बार पुनः साधना, अनुष्ठान, यज्ञ, मंत्र-तंत्र-यंत्र का महत्व स्थापित किया। शंकराचार्य के शाश्वत ज्ञान धारा को पुनः प्रवाहित किया। सद्गुरुदेव के व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना तो संभव नहीं है क्योंकि वे 'नारायण- भी हैं और 'निखिल' भी हैं-

जब पहली बार मानव ने एक साथ मिलकर रहना प्रारम्भ किया, तो अपने समाज को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए कई नियम और कई मान्यताओं को बनाया। ऋग्वेदकालीन युग में जीवनयापन का जो धीरे-धीरे युग बदला तो मान्यताएं भी बदलीं, क्योंकि अने वाली पीढ़ी ने कुछ नियमों को अपनी सुविधानुसार ढाल लिया और जिनमें परिवर्तन करना सम्भव नहीं हुआ, उन नियमों को या तो उसी रूप में अपना लिया या फिर छोड़ दिया।

धर्म के क्षेत्र में परिवर्तन करना किसी भी पीढ़ी के लिए सम्भव नहीं हो सका, हां इतना अवश्य हुआ कि अनेक नये-नये सम्प्रदाय बन गये, लेकिन उनकी मान्यताएं अपने पुराने रूप में ही उनके विचारों पर छायी रहीं। फलस्वरूप वे मान्यताएं जो कभी समाज के लिए उपयोगी मानी जाती रही हैं, परिवर्तित न होने के कारण धीरे-धीरे लोगों के मानस के किसी कोने में दुबक कर रह गयी।

- और यदि किसी ने उन मान्यताओं पर चल कर दिखाने का प्रयास किया भी, तो उसे रुढ़िग्रस्त करार दे दिया गया।

यही कारण है, कि पूजा-पाठ, साधना-आराधना मात्र बूढ़े और असहाय लोगों के अवलम्बन के रूप में परिभाषित होने लगा। आद्यगुरु शंकराचार्य ने धर्म की इस दुर्दशा को रोकने का प्रथम प्रयास किया; तत्कालीन समाज पूजा-पाठ एवं साधना को सम्मानपूर्वक वृष्टि से देखते हुए अपने जीवन का अंग बना ले, अतः उन्होंने धर्म के स्वरूप में परिवर्तन किया।

और जब समाज ने साधनाओं का उपनिषद् के रूप में सरलीकरण होते देखा, तो इसे ललक कर अपनाया, फलस्वरूप साधना और सिद्धियां मात्र साधु-संन्यासियों की धरोहर न बन कर गृहस्थ साधकों के जीवन का भी आधार बन गयी।

समाज में उतार-चढ़ाव के साथ अनेकों परिवर्तन धार्मिक मान्यताओं में भी हुए और परिवर्तन होना भी चाहिए। अतः वर्तमान समय में भी युग के अनुसार जीवन का नव निर्माण करने के लिए आवश्यक है, कि साधना विधियों का पुनः सरलीकरण किया जाय, जिससे भौतिकता की दौड़ में शामिल

व्यक्ति सहजता से इसे अपना सके।

क्योंकि वह आदिम युग तो अब है नहीं, कि नदी के किनारे बैठे और वर्षों तक मंत्रों का जप करते रहें या फिर घर से निकल पड़े जंगल की ओर।

आज का मनुष्य प्रत्येक कार्य को वैज्ञानिक दृष्टि से परख रहा है, ऐसे समाज में आज एक छोटा-सा बच्चा भी अत्यधिक महत्वाकांक्षी हो गया है, वह भी उन्नति के शिखर पर पहुंचना चाहता है, काल को अपने नियन्त्रण में कर उससे आगे निकल जाना चाहता है, मात्र अपने समाज, अपने देश में ही नहीं, पूरे विश्व के सामने अपना कद इतना ऊचा करना चाहता है, जिससे लोग उसके ज्ञान, उसके नाम को पहिचान सकें, अपने जीवन में उतार सकें।

इतना सब कुछ पाना मात्र व्यक्ति के अपने परिश्रम द्वारा ही सम्भव नहीं है, उसे दैवीय बल की आवश्यकता पड़ती ही है और जब मनुष्य का परिश्रम और दैवीय बल दोनों साथ-साथ प्रभावी होते हैं, तो निश्चित रूप से वह व्यक्ति अपनी उच्च महत्वकांक्षा को पूरा करता हुआ, जीवन का नव निर्माण करने में सक्षम हो जाता है। इस कारण से भी साधना की परम्पराओं को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। जैसे प्राचीन काल में युद्ध के लिए जिन अस्त्रों का प्रयोग किया जाता था, उन अस्त्रों के बल पर वर्तमान युग में युद्ध नहीं जीता जा सकता, आज युद्ध जीतने के लिए आधुनिक आयुधों का होना आवश्यक है। इतना अवश्य है कि प्राचीन काल में प्रयोग में लाये जाने वाले अस्त्रों का परिवर्तित स्वरूप ही आज उपयोग में लाया जा रहा है।

साधना पद्धतियों के साथ ही साथ व्यक्ति को भी चाहिए कि वे एक नवीन साधक के रूप में अपने साधनात्मक जीवन का नव निर्माण करें और पूर्णरूप से दैवी सहायता प्राप्त कर अपने जीवन के अभाव एवं कष्ट को दूर कर भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से पूर्णता प्राप्त करें।

युग के अनुसार परिवर्तन एक स्वभाविक क्रिया है। समाज में अपने-आप को प्रतिस्थापित करने के लिए आवश्यक है, कि बदलाव की धारा के साथ ही वहते हुए अपने विचार, अपनी क्रिया-पद्धति, अपनी पूरी जीवन प्रक्रिया को बदलें; जो समय की धारा के साथ नहीं बह पाता, उसे समय और समाज पीछे छोड़कर आगे निकल जाता है, फिर उस विछड़े व्यक्ति का जीवन बीतता है कठिनाइयों से ज़्याते हुए... समय के अनुसार चलने वाला ही तो जीवन के नव-निर्माण की प्रक्रिया अपना सकता है.... और ये आप भी हो सकते हैं...

पूर्णता प्राप्त करने के लिए वेदकाल में भी एक मान्यता सर्वसम्मत थी और आज भी यह उतनी ही पुष्ट और परिपक्व है। साधनात्मक ग्रन्थों में यह स्पष्ट रूप से लिखा है, कि पत्थर बनी मूर्तियों पर जल चढ़ाने की अपेक्षा जीवित-जाग्रत गुरु के पास बैठना ज्यादा उचित है।

और यह मान्यता प्रत्येक युग में अपनी दृढ़ता के साथ स्थायी बनी ही रहेगी, क्योंकि साधनाओं का परिवर्तित एवं प्रभावी रूप समझाने और सिखाने वाले व्यक्ति की आवश्यकता तो पड़ेगी ही... और गुरु किसी मानव शरीर हो नहीं कहते, गुरु तो वह होता है, जो साधक को सड़ी-गली मान्यताओं के पंक में से निकाल ले और कमल-पुष्प की तरह विकसित कर दे।

जब साधक के पास ऐसे तेजस्वी गुरु का आशीर्वाद होगा, तभी वह पुरातन मान्यताओं के दलदल को समाप्त कर सकेगा और सिर्फ अपना ही नहीं पूरे समाज का नवनिर्माण करने में सक्षम हो सकेगा।

गुरु का तात्पर्य है - 'पूर्णता', गुरु का तात्पर्य है - 'सिद्धि', गुरु का तात्पर्य है - 'सर्वोच्चता'।

गुरुत्व तो सही अर्थों में ज्ञान का वह मानसरोवर है, जिसमें डुबकी लगा कर कौआ भी हंस बनने की प्रक्रिया प्राप्त कर लेता है, गुरुत्व साधना का वह आश्रय-स्थल है, जिसके सात्रिध्य में शववत् जीवन जीने वाला व्यक्ति भी 'शिव' बन जाता है और सिद्धियों को हस्तगत कर लेता है।

आवश्यकता है गुरुत्व को समझने की आवश्यकता है गुरु के ज्ञान को अक्स्मात् करने की, आवश्यकता है उनके चरणों के निकट बैठने की... और जब साधक ऐसा करने में सफल हो जाता है, फिर गुरु तो हर समय तैयार हैं ही साधक का नव निर्माण करने के लिए उद्यत हैं ही पूर्णता देने के लिए।

यह इस पीढ़ी का सौभाग्य है, कि उसके पास एक ऐसे ही जीवित-जाग्रत गुरु हैं, जिनके श्री चरणों की कृपा-छाया तले बैठ कर साधना के ज्ञान को अपने अन्दर नवीन रूप में स्थापित किया जा सकता है।

मुझे यहां उनका विशेष परिचय देने या उस अद्वितीय व्यक्तित्व का भव्य वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मात्र भारतवर्ष ही नहीं, पूरा विश्व ही उस विराट हिमालयवत् व्यक्तित्व से परिचित है। आज जब भी साधना और सिद्धि प्राप्त करने या इसके विधि-विधान के बारे में सहजता से ज्ञान प्राप्त करने की बात आती है, तो सबकी आंखें उन्हीं पर केन्द्रित हो जाती हैं।

आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व जब सनातम धर्म लड़खड़ा रहा प्राप्त कर सके। अपनी लगन और परिश्रम के बल पर वह था, अपनी दुरुहता के कारण लोगों के मानस से विस्मृत होता युवक अध्यात्म की परम स्थली, अध्यात्म की केन्द्रिय धुरी जा रहा था, ऐसे संक्रमण काल में ही जगदगुरु शंकराचार्य जी 'सिद्धाश्रम' तक पहुंचा। वहां पहुंच कर उस युवक ने सिद्धाश्रम ने इसकी जड़ों को मजबूत करने का भार अपने कंधों पर के संस्थापक 'परमपूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी' का प्रधान किशोरवस्था में उठा लिया और चार धार्मों की स्थापना की शिष्य बनने का गौरव प्राप्त किया। स्वामी सच्चिदानन्द जी ने तथा वेदों के मूलभूत तथ्य को उपनिषदों के रूप में ढाल कर अपने हजारों वर्षों के जीवन काल में मात्र तीन शिष्य ही बना जन सामान्य का ध्यान इसकी तरफ केन्द्रित किया। हम आज सके हैं, क्योंकि उनके द्वारा ली जाने वाली परीक्षा की कसौटी भी और आने वाले समय में भी शंकराचार्य के ऋणी रहेंगे।

मानव की इस छटपटाहट को समझा एक छोटे-से बालक ने और निकल पड़ा साधना का वह सुगम मार्ग तलाश करने के लिए जिस पर चल कर, क्षुधित और पिपासित व्यक्ति अपने अन्तर्मन की भूख-प्यास को शांत कर सके। इस मार्ग की तलाश में वह किशोर दर-दर हिमालय की उपत्यकाओं में भटका, जहां भी उसे पता चलता कि उस स्थान पर कोई संन्यासी साधनारत है, तो वह किशोर उसके पास अवश्य जाता।

ज्ञान की खोज में विचरता, वह किशोर धीरे-धीरे युवक हो गया, लेकिन उसने अपने लक्ष्य को छोड़ा नहीं। अन्य युवकों की तरह अलग वह युवक चाहता, तो अपनी पत्नी और बच्चों के साथ आराम से जीवन व्यतीत कर सकता था, लेकिन

उसने सोचा - "मेरा जन्म तो इन भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति के लिए नहीं हुआ है, मेरा जन्म तो इसलिए हुआ है, कि मैं प्रत्येक व्यक्ति को, जो मेरे सम्पर्क में आये, उसके अन्तर्मन को प्रसन्नता दे सकूँ और निश्चित रूप से मैं ऐसा करने में सफल हो जाऊंगा, चाहे भले ही मुझे अपना सारा यौवन इन पहाड़ों के मध्य रहते हुए ही क्यों न व्यतीत कर देना पड़े।"

अपने मन में इस धारण को दृढ़ कर वह युवक ज्ञान के मार्ग की सतत तलाश करता रहा, लेकिन उसने अपने गृहस्थ का कर्तव्य भी नहीं छोड़ा और कुछ समयान्तराल पर आकर थोड़ा-सा समय अपने परिवार के बीच में भी व्यतीत करता, जिससे उसकी पत्नी और बच्चों को सामाजिक प्रताइना न सहनी पड़े... और पुनः अपने प्रयास को सार्थक बनाने हेतु आध्यात्मिक रूप में जंगलों और पहाड़ों की ओर लौट जाता।

इस प्रकार उस युवक ने अपने जीवन के अमूल्य पन्द्रह-बीस वर्ष कार्य में लगा दिये और प्राप्त कर ली ज्ञान की वह निर्मल ज्योति, जिसके आलोक में वह पूरे विश्व का पथ-प्रदर्शन करने में समर्थ हो सका।

तपस्या और साधना को न सिर्फ उसने प्राप्त किया, अपितु प्रत्येक साधना को स्वयं सम्पन्न भी किया, जिससे उस साधना में आने वाली बाधाओं को समझ कर उनसे मुक्ति का उपाय जी।

प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया। स्वामी सच्चिदानन्द जी ने अपने हजारों वर्षों के जीवन काल में मात्र तीन शिष्य ही बना सके हैं, क्योंकि उनके द्वारा ली जाने वाली परीक्षा की कसौटी पर सहज ही किसी को सफल होना सम्भव नहीं है।

कुछ समय सिद्धाश्रम में रहकर वहां के योगियों व तपस्वियों द्वारा ली जाने वाली साधना को उसने समझा और कुछ समय पश्चात् उस युवक ने उनके सहयोग से साधना में सरल विधान को निर्मित किया। सिद्धाश्रम के साधकों को समाज के हितार्थ साधना की सुगम विधि खोजने के लिए शोधरत किया एवं वर्तमान भौतिकवादी समाज की समस्याओं के समाधान हेतु दैवी बल की सुगमता से प्राप्त करने के विधान को लेकर जब वह पुनः समाज में लौटा और अपने कार्य को मूर्तरूप देने का प्रयास करने लगा, तो उसके सामने भौतिकता की धुंध से घिरे हुए समाज ने अनेकों कठिनाइयों के बांध खड़े कर दिये, लेकिन वह युवक घबराया नहीं।

उसने सोच लिया, कि जो दरवाजा पिछले पचास वर्षों से बन्द पड़ा है, उसे खोलना सहज नहीं है, बहुत परिश्रम करना होगा, क्योंकि बंद पड़े दरवाजे पर इतनी जंग लग गई है, जिसको छुड़ाना सहज नहीं है। इस बात को समझ कर उस युवक ने अपने मन में निर्णय लिया, कि योजनाबद्ध रूप से इस कार्य को पूर्णता देने का प्रयास करूँगा, तभी सफल हो सकूँगा।

इस कार्य के लिए भी उस अत्यधिक परिश्रम करना पड़ा, क्योंकि सहज ही व्यक्ति उस युवक की बात पर भरोसा नहीं कर पाता था, लेकिन फिर भी उसे भरोसा करना पड़ता, क्योंकि ये शब्द उस व्यक्ति के होते, जिसके प्रति उसके मन में अथाह आस्था है, अतः लोगों ने सोचा, कि करके देखते हैं, हर्ज ही क्या है?

और धीरे-धीरे वह युवक 'गुरुजी' के नाम से लोगों द्वारा पुकारा जाने लगा और आज उनके श्री चरण-सान्निध्य को प्राप्त कर प्रत्येक व्यक्ति ने उन्हें अपने हृदय में इष्ट रूप में स्थापित कर लिया है।

अपने आप में हिमालयवत् विश्वासा और सागरवत् गम्भीरता को समेटे हुए वह परमादरणीय, प्रातः स्मरणीय व्यक्तित्व हैं - 'परम पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली'। जिन्हें मैं नारायण दत्त श्रीमाली के लघु रूप में नहीं

न मेर शक्तिर्देवः समविषम भावं विगतितं,
सहस्रं नैवं ते परिगदितुमचित्तलं परिगतं।
न मे श्रद्धाभक्तिः बहुविधत्तमोद्वंसनविधौ;
परं लब्धुं कामः निखिलं ज्ञानमनधम्॥

“हे गुरुदेव! मेरे मन में उठने वाले अनेक निरर्थक विचारों को निरस्त करने के लिए मुझ में सामर्थ्य नहीं हैं, आपके साधनात्मक विद्या एवं आलौकिक रहस्यों को भी मैं नहीं जानता हूं। अज्ञानजनित प्रबल अन्धकार को दूर करने के लिए श्रद्धा और भक्ति भी मुझमें नहीं हैं, फिर भी आपके उस प्रावनतम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए मैं प्रबल आकांक्षी हूं।”

जानती, ये तो उनका भौतिक स्वरूप हैं मैंने तो अपनी साधना में उनका विराट मय ऋषि रूप ‘निखिलेश्वरानन्द जी’ के रूप में देखा और आगे शिष्य निखिल को अपने हृदय में स्थापित करेंगे।

इनके अथव प्रयास से ही आज साधना अपने अत्यन्त सरल रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान प्राप्त करने में अपने परिश्रम के साथ-साथ दैवी बल को भी प्रयुक्त करने लगा है।

पूज्य गुरुदेव ने जब लोगों द्वारा साधनात्मक ज्योति से अपने जीवन को आलोकित करते हुए देखा, तो उन्होंने निर्णय लिया, कि इस ज्ञान के आलोक को मैं पूरे भारत, पूरे विश्व में फैलाऊं, जिससे प्रत्येक इसके प्रकाश में अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकें। फलस्वरूप उन्होंने सन् 1981 में “मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान” नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया और आज पन्द्रह वर्षों के इस प्रकाशन काल में यह पत्रिका जन सामान्य की इतनी अधिक प्रिय हो गयी है, कि माह का आरम्भ हुआ नहीं, कि लोग इसके आगमन की प्रतीक्षा में पलक पांवड़े बिछाये बैठे रहते हैं।

पन्द्रह वर्षों की यह यात्रा बहुत सहज नहीं है, क्योंकि गुरुदेव को समाज की अनेक आलोचनाओं को झेलना पड़ा, लोगों ने न जाने कितने अभद्रतापूर्ण शब्दों का भी प्रयोग किया, तरह-तरह से कुचक्कों को भी रचा और आज भी ये आलोचक अपने प्रयास में लगे हुए हैं, क्योंकि उनके रूढिग्रस्त विचारों को साधना के सुगम विधान द्वारा आघात पहुंचा है,

जितनी आसानी से वे लोगों को ठग लिया करते थे, आज वह सम्भव नहीं रहा, ऐसी स्थिति में ऐसे लोग कर भी क्या सकते हैं, सिवाय आलोचना करने के।

फिर भी गुरुदेव ने उनकी आलोचना, उनके व्यंग्य बाणों को अपने ऊपर झेला और धीर-गंभीर बने ज्ञान की इस पवित्र गंगा को सहज प्रवाहित रहने के लिए मार्ग प्रशस्त करते रहे... और आज भी कर रहे हैं। गुरुदेव से जुड़े शिष्यों का यह कर्तव्य है, कि वे अपने गुरुदेव के इस प्रयास में जैसे भी हो सके, जितना भी हो सके, सहयोग दें और इसे पीढ़ी दर पीढ़ी स्थाई बनाये रखें। ऐसी स्थिति पुनः नहीं आनी चाहिए, जैसी कि शंकराचार्य के सिद्धारम गमन के बाद आयी, वैसे भी शंकराचार्य को ऐसे शिष्य नहीं मिले, जो उनके द्वारा प्रदीप ज्ञान की मशाल की दृढ़ता से थाम सकें।

क्या यही स्थिति दोबारा उत्पन्न हो जायेगी?

...रह-रह कर यह प्रश्न एक चिन्ता बन कर गुरुदेव के मस्तिष्क में कौंध जाता... और इस प्रश्न के समाधान के लिए ही उन्होंने जगह-जगह साधना शिविरों का आयोजन करना प्रारम्भ कर दिया, जिससे जो व्यक्ति उन तक नहीं पहुंच सकता है, वह उनके पास पहुंचे।

और पहली बार इस समाज ने समुद्र की गोमुख यात्रा देखी, क्योंकि आज तक यही होता रहा है, कि गंगा समुद्र के पास जा कर उससे एकीकृत होती है; प्यास कुएं के पास जाता है, लेकिन इस बार ठीक विपरीत प्रक्रिया ही हो रही है, क्योंकि समुद्र ने गोमुख तक की यात्रा करनी प्रारम्भ कर दी है, कुआं प्यासे के पास पहुंच रहा है।

विभिन्न स्थानों पर आयोजित साधना शिवरों में पूज्यश्री ने साधना कराने के साथ ही साथ अपनी तपस्या ऊर्जा को दीक्षा और ‘शक्तिपात’ द्वारा लोगों को देना प्रारम्भ किया। शिष्यों और साधकों की प्रार्थना पर पिछले दो वर्षों से प्रत्येक माह दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन गुरुधाम में भी हो रहा है।

गुरुदेव तो अपनी तरफ से पूरा प्रयास कर ही रहे हैं, प्रत्येक दीपक को सूर्य बनाने का; अब तो यह दीपक के सामर्थ्य को परखने का अवसर है, कि वह अपने गुरु के प्रयास को किस हद तक सार्थक बनाने में प्रस्तुत हो सकता है।

साधना शिवरों में गुरुदेव स्वयं अपने संरक्षण में साधना के अति गुह्य रहस्यों को समझाते हुए उन साधनाओं को सम्पन्न कराते हैं, जिसे आज तक कोई गृहस्य व्यक्ति करने का साहस नहीं करता था।

उन्होंने दस महाविद्याओं के पूजन क्रम को अत्यन्त सहज है, कि यदि मध्यम वर्ग, जो कि इस मानव समाज की रीढ़ है, और गृहस्थोपयोगी रूप में साधकों के समक्ष रखा; इन महाविद्याओं की साधना करना तो दूर गृहस्थ व्यक्ति पूजन करने से भी घबराता है, क्योंकि यंत्र निर्माण, सर्वतोभद्र मण्डल निर्माण, यंत्र का आवरण पूजन आदि ऐसे गृह विधान हैं, जिन्हें सम्पूर्णता के साथ कोई विद्वान पंडित ही सम्पन्न करा सकता है। पूज्य गुरुदेव ने इन सभी विधानों को अत्यन्त संक्षिप्त व सरल रूप में गृहस्थ साधकों के सम्मुख रखा है।

इस प्रकार के पूजन का पूर्ण प्रामाणिक होना इसलिए सम्भव है, क्योंकि ये पूजन-विधान सिद्धाश्रम के श्रेष्ठ ऋषियों द्वारा निर्मित और परीक्षित हैं, साथ ही गुरुदेव के द्वारा बताये गए मंत्र में सम्बन्धित दैवी शक्ति की पूरी तेजस्विता समाहित रहती है।

कुण्डलिनी जागरण की क्रिया जो कभी योगियों की धरोहर थी, उसे भी अत्यन्त सुगम कर दिया है पूज्य गुरुदेव ने, तभी तो आये दिन पत्रिका कार्यालय को कुण्डलिनी जागरण के अनुभवों से सम्बन्धित अनिवार्य पत्र प्राप्त होते रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव का साधनात्मक क्षेत्र अत्यधिक विशाल है। वे अपने बाह्य रूप से तो साधकों का मार्गदर्शन करते ही हैं, आन्तरिक रूप से भी वे प्रतिपल साधनात्मक चिन्तन प्रदान करते रहते हैं, कहने का तात्पर्य यह है, कि उनके जीवन का प्रत्येक पल, किशोरावस्था से लगाकर वर्तमान समय तक मानव कल्याण के लिए ही व्यतीत हो रहा है।

आज तक जितने भी महापुरुष, संत एवं गुरु हुए हैं, उन सभी लोगों ने समाज सुधार की प्रक्रिया को ही अपनाया है और अपने कार्यों से मानव सुखी बनाने का ही प्रयास करते रहते हैं।

इन सभी महापुरुषों की कार्य पद्धति लगभग एक जैसी ही है। वे कुलीन और सम्भ्रान्त घरों को ही प्रारम्भिक मार्गदर्शन के रूप में चुनते हैं और उनके बाद जब वे अपना ध्यान मध्यम वर्गीय लोगों की तरफ ले जाते हैं, तब तक उनके पृथ्वी ग्रह से जाने का समय आ जाता है और अपना कार्य बीच में ही छोड़कर उन्हें जाना पड़ता है। अतः जितने सुधार की आवश्यकता होती है, वे नहीं कर पाते हैं, क्योंकि इस मानव समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग इससे अछूता रह जाता है।

किन्तु पूज्य गुरुदेव की कार्य प्रक्रिया में इसके सर्वथा विपरीत देखी है। गुरुदेव के ज्ञान के संचरण हेतु प्रारम्भिक सूत्र के रूप में मध्यम वर्ग को ही चुना, क्योंकि उनका विचार

आधार है, यदि उसे सुधार दिया जाय, यदि उनके अन्तर्मन में सद्ज्ञान की ज्योति आलोकित कर दी जाय, तो संभ्रान्त वर्ग को सुधारने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

गुरुदेव का यह चिन्तन साकार रूप में प्रत्येक साधना शिविरों में देखने को मिलता है, क्योंकि सामाजिक रूप से कोई व्यक्ति बहुत बड़ा डॉक्टर हो या आर्मी का कर्नल या किसी छोटे-से ऑफिस में कलर्क या फिर दरबान - सभी एक साथ बैठकर, गुरु पीताम्बर ओढ़कर, मिल-जुल कर साधना करते हैं। इस क्रिया को देखकर यह बात पूर्ण सत्य होती प्रतीत होती है, कि 'जाति पाति पूछे नहीं कोई, गुरु को भजे सो गुरु का होई'।

गुरुदेव तो सतत प्रयासरत हैं ही अपने कार्य को मूर्तरूप देने के लिए, क्योंकि उनका निर्णय है, कि वे अपने ज्ञान को कागज के पन्नों पर उतारने के अपेक्षा मानव के हृदय में उतारना चाहते हैं, वे जीवित-जाग्रत ग्रन्थों की रचना करना चाहते हैं। तभी तो वे अपनी तपस्या को शक्तिपात्र दीक्षा के माध्यम से शिष्यों के अन्तर्मन में उतारते रहते हैं।

सहज नहीं होती है शक्तिपात्र की क्रिया, इसके लिए बहुत अधिक वेदना सहन करनी पड़ती है, इस वेदना को वही सहन कर सकता है, जो अत्यधिक धैर्यवान हो, क्योंकि अत्यन्त कठिनाई से प्राप्त साधनात्मक शक्ति को किसी के हृदय में उतारना ठीक उतना ही कठिन होता है, जितना कि अपने रक्त की एक-एक बूंद देकर किसी के जीवन की रक्षा करना।

गुरुदेव तो अपनी तरफ से हर पल पूर्णत्व देने के लिए सञ्चाल है, आवश्यकता है कि हम सभी पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ आगे बढ़ें और उनके द्वारा प्रवाहित साधनात्मक ज्ञान की गंगा में अवगाहन कर पूर्णता प्राप्त कर सकें। यह तो हमारा दुर्भाग्य होगा, यदि हम अपने घर आयी गंगा की पवित्र धारा को आत्मसात् न कर सकें तो।

तभी तो शताब्दी आगमन से पूर्व आप लोगों को सावधान किया जा रहा है, जिससे आप सभी अपने अन्दर इतनी दृढ़ता धैदा कर लें, कि पूज्य गुरुदेव के द्वारा प्रदीप साधनात्मक ज्ञान की मशाल के आलोक को पूरी पृथ्वी पर विस्तारित कर प्रत्येक व्यक्ति के व्यथित हृदय को अवलम्बन प्रदान कर सुख व शान्ति दे सकें।

और ऐसा तभी सम्भव होगा जब आप सभी... हम सभी आज ही अपने जीवन के नव निर्माण का संकल्प लें।

भैरवी हीनू, मनाली।

अक्षयं परिपूर्णं जीवनं

जीवन का नाम निरन्तर **क्षय** होना है

अक्षय तृतीया
11.05.2005

जो बढ़दाँ है वह घटदाँ भी है

केवल ईश्वर की ही 'अक्षय' कहा गया है जो न बढ़ते हैं ना घटते हैं समझाव से चराचर जगत की वातिविधियों का संचालन करते हैं।

क्षय जीवन में भी ऐसी स्थिति आ सकती है जब क्षय अर्थात् हानि ना हो, क्षय अर्थात् रोग ना हो, क्षय अर्थात् ऋण ना हो, इसके लिये पूरे वर्ष का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त दिवस है 'अक्षय तृतीया'। किसी भी शुभ कार्य को करदे के लिये वार, वर्ष, ग्रह, तिथि योग, कर्ण, चंद्रमा इत्यादि देवदा पड़ता है लेकिन अक्षय तृतीया सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त है। इस दिन किया हुआ कोई भी कार्य, इस दिन लिया हुआ कोई भी संकल्प असफल नहीं हो सकता। आप भी कीजिये जीवन से सम्बन्धित विशेष साधनाएं इस वर्ष श्रेष्ठ वर्ष पर जो केवल आपके लिये है -

अक्षय दृष्टीया

जीवन का यथार्थ सत्य क्षय ही है, जो भी निर्माण हुआ है उनकी शक्ति करोड़ गुना बढ़ जाती है और जो ज्वाला उत्पन्न चाहे वह मनुष्य की देह हो अथवा अन्य कोई पदार्थ काल की होती है वह पचास हजार डिग्री से अधिक बढ़ जाती है। गति से ही प्रभावित होकर क्षय होता ही है, अर्थात् जहां कंस्ट्रक्शन है, वहां डिस्ट्रक्शन भी है। लेकिन यह भी सत्य है कि जहां डिस्ट्रक्शन है अर्थात् विघ्वंस है वहां कंस्ट्रक्शन अर्थात् निर्माण भी है। मनुष्य की विचारधारा ज्यादातर नकारात्मक रही है, और इसीलिये उसने निर्माण से ध्वंस की ओर यात्रा की। वे महान् वैज्ञानिक जो संसार को बहुत कुछ दे सकते थे, उन्होंने भी अणु और परमाणु के विखण्डन की प्रक्रिया के बारे में विचार किया और निर्माण किया अणु बम हुए कार्यों पर पश्चाताप हुआ कि मैंने एक ऐसी क्षय क्रिया को और परमाणु बम का। परमाणु बम में आखिर होता क्या है, जन्म दिया है जो मानव जाति के लिये निरन्तर विनाश के ही इसमें परमाणुओं का विखण्डन इतनी तीव्र गति से होता है कि बीजों का रोपण करेगी। तब उन्होंने एक ट्रस्ट की स्थापना की

और अपनी सारी सम्पत्ति इस ट्रस्ट को सौंप दी और यह निर्देश दिया कि इस सम्पत्ति के ब्याज से जो राशि आयेगी, उसे प्रतिवर्ष रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, जीवन विज्ञान, कृषि, साहित्य के क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक व्यक्ति को पुरस्कार के रूप में प्रदान किया जाये। इसके साथ ही छठा पुरस्कार जिसे नोबेल पीस प्राइज कहा जाता है, उस व्यक्ति को प्रदान किया जाए, जिसने विश्व शांति की स्थापना हेतु महान कार्य किया हो।

आज ये पुरस्कार विश्व की सर्वश्रेष्ठ उपाधि के समान हैं, लेकिन यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि जीवन भर विनाश का निर्माण करने वाले सर नोबेल को भी ज्ञान हुआ कि विज्ञान के साथ-साथ साहित्य और शांति आवश्यक है।

हमारी संस्कृति में जीव के निर्माण की अपेक्षा जीवन के निर्माण पर अधिक ध्यान दिया गया है और यह स्पष्ट रूप से माना है कि जीव का अंत क्षय हो सकता है लेकिन मनुष्य जो है, उसका आत्मिक जीवन होता है। इसीलिये श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है -

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं व्यतेदद्यन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥

अर्थात् आत्मा ही वह अविनाशी तत्व है, जिसे न तो संसार का कोई अस्त्र समाप्त कर सकता है, न ही कोई अग्नि उसे जला सकती है, न ही कोई जल या वायु उसे नष्ट कर सकती है। अर्थात् अक्षय रहने वाली केवल आत्मा ही है।

हमारा शरीर भी लाखों लाखों कोशिकाओं से बना होता है और उसमें निरन्तर क्षय भी होता रहता है, लेकिन साथ ही साथ निर्माण भी होता रहता है और वातावरण में व्याप आक्सीजन को ग्रहण कर, रक्त का शुद्धिकरण कर, कार्बन डाई आक्साइड बाहर निकाल कर यह कार्य निरन्तर चलता रहता है, इस क्रिया में सबसे अधिक योगदान फेफड़ों एवं हृदय का रहता है, जो निरन्तर क्रियाशील रहते हैं।

और जब इनके ऊपर भी प्रभाव पड़ जाता है तो जो रोग उत्पन्न होता है, उसे 'क्षय रोग' अर्थात् टी.बी. कहा जाता है। क्षय अर्थात् निरन्तर टूटने की क्रिया और जब यह क्रिया प्रारम्भ हो जाती है, जो जीवन अक्षय नहीं रह पाता।

क्या हिमालय अक्षय है? उसमें भी तो निरन्तर बर्फ पिछलती रहती है और सहस्र नदियां बनती हैं लेकिन उसके उपरान्त

भी हिमालय उतना ही विशाल, उत्तंग और सिर उठाए खड़ा है, उसमें कोई कमी नहीं आती क्योंकि प्रकृति पूरी प्रक्रिया के साथ नये हिम बिन्दुओं का निर्माण करती ही रहती है।

जीवन में क्षय हो सकता है, लेकिन क्या ऐसी स्थिति आ सकती है, कि जितना क्षय हो, उससे अधिक पुनः निर्माण हो जाये और जीवन निरन्तर उच्चता की ओर गतिशील रहे, वही अक्षय स्थिति कहलाती हैं। क्रिया है तो क्षय की मात्रा से अधिक निर्माण की मात्रा होगी, इसीलिये श्रेष्ठ पुरुषों का

जीवन उत्तरोत्तर प्रगति करता रहता है, वे अपने जीवन में लेकिन यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि जीवन भर उच्चतम शिखर पर पहुंचते हैं और फिर उनका जीवन अनुकरणीय बन जाता है, दूसरों के लिए प्रेरणास्पद बन जाता है।

अक्षय तृतीया ऐसा ही महान दिवस है, जिसे सिद्ध मुहूर्त कहा गया है और सबसे बड़ी बात यह है कि पूरे भारत वर्ष में अक्षय तृतीया के दिन जितने विवाह होते हैं, उतने किसी अन्य निर्माण युक्त जीवन जीता है वह उसका आत्मिक जीवन होता है किसी अन्य दिन प्रारम्भ नहीं होते हैं। क्योंकि इस दिवस के है, उस जीवन का आत्मा से सम्बन्ध होता है। इसीलिये सम्बन्ध में हजारों वर्षों से मान्यता है कि इस दिन किया गया आत्मा को अविनाशी कहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने प्रत्येक कार्य शुभ ही होता है।

इस दिन के लिए कोई ग्रह संयोग देखने की आवश्यकता ही नहीं होती। चाहे कोई भी ग्रह किसी भी राशि में स्थित हो, अक्षय तृतीया का मुहूर्त सिद्ध उच्च मुहूर्त है।

इस वर्ष अक्षय तृतीया दिनांक 11 अप्रैल 2005 को है और उसके साथ विशेष बात यह है कि इसी दिन परशुराम जयंती भी है। भगवान परशुराम चौबीस अवतारों में से एक प्रमुख अवतार हैं और भगवान परशुराम का जीवन भी कितना महान् जीवन था, इसके जीवन वृत्तांत की एक अत्यंत सुन्दर कथा इस प्रकार है -

ये अपने पिता ऋषि जमदग्नि एवं माता के साथ आश्रम में रहते थे। ऋषि पुत्र होने के साथ ही परशुराम पितृ भक्त एवं शूरवीर थे, संसार की सारी शस्त्र विद्याओं का ज्ञान था, माता अत्यन्त विदुषी महिला थी और प्रतिदिन पूजन के लिये नदी में स्नान के पश्चात् अपने आंचल में ही जल भरकर लाती थी। और तपस्या के बल प्रभाव के कारण वह जल आंचल में स्थिर रहता था, कपड़ा होने के बावजूद भी, जल उसमें टिका रहता था और वही जल अपनी कुटिया में भगवान शिव पर अर्पित किया जाता था।

एक दिन स्नान के उपरान्त आंचल में जल भर रही थी तो एक अत्यंत सुन्दर राजपुरुष, आभूषणों से युक्त, अश्व पर

सवार होकर निकला और एक क्षण के लिए ही मन में विचार आया कि मेरा पति भी इतना सुन्दर और सुसज्जित होता। ऐसा विचार आने के पश्चात् वह भूल भी गई, लेकिन उस दिन आंचल में जल एकत्र ही नहीं हुआ, बार-बार बह जाता था। क्रषि पत्नी अपनी कुटिया में आकर क्रषि जमदग्नि से बोली - 'आज पूजन के लिए जल नहीं ला सकी।'

जमदग्नि तत्काल अपनी दिव्य दृष्टि से भाँप गये कि आज इसके मन में कोई ऐसा विचार अवश्य आया है, जिससे इसका धर्म खण्डित हुआ है, उन्होंने अपने पुत्र परशुराम को बुलाया और आज्ञा दी कि अपनी माता का सिर धड़ से अलग कर दें। परशुराम ने एक क्षण भी विचार नहीं किया और अपने खड़ग से क्रिया सम्पन्न कर दी।

क्रषि जमदग्नि ने कहा - 'तुम मेरे आज्ञाकारी पुत्र हो, आज तक मैंने तुम्हें शिक्षा दी है, आज वरदान मांगो।'

परशुराम ने हाथ जोड़कर विनीत भाव से कहा - 'मेरी माता का सिर पुनः यथावत कर दें, और मुझे कुछ नहीं चाहिये।' क्रषि ने अपने वचन का पालन करते हुए पुनः अपनी संजीवनी विद्या से मृत देह को जीवित यथावत बना दिया।

ऐसे ही तेजस्वी परशुराम ने देखा कि आर्यवर्त में राक्षसी प्रवृत्ति के व्यक्ति यज्ञों को खण्डित कर रहे हैं। तो उन्होंने संकल्प लिया कि जब तक मैं क्षत्रिय जाति को भूमण्डल से समाप्त नहीं कर दूंगा, तब तक अपना खड़ग नीचे नहीं करूंगा और उन्होंने 22 बार पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन किया। (यहां क्षत्रिय का तात्पर्य जाति विशेष नहीं है, अपितु उन तत्वों से है, जो धर्म, संस्कृति और यज्ञ को क्षति पहुंचा रहे थे।)

इसीलिये परशुराम को पौरुष का उच्चतम शिखर कहा जा सकता है, जो संकल्प लिया उसे पूरा ही किया, साधना तपस्या में भी उच्चता, शौर्य में भी उच्चता, पूर्ण पुरुषार्थ कि जिनका नाम लेने भर से मनुष्य की भुजाएं फड़कने लगती हैं। यह महान् संयोग है कि ऐसे दुर्धर्ष भगवान् परशुराम की जयंती भी अक्षय तृतीया के दिन ही आती है।

अक्षय तृतीया अर्थात् सौभाग्य दिवस

यह सौभाग्य दिवस है, इस कारण स्त्रियां अपने परिवार के लिए विशेष व्रत आदि करती हैं, तथा पूर्वजों का आशीर्वाद एवं पुण्यात्माओं से परिवार वृद्धि की कामना करती है।

अक्षय तृतीया लक्ष्मी सिद्धि दिवस है, इस कारण लक्ष्मी के सम्बन्धित साधनाएं विशेष रूप से की जाती हैं।

इस दिन किसी भी प्रकार की साधना प्रारंभ की जाती है,

नया कार्य प्रारंभ किया जा सकता है, यहां तक यक्षिणी, अप्सरा और कमला साधना के लिए भी यह शुभ मुहूर्त दिवस है।

उपयुक्त वर अथवा वधू की प्राप्ति के लिए और विवाह बाधा दोष निवारण के लिए भी यह श्रेष्ठ पर्व है।

सदगुरुदेव ने भी अपने एक महत्वपूर्ण प्रवचन में कहा था कि होली, दीवाली, शिवरात्रि, नवरात्रि के समान ही सिद्धत्तम दिवस अक्षय तृतीया परशुराम जयंती है। इस दिन मांत्रोक्त साधनाएं सम्पन्न करें चाहे तांत्रोक्त, साधनाओं में पूर्णता प्राप्त होती ही है। जीवन का क्षय रुक कर जीवन का सुख सौभाग्य, कीर्ति, यश, आनन्द अक्षय बन जाता है।

इसी शुभ मुहूर्त को देखते हुए जीवन के पांच क्षेत्रों से सम्बन्धित पांच महत्वपूर्ण साधनाएं दी जा रही हैं।

जीवन के पांच प्रधान सुख पांच साधनाओं से

जीवन को यदि सौभाग्य में बदला जा सकता है, तो यह अक्षय तृतीया के दिन अवश्य ही बदला जा सकता है। जीवन में सौभाग्य पांच रूप में ही हो सकते हैं और जीवन के इन पांच सुखों की साधना शक्ति द्वारा जीवन में उतारा जा सकता है, यही साधक का पुरुषार्थ होता है।

इन साधनाओं की विशेषताएं -

1. इन्हें कोई भी गृहस्थ स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है।
2. ये कम से कम दिनों में सम्पन्न हो सकती हैं।
3. पूर्ण निष्ठा से सम्पन्न करने पर निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है।
4. ये साधनाएं बिना किसी विशेष निर्देशन के व्यापार या नौकरी करते हुए सरलता से सम्पन्न की जा सकती हैं।

1. ताटा लाधना

- सम्पूर्ण लक्ष्मी सिद्धि हेतु दस महाविद्याओं में से यह प्रमुख महाविद्या तथा संसार की अद्वितीय धनदायक देवी है, हजारों वर्षों से क्रषि मुनि व हमारे पूर्वज तारा साधना सम्पन्न करते आये हैं, क्योंकि निष्ठापूर्वक की गई इस साधना में सफलता प्राप्त होती है और मनोवांछित वरदान प्राप्त होता है।

इसके साथ ही इस साधना को सम्पन्न करने पर महाविद्या सिद्ध हो जाती है और भौतिक दृष्टि से जीवन में वह जो कुछ भी चाहता है, उसे प्राप्त हो जाता है।

साधना विधान

इस साधना को दिनांक 11 मई 2005 या किसी भी माह के रविवार की रात्रि को किया जाये तो शीघ्र सफलता प्राप्त हो

सकती है। स्नान आदि कर लाल धोती पहन कर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर बैठ जायें। सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर 'तारा यंत्र' स्थापित करें। फिर अपने सामने गन्धक की 7 ढेरियां बना दें, चौथी ढेरी पर तेल का दीपक स्थापित करें। दीपक के सामने 'तारा वत्सनाभ' को स्थापित कर दें और उसके आगे जलपात्र, कुंकुम, अगरबत्ती आदि रख दें।

सर्वप्रथम जल से यंत्र को धोकर रख दें, अक्षत चढ़ा दें, फिर तारा वत्सनाभ को जल से धोकर पौछ कर उस पर माचिस की शलाका से या किसी भी शलाका से कुंकुम के द्वारा निम्न मंत्र अंकित करें -

//ॐ तारा तूरी स्वरहर//

इसके बाद दीपक व अगरबत्ती जला दें तथा 'मूँगे की माला' से मंत्र जप प्रारम्भ करें, इसमें नित्य 60 माला मंत्र जप अनिवार्य है तथा यह मात्र छः दिनों की साधना है। यह साधना रात्रि में ही सम्पन्न की जा सकती है। जब छठे दिन भगवती तारा के प्रत्यक्ष दर्शन हों, तो उन्हें हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि वह भौतिक जीवन सम्बन्धित सभी इच्छाएं पूरी करे और नित्य स्वर्ण प्रदान करें। इसके बाद तारा यंत्र को पूजा स्थान में रख दें और 'तारा वत्सनाभ' को उसी लाल वस्त्र में लपेट कर घर के किसी सुरक्षित स्थान में रख दें। इस प्रकार करने से यह साधना सिद्ध हो जाती है तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त होता है जो साधक की इच्छा होती है।

तारा साधना जप मंत्र

**// ॐ एं क्ल त्व हीं एं तारायै सिद्धिं देहि देहि
ॐ एं क्ल हीं एं नमः //**

वस्तुतः यह साधना अपने आपमें चमत्कार ही है और जो इसे सिद्ध कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

❖ * ❖ * ❖ * ❖ * ❖ * ❖ * ❖ *

2. बगलामुखी लिङ्गि - शत्रु एवं बाधा निवारण हेतु

आज का जीवन अत्यधिक असुरक्षित और भयप्रद बन गया है, समाज में जरूरत से ज्यादा द्वेष, छल, हिंसा और शृत्रता का वातावरण बन गया है। फलस्वरूप यदि व्यक्ति शान्तिपूर्वक रहना चाहे तब भी सम्भव नहीं हो पाता।

यह साधना शत्रुओं को परास्त करने, उनके लड़ाई-झगड़े



को समाप्त करने, मुकदमें आदि में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिये विशेष रूप से सहायक है। यही नहीं अपितु यदि अचानक कोई संकट आ गया है तब भी यह साधना सम्पन्न करने पर वह संकट समाप्त हो जाता है और सामने वाला व्यक्ति शत्रु भाव भूल जाता है।

जीवन की सुरक्षा और शत्रुओं पर निर्मम प्रहार करने और उन्हें शक्तिहीन, निस्तेज करने की दृष्टि से यह अपने आप में अद्वितीय साधना है। प्रत्येक साधक को यह साधना अपने जीवन में अवश्य सम्पन्न करनी चाहिये। इससे जहां एक ओर महाविद्या तो सिद्ध होती ही है, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति शत्रुओं की तरफ से निश्चिन्त हो जाता है। यदि कोई व्यापार में बाधक बन रहा हो या बॉस अथवा ऑफिसर नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा हो अथवा आपको प्राणों का संकट हो या आप किसी भी दृष्टि से असुरक्षित अनुभव कर रहे हों तो यह साधना सर्वश्रेष्ठ साधना है। यदि निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न किया जाए, तो हाथों-हाथ फल प्राप्त होता है तथा जीवन में पूर्ण अभयता प्राप्त होती है।

साधना विधान

11.05.2005 अथवा किसी भी मंगलवार से यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है। यह रात्रिकालीन साधना है। दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जायें, साधक पीली धोती ही पहिने और यज्ञोपवीत को पीले रंग से रंग कर गले में धारण कर लें। फिर सामने पीले वस्त्र पर 'बगलामुखी यंत्र' स्थापित कर दें और उसके सामने ही 'हरिद्रा हंसराज' स्थापित कर दें। तत्पश्चात् अगरबत्ती और शुद्ध धी का दीपक लगा दें।

सर्वप्रथम जल से यंत्र को धोकर केसर लगावें। फिर 'हरिद्रा हंसराज' पर निम्न मंत्र माचिस की शलाका से या किसी तिनके से अंकित करें -

// ॐ पीताम्बरा देव्यै नमः //

अब 'पीताम्बरा माला' से निम्न मंत्र का जप करें। इस साधना में निम्न मंत्र का 11 दिनों में सवा लाख मंत्र जप करना आवश्यक होता है -

मंत्र

// ॐ हर्तीं बगलामुखीं (अमुकं) शत्रून्
नाशय मर्दय हर्तीं फट //

यह मंत्र छोटा सा है, पर अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न करना चाहिये और साथ ही साथ 11 दिनों तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये, इस मंत्र में अमुक शब्द के स्थान पर शत्रु के नाम का उल्लेख करना चाहिये।

जब 11 दिन में मंत्र जप पूरा हो जाये तो उस 'हरिद्रा हंसराज' को जंगल में जाकर लकड़ियां जलाकर उसमें उसे जला देना चाहिये। इस प्रकार करने से तुरन्त मनोवांछित कार्य सिद्ध हो जाती है और वास्तव में हम जो कुछ चाहते हैं, वैसा हो जाता है। वास्तव में ही यह साधना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और शीघ्र सिद्धिदायक है।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

* * * * *

3. इतह योग्नि लाधना

- कार्य सिद्धि हेतु

हमारा विश्वास भूत प्रेतों के प्रति कुछ भी हो परन्तु यह सत्य है कि जिस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्ध जातियां होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य और देवता के अलावा भूत-प्रेत आदि जातियां भी होती हैं, और ये भी मनुष्य की तरह से सुख-दुःख, प्यार-घृणा आदि अनुभव करते हैं। जिस प्रकार एक मनुष्य से सामान्यतः भय नहीं होता, तथा मनुष्य अपनी

सामर्थ्य के बल पर दूसरे मनुष्य को नौकर रख कर उससे कार्य करा सकता है, उसी प्रकार कोई व्यक्ति साधना कर भूत को अनुचर के रूप में रख सकता है और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करा सकता है।

यह बात भी अब सिद्ध हो चुकी है, कि भूत-प्रेत किसी भी प्रकार से कोई हानि नहीं पहुंचाते, यदि क्रोधित भी होते हैं तो कोई तकलीफ नहीं देते, मनुष्य से ज्यादा सेवा करते हैं, चौबीस घण्टे आज्ञा पालन में तत्पर रहते हैं तथा वे सभी कार्य कर देते हैं जो मनुष्य के लिए स्वभाविक रूप से असम्भव होते हैं।

भूत त्रि-आयामी होने के कारण लगभग अदृश्य होते रहते हैं, पर जिसने भूत सिद्ध किया होता है, उसे वह स्पष्ट दिखाई देता है। ये अत्यधिक बलशाली होते हैं, हवा की तरह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं, इस लिये ये कठिन से कठिन कार्य भी आसानी से कर सकते हैं।

इस साधना को स्त्री या पुरुष कोई भी कर सकता है, इस साधना से किसी भी प्रकार की कोई हानि नहीं होती।

साधना विधान

इस साधना को 11.05.2005 या किसी भी माह के कृष्ण पक्ष के रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है। रात्रि को बिना स्नान किये काली धोती पहन कर काले आसन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें, सामने काला वस्त्र बिछा दें और उस पर 'भूत डामर यंत्र' रख दें। इसके सामने 'बड़हल का टुकड़ा' स्थापित कर उस पर निम्न मंत्र काली स्याही से छोटे-छोटे अक्षरों में लिख दें -

// ॐ भूताय वशं करि करि स्वाहा //

इसके बाद तेल का दीपक लगाकर फिर 'शंख माला' या 'मूँगे की माला' से निम्न मंत्र जप करें -

मंत्र

// ॐ शमशन्त भूताय वशं करि मम
आज्ञा पालय पालय फट //

इस मंत्र की नित्य 101 माला मंत्र जप अनिवार्य है। मात्र 11 दिन तक मंत्र जप करने पर 11 वे दिन भूत सामने प्रत्यक्ष होता है तथा आज्ञा मांगता है, तब साधक उसे आज्ञा दें कि मैं जो भी कार्य कहुंगा तुझे पूरा करना है, तब वह भूत वचन देकर चला जाता है और इसके बाद जब भी वह साधक उपरोक्त मंत्र का तीन बार उच्चारण करता है तो वह भूत उसकी आंखों के सामने प्रत्यक्ष हो जाता है, और तुरन्त आज्ञा पालन करता है।

साधना प्रारम्भ होने पर बड़हल के टुकड़े को ताबीज़ में भर

कर अपनी बांह पर बांध लेना चाहिये तथा 'भूत डामर यंत्र' को काले कपड़े में लपेट कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख देना चाहिये। निश्चय ही यह साधना अत्यधिक महत्वपूर्ण है तथा गायत्री उपासक अथवा सौम्य साधक भी इस साधना को निर्दोष रूप में सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

4. लम्मोहन साधना

सर्वप्रभावकारी सम्मोहन, अनुकूलन हेतु

आज के युग में वशीकरण एक अनिवार्य साधना बन गई है, क्योंकि चारों तरफ नफरत, द्रेष और धोखा बढ़ गया है, प्रेमी-प्रेमिका को धोखा दे देता है, भाई-भाई से दुश्मनी कर लेता है तथा अकारण ही शत्रु पैदा होते रहते हैं, अधिकारी वर्ग नाराज रहता है, हमारे पास काम करने वाले विश्वास पात्र नहीं रहते हैं, पार्टनर की तरफ से धोखा होने की सम्भावना रहती है, इन सभी स्थितियों में वशीकरण प्रयोग अपने आपमें एक आश्चर्यजनक प्रयोग है, यह प्रयोग अभी तक गोपनीय रहा है, पर इस प्रयोग से पत्थर जैसे कठोर हृदय को भी अपने वश में किया जाता है और जीवन भर उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है।

वशीकरण का कई लोग गलत अभिप्राय समझते हैं, यह तो मात्र किसी भी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने की साधना है। अपने प्रेम से, अपनी भक्ति से, सेवा से हम अपने इष्ट को रिंझाते हैं, तो वह भी तो एक प्रकार का वशीकरण ही है, जब इष्ट या गुरु विवश होकर वरदान देने को आतुर हो उठते हैं।

इस साधना को स्त्री या पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है। साधना में सफलता हेतु यह आवश्यक है, कि हृदय में किसी प्रकार का कोई भी दूषित अथवा घृणित उद्देश्य लेकर साधना में प्रयुक्त न हुआ जाए।

साधना विधान

इस साधना को दिनांक 11.05.2005 अथवा किसी भी माह के शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है। स्नान कर सफेद धोती धारण कर लें और सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठ जायें। सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर 'वशीकरण ताबीज' रख दें, उसके सामने 'रतनजोत' रख दें। फिर यंत्र को स्नान कराकर उस पर



कुंकुम की बिन्दी लगावें तथा अक्षत चढ़ावें। बाद में रतनजोत पर केसर से उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिसे वश में करना हो, यदि बहुत लोगों को एक साथ अपने अनुकूल करना हो, तो उस पर 'सर्वजन' शब्द लिखें।

इसके बाद तेल का दीपक जला दें और 'स्फटिक माला' से निम्न मंत्र की नित्य 101 माला जप करें। यह पांच दिन की साधना है, और साधना सम्पन्न होने पर उस ताबीज को लाल या पीले धागे में पिरोकर बांह पर बांध लें तथा रतनजोत को सफेद कपड़े में लपेट कर किसी स्थान पर रख दें।

मंत्र

// ॐ क्रीं क्रीं क्रीं (अमुकं) वश्य करि करि
मम आज्ञा पात्वय पात्वय फट //

इसमें 'अमुकं' शब्द के स्थान पर उसका नाम का उच्चारण करें, जिसे वश में करना हो अथवा 'सर्वजन' का उच्चारण भी कर सकते हैं।

वास्तव में ही यह साधना आज के युग में अत्यधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण है, तथा इस साधना में किसी पत्थर दिल व्यक्ति को भी अपने अधीन कर उसे अपने अनुकूल बनाकर

मनोवांछित कार्य कराये जा सकते हैं।

साधना सामग्री - 330/-

* * * * *

5. उर्वशी साधना - सौन्दर्य, सुख, प्रेम की पूर्णता हेतु

रम्भा, उर्वशी और मेनका तो देवताओं की अप्सराएं रही हैं, और प्रत्येक देवता इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहा है। यदि इन अप्सराओं को देवता प्राप्त करने के लिये इच्छुक रहे हैं तो मनुष्य भी इन्हें प्रेमिका रूप में प्राप्त कर सकते हैं। इस साधना को सिद्ध करने में कोई दोष या हानि नहीं है तथा जब अप्सराओं में श्रेष्ठ उर्वशी सिद्ध होकर वश में आ जाती है, तो वह प्रेमिका की तरह मनोरंजन करती है, तथा संसार की दुर्लभ वस्तुएं और पदार्थ भेट स्वरूप लाकर देती है। जीवन भर यह अप्सरा साधक के अनुकूल बनी रहती है, वास्तव में ही यह साधना जीवन की श्रेष्ठ एवं मधुर साधना है तथा प्रत्येक साधक को इस सिद्धि के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये।

साधना विधान

इस साधना को 21 अप्रैल के पश्चात् करना विशेष अनुकूल है। इसके अलावा इसे अक्षय तृतीया या किसी भी शुक्रवार से भी प्रारम्भ किया जा सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है। स्नान आदि कर पीले आसन पर उत्तर की ओर मुँह कर बैठ जाएं। सामने पीले वस्त्र पर 'उर्वशी यंत्र' (ताबीज) स्थापित कर दें तथा सामने पांच गुलाब के पुष्प रख दें। फिर पांच धी के दीपक लगा दें और अगरबत्ती प्रज्जवलित कर दें। फिर उसके सामने तो वह प्रत्यक्ष उपस्थित होती है तथा साधक जैसी आज्ञा देता लगा लें और मध्य में निम्न शब्द अंकित करें -

// ॐ उर्वशी प्रिय वशं करि हुं //

इस मंत्र के नीचे केसर से अपना नाम अंकित करें। फिर 'उर्वशी माला' से निम्न मंत्र की 101 माला जप करें -

मंत्र

// ॐ ह्रीं उर्वशी मम प्रिय मम चित्तानुरंजन
करि करि फट //

यह मात्र सात दिन की साधना है और सातवें दिन अत्यधिक सुन्दर वस्त्र पहन यौवन भार से दबी हुई उर्वशी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष उपस्थित होकर साधक के कानों में गुंजरित करती



है कि, जीवन भर आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं उसका पालन करूँगी।

तब पहले से ही लाया हुआ गुलाब के पुष्पों वाला हार अपने सामने मानसिक रूप से प्रेम भाव उर्वशी के सम्मुख रख देना चाहिये। इस प्रकार य साधना सिद्ध हो जाती है और बाद में जब कभी उपरोक्त मंत्र का तीन बार उच्चारण किया जाता है तो वह प्रत्यक्ष उपस्थित होती है तथा साधक जैसी आज्ञा देता है वह पूरा करती है।

साधना समाप्त होने पर उर्वशी यंत्र (ताबीज) को धागे में पिरोकर अपने गले में धारण कर लेना चाहिये। सोनवल्ली को पीले कपड़े में लपेट कर घर में किसी स्थान पर रख देना चाहिये, इससे उर्वशी जीवन भर वश में बनी रहती है।

साधना सामग्री - 290/-

* * * * *

ये पांचों साधनाएं आज के युग की आश्चर्य हैं और प्रत्येक साधक को अपने जीवन में इसे अक्षय तृतीया से अथवा आगे के सिद्ध दिवसों से प्रारम्भ करनी चाहिये और सभी दृष्टियों से जीवन को पूर्णता देनी चाहिये।

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291-2432209 या टेलीफैक्स : 0291-2432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है।

फिर आई नवरात्रि,

फिर आई निश्विल जयंति तो

आपकी याद दिला दें कि

यह कल्प है 'द्वाष्टावर ज्ञाधनाओं' का जिन्हें

आप बिना तामझाम के सरल रूप से सम्पन्न कर सकते हैं।

सिद्धिबाधक उपचार सावर प्रयोग

याथट मंत्रों के अम्बन्ध में पंडितों ने तथाकथित विद्वानों ने धिना धात का हो-हल्ला भचा रखा है कि केवल अंटकुत आषा के मंत्र ही अही मंत्र है वाकी अभी मंत्र फलित नहीं होते। लेकिन 2000 हजार वर्षों से याथट आधनाओं के धाटे में इतिहास वाक्षी है कि जष कोई याथना अफल नहीं होती है तो तुरंत प्रभाव के लिये याथट मंत्रों का ही अहाटा लेना पड़ता है। मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिवार में ही हजारों ऐसे याथक हैं जिन्होंने याथट आधनाएं की ओर तुरंत फल प्राप्त किया। आप पीछे क्यों रहते हैं? आप श्री अम्पन्न करें - ये अबोधी, विटाली आधनाएं।

कुछ मान्यताएं ऐसी होती हैं, जो समाज के विश्वास में घर बना लेती हैं और युग बीत जाने के बाद भी समाज न तो उनमें संशोधन करना चाहता है, न ही उनको एक समालोचन की भाँति कसौटी पर कस कर परखना चाहता है जबकि विद्वान पुरुष तो वह होता है, जो किसी भी बात के दोनों ही पक्षों पर निष्पक्षता से विचार करे तथा जो सत्य हो, उसे स्वीकारने के साथ-साथ उसकी न्यूनताओं को भी प्रकट करे।

समाज की ऐसी ही अनेक मान्यताओं में एक मान्यता यह भी है, कि नाथ पंथी साधक उग्र, हठीले, कठोर, बात-बात पर झगड़ने वाले और उद्दंड होते हैं। यदि समाज के सामान्य व्यक्ति से पूछिये, तो प्रायः वह नाथ पंथी साधकों और अधोरियों में भेद भी नहीं कर पाते और प्रायः उन्हें एक ही समझते हैं।

यह एक नितान्त दुःख की बात है, कि जिस सम्प्रदाय का प्रचलन गोरखनाथ जैसे युगपुरुष के माध्यम से हुआ, उसके

विद्वानों ने धिना धात का हो-हल्ला भचा रखा हो गई, जबकि गुरु गोरखनाथ एवं परवर्ती नवनाथों द्वारा समाज के कल्याण के लिए जो कुछ भी किया गया, उसकी कोई समता ही नहीं की जा सकती।

कदाचित् कोई भी सम्प्रदाय अपने मूल रूप में जो होता है, वह कालान्तर में नहीं रह जाता, क्योंकि उसमें समय के अनुसार केवल मान्यताएं, विचार एवं अन्यान्य पद्धतियां भी प्रविष्ट होती ही जाती हैं तथा शनैः-शनैः कोई भी पंथ व्यवहारिकता की ओर तथा सार्वजनिकता की ओर बढ़ने के आग्रह के कारण अपने मूल दर्शन एवं चिन्तन से कुछ प्रक्षिप्त हो ही जाता है।

अन्यान्य धर्म-दर्शनों की भाँति नाथ सम्प्रदाय का भी एक वृहद् व सुनिश्चित दर्शन रहा ही है, साथ ही इस पंथ में अद्वितीय साधक, चिन्तक, तपस्वी व मर्मज भी उत्पन्न हुए हैं।

ये साधक न केवल शिव-तत्त्व की ही आराधना करते थे, के क्षणों में उद्भूत हुए होंगे।

वरन् शक्ति तत्त्व के महत्त्व को भी स्वीकार करते थे तथा इनका समन्वित स्वरूप अपने गुरु में स्वीकार कर सर्वोच्च महत्ता उन्हीं को देते थे। इसी कारणवश नाथ पंथ में शक्ति साधना के प्रबल प्रमाण मिलते हैं तथा शिव साधना के भी।

गुरु साधना तो नाथ पंथ की सर्वोच्च है ही। संभवतः नाथ पंथ के श्रेष्ठ योगी अपने 'गुरु' के रूप में ही भगवान् शिव के ही अर्द्धनारीश्वर स्वरूप की अभ्यर्थना करते हैं।

विडम्बना यह हो गई कि उनके द्वारा रचित साबर मंत्रों की अटपटी भाषा से सर्वसाधारण ने यह निष्कर्ष लगाया, कि वे (अर्थात् नाथ पंथी) कोई अल्पज्ञ, अटपटे व्यक्ति रहे होंगे, जो नशे में चूर होकर यूँ ही कुछ गड़बड़ा देते होंगे और अंधविश्वास के कारण ग्रामीण जनता उनका विश्वास भी कर लेती होगी। कम से कम मैंने अपने शोध में कई आम व्यक्तियों को इसी धारण से युक्त देखा।

देवभाषा संस्कृत में न रचे होने के कारण विद्वान् समाज ने भी इसके दुष्प्रचार में बढ़-चढ़ कर भाग लिया होगा, जिसके परिणाम स्वरूप हम उन अनेक दुर्लभ मंत्रों के ज्ञान से आज वंचित हैं, जो कि मूलतः किसी योगी या संन्यासी के अन्तर्द्वन्द्व

मेरे प्रपितामह जो गोरखपुर जिले के एक क्षेत्र के ताल्लुकेदार थे, उन्हें अपनी सामन्ती परम्परा के प्रभाव में दरबार लगाने का बेहद शौक था और इतना ही नहीं, वे इसका विवरण भी तैयार करवाते रहते थे। कदाचित् उन्हें यह आशा नहीं थी, कि कभी देश स्वतंत्र भी होगा और वे अपने उत्तराधिकारियों के लिए अपने विरासत में अन्य वस्तुओं के साथ-साथ रोब-दाब और टाठ-बाट का इतिहास भी छोड़ जाना चाहते थे। यद्यपि उनकी आशा पूर्ण नहीं हुई। देश स्वतंत्र हो गया, किन्तु उनका वह 'रोजनामचा' आज मेरे लिए किस प्रकार ज्ञान का भण्डार बनता है, मैं इसको शब्दों में नहीं बता सकता। अनेक लुप्त परम्पराओं, रीति-रिवाजों के वर्णन आदि के साथ ही साथ उसमें उन साधुओं का भी विवरण मिलता है, जो उनसे समय-समय पर मिले और उन्होंने अपना ज्ञान मेरे प्रपितामह को दिया।

अभी तक मेरे साथ समस्या यह थी, कि मेरे प्रपितामह ने अन्य विवरण तो रोजनामचे में दर्ज करवा रखे थे, जबकि मंत्रों आदि का विवरण एक अलग व्यक्तिगत डायरी जैसी पुस्तक में स्वयं अपने हाथ से लिखे थे। मैं इसी कारणवश समझ ही नहीं पाता था, कि कौन सा मंत्र किस साधना से सम्बन्धित है। मेरी इस समस्या का समाधान तब हुआ, जब मैं पूज्यपाद गुरुदेव के सम्पर्क में आया और उन्हें समस्त विषय वस्तु दिखाइ। लगभग छः माह मुझे यही लगता था, मानों गुरु गोरखनाथ ही इस रूप में आकर समस्त ज्ञान को पुनर्जीवित कर रहे हों।

इस समस्त शोध कार्य के सम्पूर्ण होने पर उन्होंने मुझे आज्ञा दी, कि इस ज्ञान का लाभ केवल व्यक्तिगत या पारिवारिक ही न हो वरन् सर्वसामान्य के लिए हो। उन्होंने एक प्रकार से गुरु दक्षिणा में केवल इतनी सी आज्ञा दी और पूज्यपाद गुरुदेव की इस आज्ञा को सम्पूर्ण करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

प्रस्तुत लेख में मैं विस्तृत शोध से केवल इतना ही स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा हूँ, कि किस प्रकार नाथ पंथी साधु न केवल उच्चकोटि के शैव साधक ही थे, वरन् शक्ति साधना के क्षेत्र में भी उनकी गति निर्बाध थी तथा जीवन की ऐसी अनेक समस्याएं, जिनका समाधान केवल शक्ति के आधार पर ही हो सकता है, उसकी उन्होंने कितनी सटीक व्याख्या एवं साधना विधि ढूँढ़ निकाली थी।

ऐसे ही अनेक उच्चकोटि के साधकों, योगियों, संन्यासियों के प्रयोगों के मध्य मैं 'विभूतिनाथ जी' के कुछ प्रयोग आगे प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो अपने समय के विख्यात नाथ पंथी

साबर मंत्र रचना

साबर मंत्र का कोई अर्थ नहीं निकलता एवं तुकबन्दी भी नहीं होती, अतः इन मंत्रों का अर्थ क्या है? इस बात पर ध्यान देना व्यर्थ है, क्योंकि ये शीघ्र सफलताप्रद होते हैं।

साबर मंत्र की सिद्धि

इन विषय में कुछ विशेष ज्ञातव्य तथ्य हैं -

- ☆ मंत्र को गुरु द्वारा ही प्राप्त कर सिद्ध करना चाहिए।
- ☆ शुभ दिन, शुभ मुहूर्त व उचित स्थान पर ही साबर मंत्र ग्रहण व सिद्ध करना चाहिए।
- ☆ कुछ मंत्र देव स्थान, तीर्थ स्थान तथा जलाशय पर बैठकर सिद्ध किये जाते हैं, तो कुछ मंत्रों की साधना गुरु प्रदर्शित मार्ग में शमशान आदि भूमि में बैठकर की जाती है। साबर मंत्रों की साधना के दिन भी निश्चित होते हैं।

योगी रहे हैं, तथा गोरखपुर-नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र में जिनकी महिमा अक्षुण्ण बनी रही।

मैं एक आवश्यक बात यहां उद्धृत करना चाहता हूं, कि आगे प्रस्तुत सभी प्रयोगों को पूरे वर्ष किसी भी समय सम्पन्न किया जा सकता है। यद्यपि इन्हें किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को सम्पन्न करना अधिक श्रेष्ठकर सिद्धि होता है।

अस्त्वा पीड़ाओं के निवारण हेतु

जीवन में ऐसी अनेक स्थितियां होती हैं जहां साधक किसी अस्त्वा मानसिक अथवा शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त होता है तथा उसके समाधान के लिए किसी दैवी बल की अपेक्षा करता है। ऐसी पीड़ाओं को किसी परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता है, क्योंकि यह तो व्यक्ति की क्षमताओं से सम्बन्धित बात है। जो स्थिति किसी एक के लिए सहज हो, वही दूसरे के लिए अस्त्वा भी हो सकती है, किन्तु यह साधना प्रत्येक दशा में साधक को कुछ ऐसा अतिरिक्त बल प्रदान करती है, जिससे वह बिना किसी गम्भीर हानि के उस समस्या का निदान प्राप्त कर ही लेता है। एक प्रकार से यदि इसे आत्मबल की साधना कहें, तो अनुचित नहीं होगा।

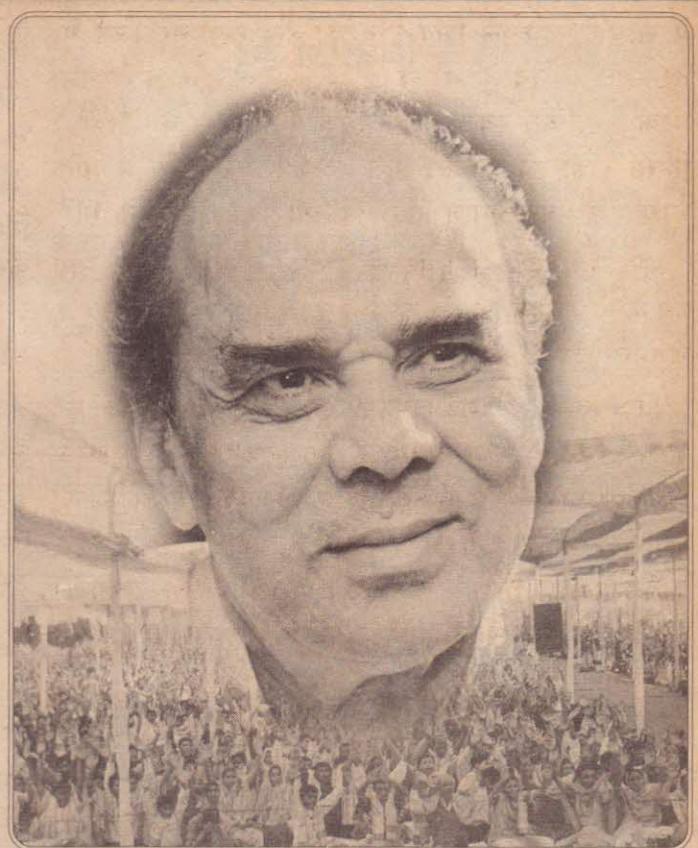
इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक के पास 'ताबीज रूप में काली यंत्र' एवं 'काली हकीक माला' होना आवश्यक है। इन दोनों अत्यावश्यक साधना सामग्रियों का रोग-नाशक मंत्रों से सिद्ध होना आवश्यक है।

इस प्रयोग को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है। यदि कोई चाहे, तो संकल्प कर इसे किसी दूसरे व्यक्ति के लिए भी सम्पन्न कर सकता है। यह रात्रि में किया जाने वाला प्रयोग है तथा साधक को गहरे नीले रंग की धोती धारण कर किसी गहरे नीले रंग के आसन पर ही दक्षिण मुख होकर बैठना चाहिए। अन्य किसी विधि-विधान की विशेष आवश्यकता नहीं है। साधक तेल का दीपक लगाकर यंत्र के सम्मुख निम्न मंत्र की एक माला जप करें -

मंत्र

काली रात एक नदी वीर, सात समुद्र का जगमज तीर, कामाख्या रानी का गौरी पिण्डा, भैरवनाथ हरो सब पीरा, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो तेरा वाचा॥

यदि कोई गम्भीर संकट की अवस्था में हो, तो इसी प्रयोग



को थोड़े से परिवर्तन के साथ करना लाभदायक रहता है। इसके लिए साधक को चाहिए कि साधना के प्रारम्भ में ही हाथ में जल, कुछ काले तिल के दाने, चावल एवं पुष्प की पंखुड़ियों को लेकर संकल्प करें -

"मैं अमुक नाम, अमुक दिन में अपने अमुक प्रकार की पीड़ा के निवारण के लिए काली साबर प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, अतः शीघ्रातिशीघ्र लाभ मिले।"

ऐसा कहकर वह यह सभी सामग्री किसी ताम्रपात्र में भरे जल में डाल दें तथा प्रत्येक बार मंत्र उच्चारण के साथ ही कुछ तिल के दाने उसी पात्र में डालता रहे। साधना की समाप्ति पर उस पात्र को स्वयं के सिर पर धुमा कर घर से कुछ दूर दक्षिण दिशा में पात्र की सभी सामग्रियां फेंक आएं।

इसी प्रयोग को किसी अन्य रोगी के लिए करते समय संकल्प में रोगी का भी नाम लें तथा अंत में सामग्रियां उसके सिर पर धुमा कर फेंक दें।

साधना की समाप्ति पर यंत्र एवं माला को यथाशीघ्र घर से दूर कहीं फिकवा दें। नवरात्रि में सम्पन्न किया जाने वाला यही काली साबर प्रयोग अपनी तीक्ष्णता में प्रमाण सिद्ध है।

न्यौषावर - 270/-



विघ्न बाधाओं के निवारण हेतु

जिस प्रकार पीड़ाओं को किसी निश्चित परिभाषा से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार विघ्न-बाधाओं की भी कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती, केवल इतना ही कहा जा सकता है, कि जिन ज्ञात-अज्ञात कारणों से साधक अपने मानसिक, आत्मिक एवं भौतिक विकास में बाधा अनुभव करे, वे कारण ही विघ्न या बाधा होते हैं। प्रस्तुत प्रयोग इसी विशद 'परिभाषा' के अनुकूल जीवन की उन सभी विघ्न-बाधाओं की शांति करने में समर्थ है।

यह अपने आप में शत्रु नाशक प्रयोग भी है, जिसे नवरात्रि के सिद्ध मुहूर्त पर सम्पन्न किया जा सकता है। यह रात्रि में सम्पन्न किया जाने वाला प्रयोग है, जिसे पूरी नवरात्रि में कभी भी सम्पन्न कर सकते हैं।

इस प्रयोग हेतु साधक को गहरे लाल रंग की धोती धारण कर, गहरे लाल रंग के आसन पर दक्षिण मुख होकर बैठना चाहिए तथा अपने सम्मुख एक काला वस्त्र का टुकड़ा बिछा लें। इस वस्त्र के टुकड़े पर 'आठ बुन्दे' एक गोल घेरे में स्थापित करें, जो काली मंत्रों से चैतन्य हों। इस घेरे के मध्य में अपनी जो भी समस्या हो (अथवा शत्रु के नाम को) एक

मंत्रों की सामग्री

1. सामान्य सामग्री - यथा पुष्प, अगरबत्ती, प्रसाद, पान आदि।

2. विशिष्ट सामग्री - मंत्र में प्रदर्शित होती है अथवा गुरु प्रदर्शित मार्ग से निर्दिष्ट होती है, जैसे - लौंग, इलायची, केसर, कस्तूरी, जावित्री, जायफल, इत्र, गुलाल, चन्दन, अबीर, कुंकुम, नारियल, बतासे, लड्डू, फल, पेड़े, कलाकन्द, गुड़, बरफी, अनार, केला, काली मिर्च, हींग, लाल मिर्च, लवण, राई, सरसों, तिल, जौ, यंत्र, माला आदि।

मंत्रों की संख्या : साबर मंत्र अनन्त है तथा अनेक साधु, फकीरों, ग्रंथों से भिन्न-भिन्न रूपों में प्राप्त होते हैं, इनमें एकरूपता नहीं मिलती।

साबर मंत्रों की विशेषता

- ☆ अन्य मंत्रों की अपेक्षा ये शीघ्र सिद्ध होते हैं।
- ☆ सामान्य साधनों से ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है।
- ☆ शीघ्र कार्य करते हैं।
- ☆ कुछ साबर मंत्रों का प्रभाव स्थायी होता है, तो कुछ का प्रभाव अल्पकालीन होता है।

कागज पर लिख कर मोड़ कर रख दें तथा ऊपर से काले तिलों की एक छोटी सी ढेरी ऐसी बना दें, कि कागज का डुकड़ा दिखाई न दें। इस ढेरी के ऊपर 'दो गोमती चक्र' रखें तथा उन पर काजल का टीका लगाकर 'मूँगे की माला' से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। माला केवल मूँगे की होनी आवश्यक है -

मंत्र

इरझर बहे कपाल फटे, नाथ का बुंदा पांव पड़े
जेरख राज सत्य कहे तिरिया का रूप वही थरे,
शब्द सांचा पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो तेरी
वर्चा॥

मंत्र जप के काल में तेल का दीपक अवश्य लगा लें। अन्य किसी विधान की आवश्यकता नहीं है। यदि मंत्र जप के काल में भय की अनुभूति हो, तो विचलित होने की आवश्यकता नहीं। मंत्र जप के उपरान्त समस्त आठों बुन्दे घर से बाहर जाकर आठों दिशाओं में फेंक दें तथा माला व दोनों गोमती चक्रों को घर से कुछ हट कर भूमि में गाइ दें। शेष सामग्री अर्थात् तिल एवं कागज को जला दें। इन सभी कार्यों को यथा सम्बव शीघ्रता पूर्वक ही सम्पन्न कर लें तथा इन्हें सम्पन्न करने के बाद स्नान कर लें। अपने अनुभवों को गुप रखें।

न्यौष्ठावर - 280/-

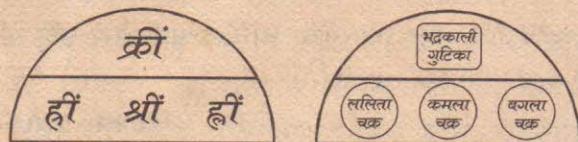
☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

धन के निश्चित आगमन हेतु

धन की साधक के जीवन में क्या महत्ता होती है, इसको स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं, भले ही साधक संन्यासी ही क्यों न हो। धन का निश्चित प्रवाह बने रहने से ही साधक मानसिक चिन्ताओं से मुक्त होकर अपनी साधनओं को पूर्णता दे पाता है। धन के निरन्तर प्रवाह बने रहने से वह आगे बढ़कर अनेक समाजोपयोगी कार्य कर पाता है, अपने गुरु के चरणों में उपस्थित हो उनकी आज्ञाओं, उद्देश्यों को पूर्ण करने में सहायक बन पाता है तथा इस प्रकार से समाज में श्रेष्ठता और सम्मान का पात्र बन जाता है।

इन समस्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ही साबर मंत्रों के क्षेत्र में एक श्रेष्ठ साधना सृजित की गई है, जो कि मूलतः भद्रकाली पर आधारित है। यह विशिष्ट साधना मात्र धन की ही साधना नहीं है वरन् त्रिगुणात्मक प्रभावों को प्रदान करने में समर्थ साधना है। इस साधना को साधक किसी भी सिद्ध पर्व पर सुबह छः बजे से सात बजे के मध्य सम्पन्न कर सकते हैं। इस साधना हेतु साधक को चाहिए, कि वह स्नान आदि कर पीले

वस्त्र धारण करे तथा पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके स्थान ग्रहण करे। इसके पश्चात् पीले वस्त्र के टुकड़े पर निम्न प्रकार से यंत्र उत्कीर्ण करें। यंत्र का स्वरूप चित्र संख्या 1 में दर्शित किया गया है तथा अंकन के पश्चात् उस पर चित्र संख्या 2 के अनुसार क्रमशः ‘ललिता चक्र’, ‘कमला चक्र’ एवं ‘बगला चक्र’ स्थापित कर ‘भद्रकाली गुटिका’ को भी स्थापित करें -



तदुपरान्त सभी चक्रों का पूजन कुंकूम तथा अक्षत से कर भद्रकाली गुटिका का पूजन सिन्दूर से करें तथा ‘श्वेताभ माला’ से निम्न मंत्र की मात्र एक माला मंत्र जप सम्पन्न करें। मंत्र जप के काल में धी का दीपक अवश्य प्रज्वलित कर लें -

मंत्र

अनहद हृद कुल नाथ कहत सुन, तीन पताका चौथी बिंदिया, सिंदूर की जागन पूरब की दिसिया, शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरा तेरी वाचा॥

मंत्र जप के उपरान्त सभी साधना सामग्रियों को तथा जिस कपड़े पर यंत्र अंकित किया है, नदी में पवित्रता पूर्वक विसर्जित कर दें। निश्चित धन प्राप्ति के प्रवाह की इस साधना में विघ्न विनाशक तत्त्वों का भी समावेश है।

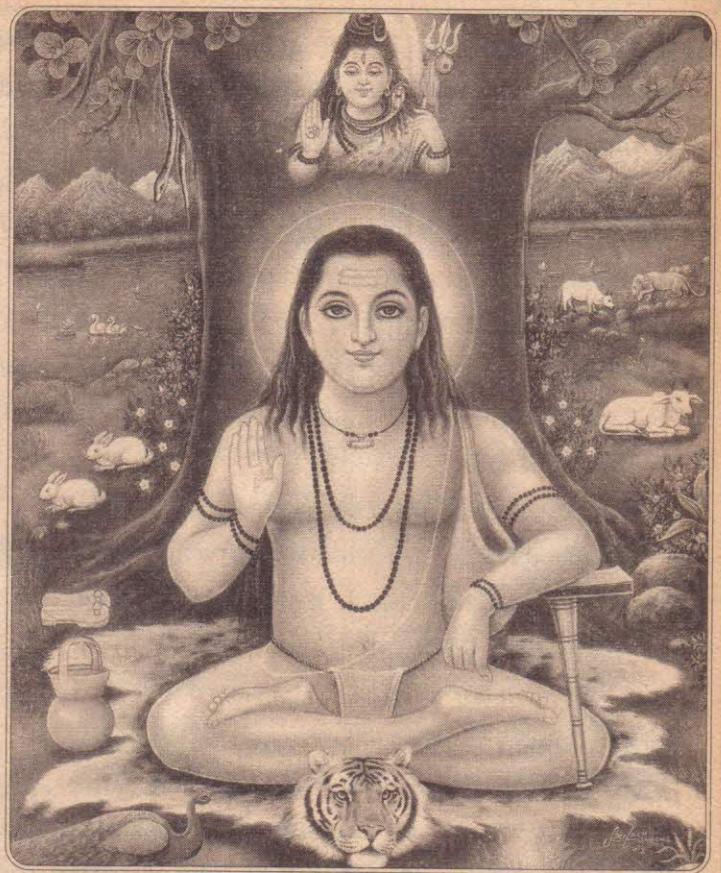
न्यौछावर - 350/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सर्वकार्य सिद्धि हेतु

हो सकता है, कि आपके अनेक प्रयत्न करने पर भी आपको किसी कार्य में सफलता नहीं मिल रही हो और प्रत्येक बार लक्ष्य के समीप जा कर भी आप पुनः उसी स्थान पर आ जाते हैं, जहां से आपने कार्य आरम्भ किया था। यह अनुभव एक बार का नहीं है, अपितु जीवन में ऐसी अनेक परिस्थितियां आती हैं, जब हमें एक सामान्य से कार्य को भी सम्पन्न करना अति दुष्कर प्रतीत होता है, अने प्रतिकूल सियतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी अपने कार्यों को सम्पन्न करिये इस साबर प्रयोग से।

सफेद वस्त्र पर काजल से एक मानवाकृति बना कर उसके मध्य में ‘सर्व कार्य सिद्धि गुटिका’ तथा उसके सिर पर, दोनों



हाथों पर व दोनों पैरों पर एक-एक ‘हमजाद’ स्थापित करें। गुटिका तथा प्रत्येक हमजाद का पूजन कर धूप लगायें तथा निम्न मंत्र का 25 बार उच्चाकरण करें -

मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु कूं, सात समुद्र बिच किल्ला, सल्मान पैगम्बर बैठा तख्त, सुलमान पैगम्बर को चारि मुवक्किल - तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया। एक मुवक्किल पूरब गया, लाया देव-दानव को बांध। दूसरा मुवक्किल पश्चिम गया, लाया भूत-प्रेत बांध। तीसरा मुवक्किल उत्तर को गया, उत्तपितृ को बांधि लाया। चौथा मुवक्किल दस्तिन को गया, डाकिनी-शाकिनी को बाथ लाया। चार मुवक्किल चहुं दिशि ध्यावै, छत-छिद्र कछु रहे न पावै। शब्द सांचा, पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

यह प्रयोग तीन दिन तक करें। प्रयोग होने पर सभी सामग्रियों को शमशान में फेंक दें तथा घर आकर स्नान कर कार्य आरम्भ कर दें।

न्यौछावर - 280/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शत्रुओं के दमन हेतु

जब व्यक्ति उच्चता की ओर अग्रसर होता है, तो निश्चय ही उसके अनेक विरोधी उत्पन्न हो जाते हैं, जो व्यक्तित्व पर दाग लगाने और हानि पहुंचाने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के विषय में बहुत अधिक सावधान रहना पड़ता है और यदि समय रहते उनका दमन नहीं किया जाय, तो उस व्यक्ति के सामने अनेक विपरीत परिस्थितियां खड़ी हो जाती हैं अतः उन्नति के मार्ग को निष्कण्टक बनाने के लिए यह आवश्यक है, कि जीवन में आने वाले सभी शत्रुओं से रक्षा हो वे कभी भी अपना सिर न उठा सकें।

काले रंग के वस्त्र पर कुंकुम से त्रिभुज बना कर उसके तीनों सिरों पर एक-एक 'शूत्र दमन गुटिका' स्थापित कर गुटिका का पूजन करें। फिर 'काली हकीक माला' से निम्न मंत्र का पांच दिन तक नित्य 5 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

हनुमान पहलवान, बारह बरस का जवान। मुख
में बीरा, हाथ में कमान। लोहे की लाठ, वज्र का

सत्युग के अन्त में एवं त्रैता युग से पहले राजस्थान प्रान्त के अजमैर डिलान्तर्गत 'पुष्कर' नामक वर्तमान तीर्थस्थल पर सभी देवताओं द्वारा मिलकर विश्व कल्याण की आवाना से एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया।

यहाँ वैदी पर आहुति देने के लिए प्रधान यजमान (यज्ञस्वामी) के रूप में ‘अगवान ब्रह्मा’ की सप्तनीक निभन्त्रित किया गया। ब्रह्मा की पत्नी ‘सावित्री’ उत्सुकता से श्रृंगार प्रसाधन में व्यस्त ही वर्झ और ब्रह्मा की यह कह कर रवाना कर दिया, कि आप चलकर पहुंचिए, तब तक मैं श्री रवाना हूँ रही हूँ।

ब्रह्मा तो समय पर पहुंच गये, किन्तु उनकी पत्नी के नहीं पहुंचने से सभी व्रष्टियाँ तथा देवताओं की मुहूर्त निकल जाने की चिन्ता होते लगी, अतः सभी ने निर्णय लिया, कि यदि 'वायत्री' की ब्रह्मा पत्नी के रूप में वरण कर लें, तो यज्ञ का प्रारम्भ निश्चित समय पर शुभ मुहूर्त में होना सम्भव है। एवं ऐसा ही सर्वसम्मति से किया गया।

यज्ञारम्भ के कुछ समय पश्चात् ही सावित्री देवी वहां आई तथा अपने स्थान पर ब्रह्मा की पत्नी के रूप में गायत्री की बैठे हुए देवकर आग बबूला ही वर्षा तथा उपस्थित सभी देवों व ऋषियों की श्राप दे दिया, कि तुम सभी डड़-रूप ही जाओ तथा तुम्हारे मंत्र भी कीलित ही जायें। इस श्राप से वहां उपस्थित सभी लोक अद्यभीत ही वर्षा, तब ऋषियों ने प्रार्थना की - माता सावित्री! आप का विलम्ब करना शुभ मुहूर्त की खींच देना था, इसलिए उन कल्याण की आवना से तथा सर्वसम्मति से ही यह कार्य किया गया है, अतः सभी गिर्देष हैं, कृपया आप अपना श्राप वापिस ले लें।

क्रीष्ण शांत ही जाने पर सावित्री ने कहा - डड़ रूप प्रतीक की आई कोई यदि सेवा - अर्चना करेगा, तो वह आप की ही सेवा - अर्चना मानी जायेगी। तभी से दुक्षिण में देवताओं का निवास होने की धारण की बल भिला।

सौंबरी त्रहषि ने एक बार अमवाय शिव से प्रार्थना की - “हे प्रभु! वैदों के मंत्र कीलित है तथा इनका अनेक बार उच्चारण करनै पर कोई कल नहीं मिलता और किसी नये मंत्र का प्रादुर्भाव भी नहीं हुआ, अतः जग कल्याण के लिए कुछ कीजिये।”

तब अगवान शिव ने प्रसङ्ग हीकर तिन मंत्रों की रचना की, उन्हें सीबरी त्रैषि द्वारा प्रचारित करवाया गया, इसलिए वे मंत्र 'साबर' मंत्रों के नाम से प्रसिद्ध हुए।

कीता। जहं बैठे, तंह हनुमान हठीता। बाल रे, बाल
राख्यो। सीस रे, सीस राख्यो। आगे जोगिनी राख्यो।
पाछे नरसिंह राख्यो। जो कोई छत करे, कपट
करे, तिनकी बुद्धि-मति बांधो। दोहाई हनुमान वीर
की। शब्द सांचा, पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो
वाचा॥

पांच दिन पश्चात् उसी वस्त्र में नमक की पांच डली रख कर माला और गुटिका के साथ बांध दें तथा उसे नदी के किनारे गढ़ा खोद कर दबा दें।

न्यौछावर - 260/-

स्वर्विधि संक्षा के लिए

समय का कुछ पता नहीं होता, कब और किस क्षण क्या हो जाय, कुछ कहा नहीं जा सकता। आज के समाज में, जब चारों तरफ लूटमार मची हुई है, चोरियां, हत्याएं और दुर्घटनाएं

स्थिति में भी अब आप निश्चिन्त हो सकते हैं इस प्रयोग को श्रव्धा पूर्वक सम्पन्न करके -

स्नान कर पूर्व की ओर मुंह करके खड़े हो जायें तथा अपने बायें हाथ में 'साबर रक्षा गुटिका' तथा दाहिने हाथ में आटे का दीपक ले लें। फिर गुटिका को देखते हुए निम्न मंत्र का 75 बार जप करें -

मंत्र

हनुमन्ता-गुणवन्ता, कुडली कपाट से कमान/
दैरे आलगट पागलट बांध। कन्नेरी का घाट। जल
बांध, थल बांध, फिरती केकण्ड बांध, आज्या बीर
बांध। बावन कुट्या बांध, बावन मेसका बांध। कौन
बांधी, हनुमन्त बीर बांधी। न बांधी, तो गुरु उस्ताद
हनुमन्ता की आन। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति।
चलो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

प्रयोग समाप्ति के बाद गुटिका और दीपक को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौषावर - 90/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मानसिक शान्ति हेतु

साधना के क्षेत्र में उन्नति के इच्छुक साधकों के लिए यह आवश्यक है, कि वे प्रत्येक स्थिति में संतुलन बनाये रखें। शक्ति साधना के क्षेत्र में सक्रिय साधकों के लिए तो परम आवश्यक होता है, कि वे अपने क्रोध पर विजय प्राप्त कर सकें। प्रस्तुत प्रयोग इसी श्रेणी का मूलतः एक आध्यात्मिक प्रकृति का प्रयोग है, किन्तु इसका लाभ दैनिक जीवन में भी अनुभव किया जा सकता है।

किसी विशेष कारणवश सदैव तनावग्रस्त रहने वाले साधकों के लिए यह वरदान स्वरूप ही है। इस प्रयोग के फलस्वरूप साधक को अपनी अनेक समस्याओं के हल भी प्राप्त होते देखे गए हैं। वस्तुतः जो जितनी प्रबलता और जितने सघन विश्वास के साथ साधना में संयुक्त होता है, वही साधक एक ही साधना से विविध फल भी प्राप्त कर लेता है। यही साधना का रहस्य है।

किसी चमत्कार की आशा न रखने वाले किन्तु साधना में विश्वास रखने वाले श्रेष्ठ साधकों के जीवन में यह प्रयोग नवीनता लाएगा ही, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। साधक इस प्रयोग को नवरात्रि के अतिरिक्त किसी सोमवार को भी सम्पन्न कर सकते हैं। इसके लिए साधक के पास साबर मंत्रों से सिद्ध ऐसा शिवलिंग होना आवश्यक है, जो योनि मण्डल (या

सामान्य बोलचाल की भाषा में अर्थे) से युक्त हो। यदि साधक इस प्रकार के 'सिद्ध शिवलिंग' को प्राप्त कर सकें, तो अत्युत्तम माना गया है। इसके अतिरिक्त 'दो तांत्रोक्त फल' इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री हैं। साधक श्वेत वस्त्र तथा आसन का प्रयोग करें व दिशा उत्तर हो। शिवलिंग को किसी ताम्रपात्र में स्थापित कर दोनों तांत्रोक्त फल उसके दोनों ओर स्थापित करें। इसके उपरान्त सभी का पूजन केवल कुंकुम एवं अक्षत से करें तथा धी का दीपक जला कर निम्न मंत्र का 51 बार जप करें -

मंत्र

छतरी का बाजा बजे, टिन्क की भाँज चढ़े, भैरव का बल बढ़े, गोरख की बात रहे, हलर हलर लहर लहर टिन्क क टिन्क झिमक झिमक, चार के चार गोड दुई के माथे पड़े, सबद सांचा पिण्ड कांचा फुरों मंत्र ईश्वरो तेरी वाचा॥

प्रयोग समाप्ति पर शिवलिंग व तांत्रोक्त फल नदी में विसर्जित कर दें। साधक यदि एक बार इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो भविष्य में अनेक तनावों से बचता हुआ परमशान्ति प्राप्त करता है।

न्यौषावर - 240/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

पूज्यपाद गुरुदेव की कृपा से स्पष्ट हो सके एक लुम ज्ञान के पुनर्प्रकाशन हेतु असमीम आनन्द की अनुभूति हो रही है। वस्तुतः ज्ञान का प्रकाश, ज्ञान का पुर्नजीवन आदि क्रियाएं होती तो उसी एक चैतन्य सत्ता से है, केवल युग के साथ-साथ वही सत्ता नये-नये स्वरूपों में आती रहती है।

* * * * *

यावत्स्वस्थ मिदं कलेवरण्हं यावच्च दूरे जरा,
यावच्चेन्द्रिय शक्तियः प्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः।
आत्मश्रेयसि तावदेव विद्वा कार्यः प्रयत्नो महान्,
प्रोद्धीसे भवने च कूपखनने प्रत्युद्यमः कीदशः॥

जब तक शरीर स्वस्थ रोग रहित है, जब तक बुद्धिमान दूर है, जब तक सभी इन्द्रियों की शक्ति पूर्ण है, जब तक प्राण शक्ति क्षीण नहीं हुई है, तब तक बुद्धिमान को चाहिए कि वह आत्म कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्न करता रहे, अन्यथा घर में आग लग जाने का कुंआ खोदने से क्या लाभ?

* * * * *

गुरुवाची

- ☆ शिष्य ऐसा हो, जो कफन बांध कर निकले, जो समाज की परवाह नहीं करे, जो चुनौतियों को झेल सके, जिसकी आंखों में तेवर हों... अग्रिन स्फुलिंग हो, जिसके हाथों में वज्र ली तरह प्रहार करने की क्षमता हो, और जो सही अर्थों में गुरु चरणों में समर्पित होने की भावना रखता हो।
- ☆ समर्पण हाथ जोड़ने से नहीं हो सकता और न ही गुरु की आरती उतारने से हो सकता है। समर्पण का तात्पर्य है, कि गुरु जो आङ्गा दे, उसका बिना नानुच किए पालन किया जाए।
- ☆ जो भी बने अद्वितीय बनें, सामान्य जीवन जीना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। सामान्य जीवन जीकर तुम अपना नाम तो डुबोते ही हो, मेरा नाम भी डुबोते हो। कोई देवता या भगवान पैदा नहीं होते, बनते हैं। जन्म आपके हाथ में नहीं था, लेकिन अगर जन्म लेकर आपको गुरु मिल जाए, तो फिर आप अद्वितीय बन सकते हैं राम बन सकते हैं, कृष्ण बन सकते हैं।
- ☆ इस ढंग से कोई हीरे नहीं लुटाता, जिस ढंग से मैं ज्ञान आप पर लुटा रहा हूँ, यह आपका सौभाग्य है, कि मैं आपको उस जगह तक ले जाना चाहता हूँ कि पूरे विश्व में आप विजयी हो, आप सफलता युक्त बन सकें और मैं अपने शब्दों पर ढूढ़ हूँ और मैं आपको अद्वितीय बना रहा हूँ।
- ☆ शिष्य जितना गुरु से एकाकार होता है उतना ही गुरु उसको आगे धकेलता रहता है। शिष्य पर निर्भर है कि वह अपने आप को पूर्ण समर्पित करता है या अधूरा समर्पित करता है।



- ☆ समुद्र खुद आगे चलकर गंगोत्री के पास नहीं जाएगा, कि गंगा तुम आओ मुझे मिल लो, गंगोत्री से गंगा खुद उतर कर समुद्र तक जाएगी। उस गंगा को जाना है समुद्र तक, यदि गंगा नहीं जाएगी, बीच में सूख जाएगी तब भी समुद्र अपनी जगह को नहीं छोड़ेगा। समर्पण तो शिष्य को ही करना पड़ेगा।
- ☆ जुदाई तो अपने आप में एक तपस्या है, किसी का इंतजार है, अपने आप में पूर्ण साधना है। किसी को याद करना, किसी के चिंतन में डूबे रहना, अपने आप में ईश्वर की साधना है।
- ☆ अगर भगवान को साक्षात् देखना है, उस प्रभु के सामने, समक्ष नृत्य करना है, उस प्रभु को अपनी आंखों में बसा लेने की क्रिया करनी है, तो स्त्री हृदय ही धारण कर ही देखा जा सकता है। स्त्री का अर्थ है, जिसका हृदय पक्ष जाग्रत हो, क्योंकि हृदय पक्ष को जाग्रत करने की क्रिया प्रेम है।
- ☆ प्रेम का तात्पर्य है ईश्वर, और जब तक प्रेम के रस में भीगोगे नहीं, ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती, गुरुदेव से साक्षात्कार नहीं हो सकता... और यह अंदर उतर कर प्रभु से साक्षात्कार करने की क्रिया ही तो प्रेम है।

शिव्य धर्म

क्या आप ऐसे शिव्य हैं?

शिव्य द्वारा अपने हृदय में गुरु को धारण करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु यह तो प्रारम्भ मात्र है, जैसा कि एक बार पूज्य गुरुदेव ने कहा था-

“यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि गुरु को कितने शिव्य याद करते हैं? यह भी उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि ‘गुरु’ शब्द को कितने शिव्यों ने अपने हृदय पटल पर अंकित किया है? यह भी उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि कितने शिव्य गुरु सेवा करने की कामना अपने दिल में रखते हैं? यह भी उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि कितने शिव्य गुरु की प्रसन्नता हेतु सचेष्ट हैं?”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु कितने शिव्यों को याद करता है।”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु के होठों पर कितने शिव्यों का नाम आता है।”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि कितने शिव्यों के नाम गुरु के हृदय पटल पर खुदे हुए हैं।”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु ने किस शिव्य की सेवा स्वीकार की है।”

“-अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु किस शिव्य पर प्रसन्न हुआ है।”

और गुरु के होठों पर शिव्य का नाम उच्चरित हो, गुरु के हृदय पटल पर शिव्य का नाम अंकित हो, गुरु सेवा का अवसर प्राप्त हो तथा शिव्य के कार्यों से गुरु प्रसन्न हों, यह शिव्य जीवन का परम सौभाग्य है तथा प्रत्येक शिव्य की यही प्राथमिक इच्छा होती है। जिस शिव्य को ऐसा दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त होता है, वह देव तुल्य हो जाता है, उसके जीवन से सभी पाप, दुःख, पीड़ा, समस्याएं आदि दूर हो जाती हैं, अणिमादि सिद्धियां उसके सामने नृत्य करती हैं, उसका व्यक्तित्व करोड़ों सूर्य से भी ज्यादा तेजस्वी हो जाता है। गुरु सेवा कोई आवश्यक नहीं है, कि शारीरिक रूप से गुरु गृह में रह कर ही सम्पन्न की जाय, अपितु महत्वपूर्ण गुरु सेवा यह है, कि शिव्य कितना अधिक गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान के द्वारा लोगों को लाभान्वित करता है तथा कितने अधिक लोगों को गुरु से जोड़ने का कार्य करता है, निःस्वार्थ, निष्कपट भाव से।

जीवन में आकर्षण है तो सब कुछ है,

जीवन में सम्मोहन है तो सब कुछ है,

जीवन में सौन्दर्य है तो सब कुछ है,

जीवन में रस है तो सब कुछ है,

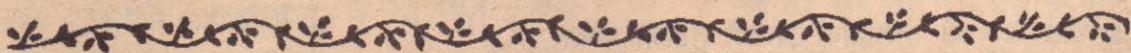


इसीलिये महत्व है इस विशेष विद्या का, जिसे कहा गया है

मार्गदर्शिका महाविद्या

जिसे सिद्ध करने से उपरोक्त गुण अपने आप आ जाते हैं

समुद्र मंथन के समय जब देवताओं और असुरों ने अमृत निकाला तो सब में उस बात का संघर्ष होने लगा कि यह अमृत पान किसको प्राप्त होना चाहिये। तब भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर उस प्रकार की लीला की कि वह अमृत देवताओं को ही सुलभ हो सका। भगवान श्रीकृष्ण ने भी मोहिनी विद्या सिद्ध कर जब अपनी मोहिनी मुरली की तान छेड़ते थे तो द्वज की सारी गोपियां आकर्षण बद्ध होकर रास बृत्य के लिये अपने आप चली आती थी। मोहिनी ऐसी ही आकर्षण युक्त सुरुपा देवी है जो मनुष्य को सब कुछ प्रदान कर देती है। उसमें रस, सौन्दर्य, रूप की अमृत वर्षा कर देती है। ऐसी मोहिनी साधना स्त्री-पुरुष, बाल-युवा सभी सम्पन्न करें, तो जीवन धन्य-धन्य हो उठता है।



हम अपने इतिहास पर दृष्टिपात करें, तो हमारे समक्ष उनके समय की साहित्यिक कृतियों से मिलता है। अनेक ऐसे रहस्योदयाटन होते हैं, जिनके विषय में वर्तमान वैज्ञानिक शोधरत हैं या सफलता को किसी हद तक प्राप्त कर चुके हैं, फिर भी उन सोपानों को प्राप्त नहीं कर सके हैं जिसे क्रष्णियों ने आज से हजारों वर्ष पूर्व प्राप्त कर लिया था।

यदि हम पूर्वकाल से वर्तमान की तुलना करें, तो हम आज भी अत्याधुनिक सुविधाओं के होते हुए भी वैज्ञानिक रूप से अत्यन्त पिछड़े हुए हैं और ऐसा ही उदाहरण प्राप्त होता है सौन्दर्य के क्षेत्र में। सौन्दर्यवान होना तो ईश्वर की ओर से होते हुए भी अद्वितीय सौन्दर्यवान दिखना बिल्कुल ही अलग बात है। हमारे पूर्वज कितने सौन्दर्य प्रेमी थे इसका उदाहरण

आज भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां पर कुछ ऐसे रहस्यमय तथ्य हैं जो अत्यन्त विस्मयकारी हैं।

मेरा सरकारी पद ही कुछ ऐसा है, जिसके कारण मुझे सदा आदिवासी या सूदूर क्षेत्रों में ही जाना पड़ता है। मेरा स्थानान्तरण

हिमाचल के एक सुदूर गांव में हुआ, वहां पर बस या अन्य किसी वाहनादि की व्यवस्था नहीं थी। वहां से कई किलोमीटर दूर पैदल चलकर आने पर ही आवश्यक समान उपलब्ध हो पाता था, मेरे पास स्वयं का वाहन होने के कारण मुझे कभी मेरी नियुक्ति हुई वह स्थल मेरे लिए एक प्रकार से आश्चर्यजनक बन गया, क्योंकि वहां की प्रकृति में सौन्दर्य बिखरा पड़ा था,

प्रत्येक स्त्री का रंग गोरा तो नहीं था, पर ऐसा जैसे स्वर्ण की व्यक्ति सामान्य नहीं दिख रहा था। उस स्थान को यदि मैं कान्तिमय किरणों से वातावरण प्रकाशित हो रहा हो... किसी सौन्दर्य लोक की उपमा दे दूँ, तो व्यर्थ न होगा।

लावण्यता लिए हुए चेहरा, नेत्रों की चपलता ऐसी कि प्रकृति भी अधीर हो उठे, उनकी देह से निःस्मृत सुगन्ध ने वहां के सुडौलता सम्भव ही नहीं थी, प्रत्येक व्यक्ति श्यामवर्ण तथा वातावरण को और भी अधिक मादक बना दिया था। अद्वितीय थोड़ी सी स्थूलता लिए हुए ही होने चाहिए था।

तथा अत्यन्त आकर्षण व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं वे सभी। यूँ कहूँ, कि वहां की प्रत्येक स्त्री सौन्दर्य के मापदण्ड पर पूर्ण थी।

मेरे लिए यह आश्चर्य ही था, एक भी साधारण स्त्री नहीं दिख रही थी सभी देवतुल्य अप्सरा की भाँति बन में इधर-उधर विचरण करती दिख रही थीं। वहां के पुरुषों में भी पूर्ण रूप से पौरुषत्व था - दृढ़ स्कन्ध... लम्बी भुजाएं... नेत्रों में प्रेम का सागर, तो वहां अवसर पड़ने पर क्रोध ज्वाला भी

दिखाई पड़ती थी। मैंने सौन्दर्य तो देखा था, पर ऐसा नहीं, कि पूरा का पूरा गांव ही अद्वितीय सौन्दर्य से युक्त हो। एक भी

प्रमुख बात तो यह थी, कि वहां की जलवायु के अनुसार सुडौलता सम्भव ही नहीं थी, प्रत्येक व्यक्ति श्यामवर्ण तथा थोड़ी सी स्थूलता लिए हुए ही होने चाहिए था।

उस गांव के ही एक पुरोहित परिवार से मेरी घनिष्ठता स्थापित हो गई थी। धर्मिक प्रवृत्ति का होने के कारण मेरे घर में किसी न किसी प्रकार का पूजन होता ही रहता था। वे पुरोहित अक्सर घर पर आते ही रहते थे। इसके साथ ही वे तंत्र के विशेष जानकार भी थे, मेरी भी रुचि तंत्र में थी। इस कारण कभी-कभी साथ बैठकर उनसे तंत्र से सम्बन्धित विषयों पर चर्चा हो ही जाती थी।

एक दिन उनसे तंत्र के माध्यम से सौन्दर्य प्राप्ति के विषय

पर चर्चा छिड़ गई, मेरे ज्ञान के अनुसार तंत्र के माध्यम से सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता था, पर पूर्णतः कायाकल्प होना सम्भव नहीं था। उनका मत था, कि कैसे भी स्त्री या पुरुष हो, वह तंत्र के माध्यम से पूर्णरूप से कायाकल्प कर सकता है। मैं उनसे सहमत नहीं था, इस पर उन्होंने स्वयं ही कहा - आप क्या समझते हैं, कि किसी गांव में प्रत्येक स्त्री तथा पुरुष सौन्दर्यवान हो सकता है, जिसे सौन्दर्य की पराकाष्ठा कहा जा सकता है, क्या वह हमारे गांव में विद्यमान नहीं है?

वास्तव में यह सत्य था, कि उस गांव में किसी भी स्त्री या पुरुष को सौन्दर्य की दृष्टि से न्यून नहीं कहा जा सकता था। उन्होंने स्पष्ट किया, कि इस प्रकार सौन्दर्य की प्राप्ति तंत्र के माध्यम से ही सम्भव हो सकी है।

जब मैंने उनसे इसके रहस्य को जानने की इच्छा व्यक्त की, तो उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया, कि यह हमारे गांव की अमूल्य तथा गोपनीय धरोहर है, जिसे हम

मौहिनी जी पत्थर की श्री मौहित करने में समर्थ है, जी अनिन्द्य सुन्दरी है,
नन्द से शिन्द सर्वनात दिप-दिप करती है,
जिसके शरीर से निन्दतर कमल नन्द प्रवाहित है,
जिसके आंखों से कमल नै खिलना सीखा है,
जिसके हौठों से अमृत का निर्मण हुआ है,
जिसकी चाल से हिरण्य नै कुलांचै भरनी सीखी है,
जिसकी कैशराशि से घटाओं नै झूमना सीखा है,
जिसके श्रींही रूपी धनुष से कामदेव नै बाण चलाना सीखा है,
जिसके वक्षस्थल से हिमालय अपनी तुलना करता है,
जिसके ललाट से इन्द्रधनुष नै श्रृंगार करना समझा है...,
ऐसी अनिन्द्य अद्वितीय सुन्दरी का निर्मण नामार्जुन नै अपनै वृद्धत्व काल में समस्त जीवन के अनुभव और ज्ञान के निचीड़ से 'मौहिनी प्रयीन' निर्मित किया और कुरुप, बैठब, बदरंब और बैडील स्त्री पर मौहिनी प्रयीन आजमा कर बता दिया, कि यह 'मौहिनी प्रयीन' विश्व का श्रेष्ठ प्रयीन है, जी अपनै आप मैं हीरक खण्ड है और नामार्जुन की यह श्रेष्ठ विश्व की समस्त स्त्रियों के लिए वरदान स्वरूप है, जी स्त्रियों के लिए तौ है ही पुरुषों के लिए श्री पूर्ण पौरुषत्व और कामदेव बनने के लिए अपूर्व सींगात हैं, विश्व की एक दुर्लभ अनुठी गोपनीय साधना...

आपको नहीं बता सकते। अतः मैंने उनसे उनका शिष्यत्व स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की, तो उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया। तंत्र के क्षेत्र में गुरु कृपा से ही पूर्णता प्राप्त की जा सकती है, मेरे समक्ष यह स्थिति स्पष्ट नहीं हो रही थी, जिससे मैं इस साधना विशेष को प्राप्त कर सकूँ।

कुछ समय पश्चात् वहां के मुखिया, जिन्हें उस गांव के लोग देवता के समान पूजते थे, उनका स्वास्थ्य गिरने लगा, जड़ी-बूटियों से उनको स्वास्थ्य लाभ बहुत कम ही हो पा रहा था और उनकी शीघ्र ही किसी विशेष उपचार की आवश्यकता थी।

जब मुझे मुखिया की स्थिति जात हुई, तो मैंने उन्हें अपने एक डॉक्टर मित्र को दिखाया, जिसके उपचार से उनका स्वास्थ्य दो दिनों में ही ठीक होने लग गया, उसके उपरान्त उन्हें वहां के बैद्यों ने ठीक कर दिया, ऐसी स्थिति में जब उनके देवता सदृश मुखिया ठीक हुए, तो पुरोहित ने मुझे अपने पास बुलवाया और कहा - आपके इस कार्य से मेरा पूरा गांव ही आप का क्रृणी हो गया है अतः आपको उपहार स्वरूप यह अद्वितीय साधना देना चाहता हूँ, जिसे आपने कुछ समय पूर्व जानने की इच्छा व्यक्त की थी।

और इसके पश्चात् पुरोहित ने मुझे उस अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्ति प्रयोग के विषय में बताया।

पुरोहित ने उस सौन्दर्य प्राप्ति प्रयोग का नाम 'मोहनी प्रयोग' बताया और कहा, कि इस प्रयोग के माध्यम से ही नागार्जुन ने अपनी प्रेमिका कमलगन्धा को विश्व की अनिन्द्य सुन्दरियों में से एक बना दिया था। यद्यपि उसकी प्रेमिका सामान्यतः सुन्दर थी, पर नागार्जुन ने उसे जिस मोहनी प्रयोग के द्वारा अद्वितीय सुन्दरी बना दिया, उसी प्रयोग को हम सम्पन्न करते हैं।

उसने बताया, कि ऐसा नहीं है, कि यहां पर उत्पन्न होने वाले सभी बच्चे सुन्दर ही होते हैं, पर साधारण नैन-नक्ष वाले स्त्री-पुरुष भी उस प्रयोग को सम्पन्न कर अद्वितीय सुन्दर बन जाते हैं। इस प्रयोग की महत्वपूर्ण विशेषता यह है, कि साधक जब इसे सम्पन्न कर लेता है, तो उसे निराश, उदासी बैचेनी नहीं घेरती, वह सदैव प्रसन्न, आत्मविश्वास से युक्त तथा उत्साही बना रहता है।

फिर इसके बाद उन्होंने मुझे वह पूर्ण विधि बताई तथा स्वयं मुझे वह प्रयोग विधि सम्पन्न करवाई, उसी विधि को मैं साधकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ -

प्रयोग विधि

- इस साधना में आवश्यक सामग्री है - 'मोहनी यंत्र', 'रतिराज गुटिका' तथा 'मोहनी माला'। यह साधना आप 'मोहनी एकादशी' (20.05.05) को सम्पन्न कर सकते हैं या फिर किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को भी सम्पन्न कर सकते हैं। यह साधना एक दिवसीय है, इसे आप रात्रिकाल में ही सम्पन्न करें।
- साधक सफेद वस्त्र धारण करें तथा साधिका गुलाबी वस्त्र धारण कर तथा पूर्ण सुसज्जित होकर, यह साधना आरम्भ करें।
- लकड़ी के बाजोट पर गुलाबी रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर 'मोहनी यंत्र' को गुलाब के पुष्प का आसन बनाकर स्थापित करें एवं अपने चारों ओर इत्र छिड़क लें।
- 'रतिराज गुटिका' को भी यंत्र के एक ओर स्थापित कर दें तथा गुटिका तथा यंत्र का पूजन केशर, पुष्प, अक्षत, धूप व दीप से करें।
- गुरु पूजन एवं गुरु ध्यान करने के उपरान्त भगवान कामदेव का स्मरण करें तथा सौन्दर्य प्रदान करने की प्रार्थना करें -

**सौन्दर्य देहि कामेश! मोद मांगल्य संयुतं।
सर्व काम्यं सदाभाव्यं विश्ववन्द्यं रतिप्रियम्॥**

- इसके पश्चात् निम्न मंत्र का 51 माला जप करें -

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं रति सौन्दर्यार्च फट् ॥

जप के पश्चात् गुटिका तथा यंत्र को जल में विसर्जित कर दें।

माला को 51 दिन तक पहने रखें तथा नित्य एक माला जप करें।

अतः विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजों। कार्ड मिलने पर 490/- की ती.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

गृहस्थ परमां वालिः

पौराणिक गाथा का एक उज्जवल पृष्ठः

महर्षि याज्ञवल्क्य श्रेष्ठ तत्वदर्शक हैं, परन्तु उनका मन गृहस्थ से ऊब गया है। वे गृहस्थ में रहना नहीं चाहते, उनका चिन्तन ऊर्ध्वमुखी होता जा रहा है।

ऋषि की दो पत्नियां थीं - मैत्रेयी और कात्यायनी।

ऋषि ने मैत्रेयी से कहा - “मैं जीवन का शेष भाग परम ज्योति के दर्शन हेतु लगाना चाहता हूं इसलिये मैं ऊर्ध्वमुखी होकर साधना सम्पन्न करने की इच्छा रखता हूं। मैं आज ही तेरा कात्यायनी के साथ बंटवारा कर देना चाहता हूं, मेरे इस आश्रम में जो भी धन-सम्पदा है उसके दो भाग कर देता हूं, एक भाग तेरा और दूसरा कात्यायनी का।”

क्या इस धन से मैं अमर हो सकती हूं? मैत्रेयी ने पूछा।

इस आश्रम की सम्पदा से तो क्या, यदि पृथ्वी की सम्पूर्ण सम्पदा भी प्राप्त हो जाय तब भी उससे अमर नहीं हो सकती, इससे परम पद या ब्रह्म ज्योति के दर्शन प्राप्त करना सम्भव नहीं है - याज्ञवल्क्य का स्पष्ट उत्तर था।

तब उस सम्पदा को लेकर मैं क्या करूँगी? यह धन दौलत पुत्र, बान्धव, आश्रम आदि मेरे क्या काम के, जिससे कि मेरा कल्याण न हो सकें यह सारी सम्पदा मेरे जीवन में क्या काम की, यदि मैं स्वयं का कल्याण न कर सकूं और जीवन को ऊर्ध्वमुखी न बना सकूं, यदि आप मुझे भाग देना ही चाहते हैं तो मुझे ऊर्ध्वमुखी होने की प्रक्रिया समझाइये, उस परम ज्योति के दर्शन करने की विधि बताइये, जिससे कि मैं अमर हो सकूं, वही मेरा सच्चा भाग होगा - मैत्रेयी ने निश्चयपूर्वक याज्ञवल्क्य से निवेदन किया।

क्षौणी पतित्व मथ वैकम किंचन्तवं, नित्यं ददासि बहुमान मथापमानम्।

वैकुण्ठवास मथवा नरके निवासं, गुरुदेव देव! ममनास्ति गतिस्त्वदन्या॥

गुरुदेव! आप मुझे पृथ्वीपति बना दीजिये, वाहे परम दरिद्र। नित्य सम्मान कीजिये, अथवा अपमान। वैकुण्ठ में वास दीजिये वाहे नरक में रखिये, परन्तु हे गुरुदेव! आपसे भिन्न मेरी तो और कोई गति नहीं है॥

पर उस पथ का ज्ञान तो गुरु ही दे सकता है, मैं तेरा पति हूं परन्तु जब तक तुझ में शिष्यत्व भाव जागृत नहीं होगा तब तक मैं वह ज्ञान नहीं दे सकूंगा, ज्ञान के लिये शिष्यत्व प्राप्त करना जरूरी है, इसके लिये आवश्यक है कि तुम पूर्ण समर्पण भाव से गुरु की बन सको। अभी तक तो तुम मेरी पत्नी थी, शिष्या नहीं, पत्नी का भाग दिया जा सकता है, अमरत्व ज्ञान तो शिष्या बनने पर ही सम्भव है - याज्ञवल्क्य ने स्पष्ट व्याख्या की।

तब मैत्रेयी ने शिष्यत्व स्वीकार किया और याज्ञवल्क्य को पति के स्थान पर गुरु के रूप में देखा, और उनसे ब्रह्म विद्या का उपदेश प्राप्त किया। याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मज्ञान का गूढ़ रहस्य खोलकर उसके सामने रख दिया।

कई उदाहरण देकर साधनाएं सम्पन्न करा कर गुरु याज्ञवल्क्य ने शिष्या मैत्रेयी को आत्म तत्व का दर्शन कराया और मैत्रेयी ने उस गूढ़तम ब्रह्म-ज्ञान का रहस्य प्राप्त कर लिया।

और इतिहास साक्षी है कि कात्यायनी हमेशा हमेशा के लिए धन सम्पदा लेकर समाप्त हो गई, जबकि मैत्रेयी ने कुछ भी भौतिक सम्पदा न लेकर युगों-युगों तक के लिये अमर हो गई।

वस्तुतः शिष्य समर्पण होता है, शिष्य मिलने की प्रक्रिया होती है, जब शिष्य पूर्णता के साथ गुरु में मिल जाता है तभी वह अमरत्व प्राप्त करने में सफल हो पाता है और यहीं जीवन की पूर्णता है, श्रेष्ठता है, दिव्यता है।

जिस उक्त ग्रन्थ ग्रह ग्रैं सूर्य वग तैज, वगला वगी शक्ति, जीवव वग चिंतव समाया हुआ है
 और जो द्वापरी द्वृपदी द्वृपदी से व्यक्ति वगी जग्नीव से उवाक्षर द्वासमाव ग्रैं बिठा देते हैं,
 जो व्यक्ति वै द्वृश्माय वगी सौशाय ग्रैं बद्ध देते हैं।
 जो व्यक्ति ग्रैं द्वृतवी शक्ति श्रृङ् देते हैं विन वह वगलयजी हो जाता है।

ऐसे प्रमुख गुणों से युक्त ग्रह है रवि पुत्र

शनि वंडा

जिनकी साधना, आराधना और अनुकूलता से व्यक्ति पूर्णतः भयमुक्त होकर अपने जीवन में उत्तरोत्तर प्रगति करता ही रहता है। शनि से उरबे की आवश्यकता नहीं है, उसे अपने अनुकूल बनाकर शनि को अपने जीवन में उतार कर तीव्रता और तेजस्विता लायें। इसी दृष्टि से प्रस्तुत है शनि के विभिन्न स्थितियों पर विवेचना करता हुआ यह आलेख-

चराचर माया ने जब सूर्य नारायण की छायासे गर्भ धारण किया, तब शनि देव उत्पन्न हुए, अतः मां माया और पिता सूर्य होने के कारण उन्हें 'सूर्य पुत्र' कहा गया।

'शनि' की उपासना करने से पूर्व उसके स्वरूप और उसकी कार्य क्षमताओं से परिचित हो जाना आवश्यक हो जाता है। सात ग्रहों सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि सात ग्रहों के बारे में आज भ्रामक धारणाओं कोई इसी पर अधिक लगाया जाता है, जबकि ऐसा है नहीं। वह तो

का कारण शनि ही है, दुःख का कारण भी शनि ही है, लड़का भाग गया, स्त्री भाग गई, सन्तान कुमारी हो गई, व्यापार में घाटा हो गया आदि सभी शनि ग्रह के ही कारण बताए जाते हैं।

शुक्र की राशि तुला में शनि जहां उच्च का होता है, वर्षीं मंगल की राशि मेष में नीच का होता है। मकर व कुम्भ स्वयं शनि की राशियां हैं। जन्मकुण्डली में शनि जिस भाव में स्थित है, उससे सातवें भाव को देखता ही है तथा साथ ही तीसरे और दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। जहां दैत्य-गुरु, शुक्र तथा बुध मित्र हैं, वर्षीं गुरु प्रबल शत्रु तथा सूर्य, चन्द्र, मंगल के साथ ही शत्रुवत व्यवहार करता है।

शनि को अंग्रेजी में Saturn (सेटर्न) कहते हैं, तो अरबी में जौहल, फारसी में केदवान व संस्कृत में असित, मन्द शनैश्चर, सूर्य पुत्र कहते हैं। इस ग्रह के बारे में आज भ्रामक धारणाओं ने मनुष्यों के दिलों में घर कर लिया है, जिस कारणवश हर कोई इस ग्रह से भयभीत तथा आशंकित दिखाई देता है।

भारतीय ज्योतिष में एक भ्रामक धारण दिनों दिन बलवती हो रही है, कि शनि सदैव अहित ही करता है, उसका प्रभाव को धारण करने से शनि बाधा दोष कम हो जाता है। अशांति सदैव अमंगलकारी, अशुभ एवं विघ्नकारी ही होता है। अशांति

शनि की राशि मकर, जो 270 से 300 अंश है, घुटनों तक प्रभाव रखती है, इसका प्राकृतिक स्वभाव उत्तरोत्तर उच्चति की ओर अग्रसर होता है, कुम्भ शनि की दूसरी राशि है, यह 300 से 330 अंश तक पैरों पर प्रभावशाली रहती है।

लोहा व शीशा शनि की विशेष धातु हैं, तथा 'नीलम-रत्न' नपुंसक लिंगी एवं तामस भाव का स्वामी है। जन्मकुण्डली में

स्थितिअनुसार आयु, मृत्यु, द्रव्य हानि, चौर्यकर्म, कारावास, मुकदमा, फांसी, शत्रुता, दुष्कर्म कार्यादि का ज्ञान शनि द्वारा ही किया जाता है।

शनि को ज्योतिष में ‘विच्छेदात्मक ग्रह’ माना गया है। जहां एक ओर शनि मृत्यु प्रधान ग्रह माना गया है, वहाँ शनि दूसरी ओर शुभ होने पर भौतिक जीवन में श्रेष्ठता भी देता है।

भारतीय समाज में कुछ कहावतें शनि को लेकर प्रचलित हैं, जैसे - व्यापार चौपट हो तो शनि का प्रभाव है, आज कल तो शनि का चक्कर है या किसी व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कह देते हैं, कि यह तो शनि की तरह मेरे पीछे पड़ गया है। दो चार ढोंगी ज्योतिषी भी ऐसे होते हैं, जो लोगों को शनि की दशा बताकर भयभीत कर देते हैं, जैसे आपके भाग्य पर शनि की कूर दृष्टि है, लाभ-स्थान पर नीच का शनि है, कर्म भाव पर शनि वक्री है, तथा शनि की साढ़े साती को सुनकर ही जातक का हृदय काप उठता है।

शनि सर्वाधिक मैलाफाइड, अकस्मात्, कुप्रभाव देने वाला ग्रह माना जाता है, अतः भय तो सहज स्वाभाविक है। यह समय-मृत्यु, अकाल मृत्यु, रोग, भिन्न-भिन्न कष्ट, व्यवसाय हानि, अपमान, धोखा, द्रेष, ईर्ष्या का कारण माना जाता है, पर वास्तविकता यह नहीं है, सूर्य पुत्र शनि हानिकारक न होकर लाभदायक भी सिद्ध होता है, क्योंकि

1. शनि तुरंत एवं निश्चित फल देता है।
2. शनि सन्तुलन तथा न्याय प्रिय है।
3. शनि शुभ होकर मनुष्य को अत्यन्त व्यवस्थित, व्यवहारिक, धोर परिश्रमी, गम्भीर एवं स्पष्ट वक्ता बना देता है।
4. संकुचित व्यक्ति, भरपूर आत्मविश्वास, प्रबल इच्छा, शक्ति युक्त, महत्वाकांक्षी, मितव्ययता पूर्ण आचरण करने वाला, हर कार्य में सावधान रहने वाला व्यक्ति ही व्यवसाय में चतुर तथा कार्यपटु होता है।
5. मनुष्य का भेद लेने में शनि प्रधान व्यक्ति दक्ष होता है।
6. शनि प्रधान व्यक्ति सामाजिक व आर्थिक क्रांति के प्रयत्नपूर्ण, त्यागमयी जीवन व्यतीत करने वाले, पूर्ण सामाजिक व मिलनसार, परोपकार के कार्यों में समय व्यतीत करने वाले, लोक-कल्याण के सतत कार्य संलग्न, विद्वान्, मंत्री, उदारमना तथा पवित्रतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।
7. अध्यात्मवाद की ओर विशेष झुकाव रहता है।

8. योगाभ्यासी, गूढ़ रहस्य का पता लगाने में दक्ष, कर्म कांड व धार्मिक शास्त्रों का अभ्यास, ग्रंथ प्रकाश, तत्वज्ञ, लेखन कार्य का यश व सम्मान पाते हैं।

शनि अशुभ होने पर स्वार्थी, धूर्त, कपटी, दुष्ट, आलसी, मंदबुद्धि, उद्योग से मुंह मोड़ने वाला, नीच कर्म लिस, अविश्वास करने वाला, ईर्ष्यालु, विचित्र मनोवृति युक्त, असंतोषी, दुराचारी, दूसरों की आलोचना करने वाला, वीभत्स बोलने वाला, अपने को श्रेष्ठ मानना पसन्द करता है, वह दम्भी, झूठा और दरिद्री होता है, ऐसा व्यक्ति व्यर्थ इधर-उधर घूमना पसन्द करता है, ऐसा व्यक्ति आजीवन विपत्तियों से घिरा रहता है।

ज्योतिषीय विवेचना के अनुसार शनि की साढ़े साती जातक के पैरों में पीड़ा पहुंचाती है, मस्तिष्क विकृत एवं सिर दर्द, धन-धान्य, सम्पत्ति का नाश, सन्तान को कष्ट, स्वयं को व्यभिचारी व कुमारी बना अपमानित करती है।

इस प्रकार शनि की साढ़े साती दशा के कारण ही मानव-मन में यह भ्रांति उत्पन्न हो गई है, कि शनि केवल हानिकारक, अमंगलकारी एवं विघटनकारी ही होता है। शनि ग्रह की शांति के लिए जब यह ग्रह प्रतिकूल फल दे रहा हो अथवा शनि की साढ़े साती इत्यादि अवधियों में व्यक्ति को ग्रह शांति हेतु मंत्र-जप अवश्य करना चाहिए।

समस्त ग्रहों में शनिदेव ही ऐसे ग्रह हैं, जो अत्यन्त क्रोधी होते हुए भी अत्यन्त दयालु कहे गए हैं। इनके विषय में कहा गया है, कि जब ये किसी पर क्रोधित होते हैं, तो उसका सर्वनाश कर डालते हैं। इसी प्रकार जब ये किसी से प्रसन्न होते हैं, तो रंक को भी राजा बना देते हैं।

जब सृष्टि की रचना आरम्भ हुई, तो सृष्टि रचना का कार्यभार ब्रह्मा ने संभाला, विष्णु ने जीवों को पालन एवं उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व लिया और भगवान् शंकर को आवश्यकता पड़ने पर सृष्टि का संहार एवं दुष्ट जनों के विनाश का कार्य सौंपा गया।

अपने भक्तों की रक्षा एवं पतियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिए शिवजी ने अपने गणों की उत्पत्ति की। सूर्य पुत्र यम एवं शनि को भी उनके गणों में सम्मिलित किया गया। शनि अत्यन्त पराक्रमी होने के साथ उद्धण भी थे; तोड़-फोड़, मार-काट एवं विनाशकारी कार्यों में इनकी आरम्भ से ही रुचि थी।

यह देखकर शिवजी ने यम को तो मृत्यु का देवता बनाया और शनि को दुष्ट जनों को उनके पापों का दण्ड देने का कार्य सौंपा। शनि भगवान् शंकर के शिष्य, सूर्य के पुत्र तथा यम के भाई हैं।

शनि सर्वदा प्रभु भक्तों को अभय दान देते हैं और उनकी हर प्रकार से रक्षा करते हैं। शनि समस्त सिद्धियों के दाता हैं। साधना, उपासना द्वारा सहज ही प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों की समस्त कामनाओं को पूरा करते हैं।

शनि सभी ग्रहों में महाशक्तिशाली और धातक हैं। कहते हैं कि सांप का काटा और शनि का मारा पानी नहीं मांगता। जब शनि का प्रभाव पड़ा, तो कृष्ण को द्वारिका में शरण लेनी पड़ी भीलों के देश में... और राम को, जिनका राज तिलक होने वाला था, सब छोड़कर नंगे पांव वन में दर-दर भटकने को विवश होना पड़ा। शनि के प्रभाव से जब अवतारी पुरुष नहीं बच सके, तो भला सामान्य लोगों का शनि के प्रकोप से बच पाना सम्भव कहां है?

ये सभी बातें एक सीमा तक सत्य हैं, परन्तु इनके आधार पर भ्रमित हो जाना विद्वता नहीं है। वस्तुतः शनि ग्रह की व्याख्या ही अधूरी है। शनि का तात्पर्य है 'जीवन की गति'।

राशिगत शनि का प्रभाव किस प्रकार से पड़ता है और किस राशि पर यह विचरण करता है, साढ़े साती इत्यादि का विवरण अलग से स्पष्ट किया जा रहा है। शनि पीड़ादायक हो सकता है, लेकिन यदि शनि अनुकूल बना लिया जाए, तो सर्वोच्चता भी प्रदान कर सकता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

ज्योतिष और शनि

साधकों और पाठकों को यह जानकारी अवश्य होनी चाहिए कि शनि की साढ़े साती का क्या तात्पर्य है और किस राशि पर यह कब विशेष प्रभाव डालती है। इसके लिए आपको किसी ज्योतिषी से सलाह लेने की आवश्यकता नहीं है, आप स्वयं विवेचन कर यह जान सकते हैं, कि किस पर साढ़े साती कब प्रारम्भ हो रही है और इसका कब तक प्रभाव है।

आपको यह तो जानकारी है, कि आपकी कौन सी राशि है, आपका जो चलित नाम है कि स्कूल, कार्यालय अथवा व्यापार में प्रयोग आता है, उस नाम से ही अपनी राशि जानें।

शनि एक राशि में ढाई वर्ष तक विचरण करता है। वर्तमान समय में शनि मिथुन राशि में विचरण कर रहा है। मिथुन राशि में शनि ने 06.04.2003 को प्रवेश किया है तथा इस राशि में



शनि 25.05.2005 तक रहेगा।

26.05.2005 से शनि कर्क राशि में विचरण करेगा और ढाई वर्ष तक रहेगा, इस प्रकार यह बारह राशियों का भ्रमण उन्नीस वर्ष में सम्पन्न करता है।

शनि का प्रभाव सबसे अधिक जिस राशि पर वह भ्रमण कर रहा है, उस राशि पर उससे एक राशि पहले और उससे एक राशि बाद पर भी यह साढ़े-साती के रूप में प्रभावकारी रहता है।

वर्तमान समय में यह मिथुन राशि विचरण कर रहा है। अतः मिथुन राशि वाले व्यक्तियों के लिए विशेष है।

चूंकि अभी यह मिथुन राशि में चल रहा है, अतः मिथुन राशि वाले व्यक्तियों के लिए शनि की साढ़े साती दिनांक 06.04.2003 से ढाई वर्ष पूर्व प्रारम्भ हो गई थी और यह साढ़े सात वर्ष तक रहेगी।

इसी प्रकार कर्क राशि वालों के लिए 06.04.2003 से साढ़े साती प्रारम्भ हो गई है, जो कि साढ़े सात वर्ष रहेगी।

वृष राशि वाले व्यक्तियों के लिए साढ़े साती 25.05.2005 को समाप्त हो जाएगी।

जब साढ़े साती प्रारम्भ होती है, तो प्रथम ढाई वर्ष में यह अत्यन्त ही शनिवारी प्रयोग है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने पर सिर पर द्वितीय ढाई वर्ष में हृदय स्थान पर और अंतिम ढाई शनि की समस्त महादशा व अन्तर्दशाएं शांत होने लग जाती वर्ष में उदर के नीचे के भाग पर पैरों तक प्रभाव डालती है। हैं, जिससे उसका कोई अहित नहीं होता।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है, कि वर्तमान समय में वृष राशि वाले व्यक्तियों के पैरों में साढ़े साती चल रही है। मिथुन हृदय पर, कर्क के मस्तक चल रही है।

इसी गणना से आप अपने परिवार के सभी सदस्यों के सम्बन्ध में जान सकते हैं, कि किसके साढ़े साती चल रही है।

यदि परिवार के किसी प्रमुख सदस्य पर साढ़े साती चल रही है, तो उसको होने वाले कष्ट का प्रभाव परिवार के दूसरे सदस्यों पर अवश्य ही पड़ता है, क्योंकि परिवार अपने आप में एक इकाई है।



शनि दुष्प्रभाव

शनि वा दुष्प्रभाव निश्चय ही भीषण होता है, और कुछ दुष्प्रभाव विशेष रूप से इस प्रकार हैं -

- * अच्छे खासे चलते हुए व्यापार में अचानक भयंकर घाटा हो जाना।
- * कर सम्बन्धी कोई गम्भीर प्रभाव आ जाना अर्थात् किसी सरकारी कर विभाग द्वारा गम्भीर जांच और उसके कारण से बड़ी परेशानी।
- * घर या व्यापार स्थल पर आग अथवा ऐसा कोई दुष्प्रभाव होना, जिससे कार्य पूरी तरह नष्ट हो जाए। प्रतिष्ठान को पूरी तरह से कलंक लग जाना।
- * परिवार के किसी प्रमुख सदस्य की आकस्मिक दुर्घटना अथवा अचानक किसी गम्भीर बीमारी का शिकार हो जाना।
- * अचानक मुकदमेबाजी हो जाना। ऐसा कोई निर्णय ले लेना, जो कि जीवन को गलत दिशा में मोड़ दें।
- * किसी मित्र अथवा नौकर द्वारा विश्वासघात।



प्रत्येक व्यक्ति, जो इस ग्रह-दोष से पीड़ित एवं दुःखी हो, उसे दिनांक 6.6.2005 “शनैश्चरी अमावस्या” के दिन या फिर किसी भी शनिवार के दिन “शनैश्चरी प्रयोग” को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, क्योंकि इसे सम्पन्न करने पर शनि का उस पर अशुभ प्रभाव नहीं पड़ता।

शनैश्चरी प्रयोग शनि के कुप्रभाव को दूर करने वाला एक

1. यह प्रयोग आप सोमवार दिनांक 06.06.05 को या उसके बाद किसी शनिवार या रवि पूष्य योग से प्रारम्भ करें। साधना प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात् पांच बजे प्रारम्भ करें।
2. स्नान कर काले या गहरे नीले वस्त्र धारण करें। गुरु पीताम्बर ओढ़ लें और पूर्व दिशा की ओर मुख कर बैठ जाएं।
3. अपने सामने भूमि पर काजल से त्रिभुज बनाएं और उस पर एक ताम्र पात्र रखें। ताम्र पात्र में काजल से ही अष्टदल कमल बनाएं और उस पर ‘शनि यंत्र’ स्थापित करें।

यंत्र पर काजल से रंगे हुए चावल चढ़ाते हुए “ॐ शं अ॒ँ” मंत्र का उच्चारण करते रहें, इसके पश्चात् निम्न करन्यास तथा हृदयादिन्यास सम्पन्न करें -

करन्यास

शनैश्चराय अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
मन्दगतये तर्जनीभ्यां नमः ।
अधोक्षजाय मध्यमाभ्यां नमः ।
कृष्णांगाय अन्नामिकाभ्यां नमः ।
शुष्कोदराय कन्निष्ठिकाभ्यां नमः ।
छायात्मजाय करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास

शनैश्चराय हृदययाय नमः ।
मन्दगतये शिरसे स्वाहा ।
अधोक्षजाय शिखायै वषट् ।
शुष्कोदराय नेत्रब्रयाय वौषट् ।
छायात्मकजाय अस्त्राय फट् ॥

5. ‘शनि साफल्य माला’ से निम्न मंत्र की 24 माला मंत्र जप करें

मंत्र

// ॐ शं शनैश्चराय सशक्तिकाय
सूर्यात्मजाय नमः //

6. मंत्र जप पूर्ण होने के बाद यंत्र पर तीन काले अथवा नीले रंग के फूल चढ़ाएं, यदि काले रंग के फूल न मिल सकें, तो सफेद फूल को (काजल को तिल के तेल में घोल कर) रंग लें।

7. साधना के पश्चात् शनि की प्रार्थना इन दस नामों से करनी चाहिए-

कोणस्थः पिंगलो वभुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः
सौरिः शनिश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्
शनिश्चर कृता पीडा न कदाचित् भविष्यति॥

हिन्दी में इस शनि स्तोत्र का पाठ किया जा सकता है -
कोणस्थ, पिंगल, वभु, कृष्ण, रौद्र, अन्तक, यमः, सौरि,
शनिश्चर, मन्द इन दसों नामों का उच्चारण जो व्यक्ति प्रातः
काल करता है, उसे शनिदेव पीडा नहीं देते। इस का ज्यारह
बार पाठ करना चाहिए।

8. हाथ जोड़ कर श्रद्धापूर्वक निम्न बन्दना करें -

नीलघुति शूलशरं किरीटिनं, गृथस्थितं त्रासकरं धनुद्धरमा/
चतुर्भुजं सूर्यसूतं प्रशान्तं, वन्दे सदाऽभीष्टकरं वरेण्यम्॥

9. साधना समाप्ति के बाद यंत्र तथा माला को उसी स्थान
पर रहने दें तथा अगले दिन प्रातः या सायं काल यंत्र के
सम्मुख हाथ जोड़कर पुनः उपरोक्त श्लोक का उच्चारण करें
तथा 'ॐ शं उँ' मंत्र बोलते हुए यंत्र व माला को किसी
काले वस्त्र में लपेट कर पूजा स्थान में रख दें। अगले शनिवार
को वस्त्र सहित यंत्र व माला को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 300/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

शनि से सम्बन्धित विशेष प्रयोग

शनि से सम्बन्धित शान्तिकारक उपाय साधक की
गिरण्ठतर करते रहने चाहिए। उन व्यक्तियों की तीव्रिका
रूप से करना चाहिए, जिन पर शनि की साढ़े-साती घट
रही है। नीचे साथकों के लिये कुछ महत्वपूर्ण लघु प्रयोग
दिये जा रहे हैं। ये प्रयोग लघु अवश्य हैं लैकिन इन प्रयोगों
का लाभ तत्काल प्राप्त होता है। ये प्रयोग उस मास में आगे
वाले चारों शनिवार की सम्पद्ध करने चाहिए।

1. चैत्र मास में

प्रातः काल गुरु ध्यान/पूजन के उपरान्त 'काली हकीक
माला' से पूर्व दिशा की ओर मुख कर निम्न मंत्र की 11 माला
मंत्र जप करें -

॥ उँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनिश्चराय नमः॥

इस माह के अंत में माला को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

३५ 'अप्रैल' 2005 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '57' ३६

2. वैशाख माह में

शनि मन्दिर में जाकर काला वस्त्र चढ़ाएं अथवा किसी
ब्राह्मण को दान करें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

3. ज्येष्ठ माह में

रात्रि को 10 बजे के उपरान्त स्नानादि कर सामने
'शनैश्चर्या' को स्थापित कर उसका अक्षत, कुंकुम से पूजन
करें। उसके बाद शनैश्चर्या पर त्राटक करते हुए पन्द्रह मिनट
तक निम्न मंत्र का जप करें -

॥ उँ नमो भगवते शनैश्चराय सूर्यं पुत्राय नमः॥

माह के अंत में शनैश्चर्या को किसी निर्जन स्थान में भूमि में
गाड़ दें।

साधना सामग्री - 60/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

4. आषाढ़ माह में

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर गुरु पूजन करें। उसके बाद गुरु
माला से अतिरिक्त 5 माला गुरु मंत्र जप करें। जप करने से
पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि आप यह जप शनि के
दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए कर रहे हैं। शनि दोष निवारण
हेतु गुरु मंत्र का जप सर्वश्रेष्ठ है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

5. श्रावण माह में

रात्रि को 9 बजे के बाद स्नान आदि कर संक्षिप्त गुरु पूजन
करें। सामने किसी पात्र में 'त्रयायुष' को स्थापित करें, तथा
निम्न मंत्र का 20 मिनट तक क्रोध मुद्रा में जप करें -

॥ उँ शं शनैश्चराय नमः॥

त्रयायुष को माह के अंत में दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।

साधना सामग्री - 60/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

6. भाद्रपद माह में

प्रातः काल दैनिक पूजन के पश्चात् अपने सामने एक थाली
में काला तिल और जौ लेकर रख लें। तत्पश्चात् निम्न स्तुति
का 21 बार उच्चारण करें -

नमो मार्त्तिणं सुपुत्रं बत्तिष्ठं,

नमो छाय तातं हरनं अरिष्ठं।

बाद में तिल और जौ को किसी भैंस को खिला दें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

7. आश्विन माह में

यह प्रयोग शनिवार रात्रि में किसी भी समय सम्पन्न कर सकते हैं। स्वच्छ वस्त्र धारण कर गुरु पीताम्बर ओढ़ लें, हटें। सामने किसी पात्र में 'धृष्णु' को स्थापित करें। निम्न मंत्र का 20 मिनट तक जप करें। प्रत्येक मंत्र के साथ 'धृष्णु' पर एक अक्षत चढ़ाते जाएं।

//उ॒ँ शं सूर्यपुत्राय नमः //

जप समाप्त होने पर चढ़ाए हुए अक्षत को घर के सभी स्थानों में छिड़क दें।

साधना सामग्री - 60/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

8. कार्तिक माह में

तेल में काजल घोलकर भोजपत्र या किसी पीपल के पत्ते पर निम्न यंत्र बनाएं, तथा उस पर काला तिल, उड्ड व तेल चढ़ाकर पूजन करें। फिर उसे काले कपड़े में बांध कर सिर से पांव तक सात बार घुमा कर जल में प्रवाहित करें।

12	7	14
13	11	9
8	15	10

साधना सामग्री - 60/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

9. मार्गशीष माह में

शनिवार को प्रातः काल या रात्रि में लोहे अथवा स्टील के पात्र में 'कायनम्' को स्थापित करें। इसके पश्चात् संक्षिप्त गुरु पूजन करें। गुरु से मानसिक आज्ञा प्राप्त कर निम्न मंत्र का खड़े होकर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर 15 मिनट तक मंत्र जप करें।

//उ॒ँ शं करोणस्थाय नमः //

माह बीतने पर 'कायनम्' को किसी शिव मन्दिर में जाकर चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 50/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

10. पौष माह में

रात्रि में संक्षिप्त गुरु पूजन करने के बाद 'आज्ञत्य' को सामने रखें। आज्ञत्य का कुंकुम, अक्षत से पूजन करें। एक छोटा सा हवन कुण्ड बना लें या किसी पात्र में अग्नि प्रज्ज्वलित करें। काले तिल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए 21 आहुतियां दें -

//उ॒ँ शं रिंगलाय नमः स्वाहा//

माह के आखिरी शनिवार को हवन कुण्ड में आज्ञत्य को भी

समर्पित कर दें। प्रत्येक शनिवार को आहुति के बाद हवन की भस्म को मस्तक पर धारण करने के बाद ही पूजा स्थान से हटें।

साधना सामग्री - 80/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

11. माघ माह में

प्रथम शनिवार को प्रातः या रात्रि किसी भी समय अपने घर की चौखट पर 'करिन्द्रा' को काले कपड़े में लपेट कर टांग दें। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव के निम्न ध्यान मंत्र का 5 बार उच्चारण करें तथा करिन्द्रा को अगरबत्ती दिखा दें -

प्रणम्य देवदेवेशं सर्वग्रह निवारणम् ।

श्नैश्चर प्रसादार्थं चिन्तयामास्य पार्थिवः ॥

माह के अंत होने पर करिन्द्रा को उतार कर घर के बाहर किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें।

साधना सामग्री - 96/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

12. फाल्गुन माह में

रात्रि नौ बजे के बाद काली धोती पहन कर शनिदेव की स्तुति करें।

कृतिकान्ते शनिज्ञात्वा देवज्ञैर्जार्पितो हि सः ।
रोहिणी भेदयित्वातु शनियास्यिति साम्प्रतं ॥

माह के अंत में यह धोती किसी गरीब को दान कर दें अथवा मन्दिर में चढ़ा दें।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

शनि की ये लघु साधनाएं प्रत्येक साधक के लिये उपयोगी हैं, इन्हें पूर्ण शब्दा से सम्पन्न करें और शनिदोष प्रभाव दूर कर घर-परिवार में शांति, सुख, आनन्द, सौभाग्य स्थापित करें।

तुम मुझे बुद्धि से जानने की कोशिश करते हो, पर यदि मैं कभी पहिचाना जाऊंगा तो हृदय की आंखों से ही, यदि मैं तुमसे मिल सकूंगा तो प्रीति की रीति से ही, तुम्हारे हृदय में मैं यदि समा सकूंगा तो दीवानगी भरे शिष्यत्व से ही, और जब ऐसा होगा, तो जीवन का अर्थ ही बदल जायेगा, जीवन का मूल्य, जीवन का द्वय और जीवन का लक्ष्य ही पूर्ण हो जायेगा, और तब तुम्हारे अन्दर से जो पैदा होगा, वह सही अर्थों में 'शिष्य' होगा, सही अर्थों में 'समर्पण' होगा, सही अर्थों में 'पूर्णत्व' होगा।

-सदगुरुदेव

गुलदेव! क्या सचमुच ऐसी कोई वस्तु हैं, जिसे पा लेने पर और कुछ भी पाने की इच्छा नहीं होती और जिसे पाकर परमानन्द और परमशानि की उपलब्धि होती हैं?

हां, अवश्य है। उसके होने से ही आज समस्त संसार में दुःख के बीच में आनन्द की हल्की-सी झलक दिखाई पड़ती है, इस अज्ञान के घोर अन्धकार में भी ज्ञान की रश्मि समाप्त नहीं हुई। इसलिए मृत्युलोक में रहकर भी काल के प्रचंड आघात का अनुभव करके भी मनुष्य का हृदय भीतर ही भीतर अमृतपान करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है।

तुम क्या समझते हो, कि मनुष्य की यह इच्छा निरर्थक है?

ऐसा मत समझो। सचमुच यह ऐसा तथ्य है, जिसे प्राप्त कर लेने पर सभी इच्छाएं पूर्ण होती है और आशाएं साकार हो जाती हैं। सामान्य मनुष्य जो कुछ भी करना चाहता है, हमेशा गलता चाहता है। साधारणतः सभी गलत वस्तुएं ही चाहते हैं।

गरीबों में धनेच्छा, बन्धग्रस्त में मुक्ति की इच्छा, रूप-प्रेमी के लिए रूप-तृष्णा, कामुकों में काम-पिपासा, जिजासुओं में ज्ञान अभिलाषा... हैं सब इच्छाएं ही, भले ही उनके रूप भिन्न-भिन्न हैं।

जिनके अन्तः प्राणों में दुःख है तथा जो जगत की अत्यधिक वेदना की अनुभूति से परिचित हैं, उन्हें संसार का आदम्बर और भोग-विलास भुलावे में कभी भी नहीं डाल सकता। यदि मनुष्य के जानने योग्य कुछ है, तो सर्वप्रथम उसे अपने दुःख के कारण का निवान करना होगा। मनुष्य जो कुछ चाहता है, उसी को पाने का प्रयत्न करता है और जिस उपाय से उसे सिद्धि मिलती है, वही उसका साधन है।

मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य है - 'स्वभावोपलब्धि'।

आत्मा का जो स्वभाव है, उसी में निमग्न रहना।

मनुष्य स्वभाव से अलग होकर ही दुःख में पड़ा है। पुनः साधना द्वारा 'स्वभाव' में प्रतिष्ठित होने पर उसका सारा अभाव मिट जायेगा। जिसको परमानन्द या परमशांति कहते हैं, वह वस्तुतः स्वभाव (अपने) ही भाव में निमग्न होने के पूर्वाभ्यास को छोड़कर अन्य कुछ नहीं।

शास्त्रों में परमपद के सम्बन्ध में जो कुछ भी वर्णन है, वह इसी अवस्था के सम्बन्ध में विशेषतया चरितार्थ है। फिर भी शास्त्र का वर्णन पूर्ण सत्य का ज्ञापक नहीं। जिसने जिस मात्रा में उपलब्धि की है, वह उतनी ही भाषा द्वारा मुख से उपदेश के रूप में प्रकाशित कर पाया है। जो मुक्त अवस्था में सत्य-स्वरूप की उपलब्धि कर पाये हैं, वे भी उपदेश-दान और ग्रन्थ निर्माण के समय अपने चित्तगत संस्कार और बुद्धि विकास के अनुसार ही उसकी व्याख्या कर सके।

हैं। इसलिए उपलब्धि सबकी एक होते हुए भी वर्णन के समय भेद प्रकट हो ही जाता है।

अतीन्द्रिय तत्व को इन्द्रियों द्वारा प्रकट करने पर मिथ्या का आश्रय ग्रहण करना ही पड़ेगा। असीम वस्तु को सीमा के अन्दर बांधना असंभव है, क्योंकि जो सीमा के अन्दर बंधा है, वह असीम नहीं है। अन्तरंग तत्व कभी भी भाषा के द्वारा वर्णित नहीं हो सकता।

'आवरण-निवृत्ति' मुक्ति का दूसरा नाम है। तुम जिस आवरण से घिर कर स्थूल भाव में पड़े हो, जब वह आवरण दूर होगा, तब तुम सूक्ष्म तत्व में प्रविष्ट होओगे अर्थात् अपने सूक्ष्म भाव की उपलब्धि कर सकोगे तथा सभी पदार्थों को सूक्ष्म रूप में देख पाओगे। स्थूल भाव से छूटने को ही मुक्ति कहते हैं। स्थूल के साथ ही प्रिय-अप्रिय का बोध जाग्रत होता है अथवा सुख-दुःख रूपी द्वन्द्वों की उत्पत्ति होती है।

स्थूल सम्बन्ध न रहने पर सुख-दुःख का बोध या भोग प्रवृत्ति नहीं रहती। फिर भी इस अवस्था में 'स्वभाव' का स्फुरण नहीं होता; तब भी अभाव रहता है, परन्तु वह अभाव भौतिक नहीं है। क्षुधा-तृष्णादि ही एकमात्र अभाव है - ऐसा नहीं, उसके विशेष्य भाव से न रहने पर भी अन्य प्रकार के अभाव रहते हैं। इस स्तर के भेदन से परमानन्द-स्वाद प्राप्त होता है। शिष्य इसे ही प्रेम या अमृत कहते हैं। यह विषय सुख की तरह मोह में फंसाने वाला तो नहीं है, किन्तु मोहमय है अवश्य। केवल गंभीर आनन्द को छोड़कर यहां अन्य कुछ अनुभव ही नहीं होता। इस अवस्था तक पहुंचने पर 'स्वभाव' की प्राप्ति में और अधिक देर नहीं लगती। वस्तुतः प्रेम 'स्वभाव' में स्थित है।

'स्वभाव' में स्थिति किस प्रकार होती है, यह लौकिक विधि से समझाया नहीं जा सकता; जो उस अवस्था को समझ पाया है, वही उसकी उपलब्धि भी कर सकता है। अन्यों को उसे भाषा द्वारा समझाने का प्रयास व्यर्थ है।

'स्वभाव' प्राप्ति ही मनुष्य का लक्ष्य है, यही परम पुरुषार्थ है, इसी के लिए चेष्टा करनी चाहिए। तुम इस बाह्य जगत से अपने को अलग कर अन्तर्जगत में प्रवेश करो। पुनः उसे भी त्याग कर भीतर व बाहर समान करने की चेष्टा करो।

जब यह कर पाओगे, तभी अद्वैतरूपिणी गुरु की ममतामयी स्नेह-शीतल गोद में बैठकर अमृतपान कर परमानन्द का लाभ प्राप्त कर धन्य होओगे। शिशु होकर गुरुरूपी माता की गोद में बैठकर उनकी लीला-रहस्य को धीरे-धीरे समझोगे...

नक्षत्रों की वाणी

मैष -

समय जैसे आपके हित में बनता ही जा रहा है, अतः समय का पूर्ण सदुपयोग करें। दूसरों के कार्य पर ध्यान देने की अपेक्षा स्वयं के कार्यों पर ध्यान दें। नौकरी पेशा व्यक्ति भी अनुकूल संयम का उपयोग कार्य सम्पादन में करें। व्यर्थ का वाद-विवाद उनकी पदोन्नति के लिये अच्छा नहीं। विद्यार्थी वर्ग से हर समय प्रसन्नता अनुभव होगी। इस माह विशेष उत्साह अनुभव करेगा। परिवार में शुभ आयोजन से हर समय प्रसन्नता अनुभव होगी। संतान पक्ष से भी विशेष शुभ समाचार प्राप्त होंगे। इस माह अनुकूलता हेतु 'दुर्गा स्वर्णाकर्षण साधना' (मार्च 2005) सम्पन्न करें। तिथियाँ 2, 4, 6, 10, 12, 15, 20, 24, 28 हैं।

वृष -

पिछले माह की अनुकूलता का प्रभाव इस माह भी आपको प्राप्त होगा, समय आपके ही पक्ष में है। कठिन परिश्रम से ही आपको लाभ प्राप्त होगा। अतः कार्य को पूर्ण करने में किसी भी प्रकार की देरी नहीं करें। किसी धार्मिक अथवा मांगलिक कार्य में व्यय होगा। परिवार में शुभ कार्य होना से मन प्रसन्न होगा। गृहस्थ सुख में भी बढ़ोतरी होगी। बेरोजगारों एवं विद्यार्थी वर्ग के लिये भी समय बहुत अनुकूल है आवश्यकता केवल इस बात की है कि आप परिश्रम करें। इस माह 'मांतगी त्रैलोक्य कवच' (मार्च 2005) करें। तिथियाँ - 1, 6, 9, 12, 14, 17, 20, 23, 27 हैं।

मिथुन -

आपकी सर्तकता हमेशा ही आपके लिये अनुकूल रही है। फिर भी इस माह आप विशेष सर्तक रहकर कार्य करें। अपने व्यवहार में नम्रता रखें, प्रेम पूर्वक अपने विशेष कार्यों का सम्पादन करें। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचते हुए, नम्रता, प्रेम एवं धैर्य से काम लें। इस माह सम्पन्न किये कार्य भविष्य में आपके लिये विशेष फलदायक सिद्ध होंगे। कठिन समय में परिवारिक सुख का अनुभव आपके लिये सुखद सिद्ध होगा। आप 'भाग्योदय रक्षा कवच' (जनवरी 2005) धारण करें। तिथियाँ - 2, 6, 8, 10, 15, 17, 19, 20, 26, 27 हैं।

कर्क -

नवीन कार्य प्रारम्भ करने के लिये एकदम अनुकूल समय है। आपको कार्य प्रारम्भ में अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। इस माह आपको विभिन्न यात्राएं भी करनी पड़ सकती है जो कि आपके भविष्य के लिये विशेष लाभप्रद सिद्ध होगी। आपके बहुत से रूपे हुए कार्य भी बिना किसी अड़चनों के पूर्ण हो जायेंगे। महिलाएं विशेष रूप से संयम से काम लें, परिवार में सोहार्द का वातावरण परिवार की उत्तिर के लिये अति आवश्यक है। इस माह आप 'भूतेश्वर शिव साधना' (जनवरी 2005) सम्पन्न करें। तिथियाँ - 3, 8, 11, 17, 20, 22, 29, 30 हैं।

सिंह -

इस माह आप बहुत अधिक व्यस्त रहेंगे। आपको अपनी दक्षता एवं क्षमता का प्रमाण देते हुए, इतनी व्यस्तता के बावजूद भी सभी कार्यों का निष्पादन करना चाहिये। आप अपनी क्षमता से कठिन से कठिन कार्य भी सम्पन्न कर लेंगे। आपको आपके पारिवारिक सदस्यों एवं मित्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपके व्यय में कुछ वृद्धि हो सकती है, जिससे मानसिक परेशानी बढ़ेगी। विद्यार्थी वर्ग को और अधिक कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। अनुकूलता हेतु आप 'भूतेश्वर शिवलिंग चेटक' (फरवरी 2005) करें। तिथियाँ - 1, 2, 9, 10, 13, 15, 20, 24, 25, 29 हैं।

कन्या -

आपके मान, सम्मान, यश, प्रतिष्ठा में वृद्धि करने वाला यह माह आपके लिये बहुत अच्छा सिद्ध होगा। पूरे माह प्रसन्नता पूर्ण वातावरण बना रहेगा। आपके कार्य बनते चले जायेंगे, जिससे आपके शत्रु बहुत परेशान होंगे। आपके शत्रुओं द्वारा मार्ग में बाधाएं उत्पन्न करने से आप निराश न हो, प्रयत्नशील बनें रहें। परिवार में किसी शुभ आयोजन से मन प्रसन्न होगा। इस माह किसी धार्मिक यात्रा पर जाने का भी योग है। इस माह आप 'पारद गणपति साधना' (जनवरी 2005) करें। तिथियाँ - 5, 6, 9, 13, 15, 21, 22, 25, 27 हैं।

सर्वार्थ, अमृत,
प्रिपुष्कर, शिद्धि योग

सिद्ध योग 6, 23, 29 अप्रैल / 7, 25 मई ⚪ सर्वार्थ सिद्ध योग 13, 27 अप्रैल / 6 मई ⚪ अमृत सिद्ध योग 27 अप्रैल / 6 मई ⚪
★ रवि पुष्य योग 15 मई ⚪

इस मास ज्योतिष की दृष्टि से : शनि का परिवर्तन और गुरु के साथ दुर्धर्षा मार्ग बनने से देश में अस्थिरता और अशांति का बातावरण बनेगा, इसका मूल कारण कृषि क्षेत्र के साथ औद्योगिक क्षेत्र में अवनति होगा। कुछ जन आंदोलन होने की स्थिति बन रही है। राज्यों एवं केन्द्र के सम्बन्धों में निरन्तर गिरावट आयेगी। राजनैतिक उथल-पुथल की गति और भी तीव्र होगी।

तुला -

आप जिस प्रकार चाहते हो उसी प्रकार आपको अपने कार्य में सफलता मिलेगी। पूर्ण पराक्रम योग के कारण आपके शत्रु आपसे परास्त होंगे। शत्रु को शांत कर हर मार्ग प्रशस्त करेंगे। आपकी प्रगति से समाज में आपकी मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होने से मन प्रसन्नचित होगा। इस माह आध्यात्मिक तथा धार्मिक क्षेत्र में आपकी रुचि बढ़ेगी। अपने व्यय पर थोड़ा नियंत्रण रखें। माह के अंत में व्यापारी वर्ग को विशेष लाभ प्राप्त होगा। इस माह 'मणिभद्र चेटक साधना' (फरवरी 2004) करें। तिथियां - 5, 6, 16, 17, 18, 19, 20, 25, 27 हैं।

वृष्टिवक्त -

समय की प्रतिकूलता का ध्यान रखते हुए इस माह आप कोई भी जिम्मेदारी का नया बोझ न लें। अपने कर्तव्य का बोध ही आपको सफलता प्रदान करेगा। आपको अपने स्वजनों एवं मित्रों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। अधिक से अधिक समय धार्मिक कार्यों में व्यस्त करें। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा तथा गृहस्थ जीवन में आनन्द एवं हर्षोल्लास रहेगा। आप चिंताओं की बजाय अपने इष्ट का या शिव का चिंतन करें, समस्याओं का निराकरण होगा। आप अनुकूलता हेतु 'बगलामुखी धूमावती सायुज्य नृसिंह साधना' (फरवरी 2005) अवश्य ही सम्पन्न करें। इस माह की शुभ तिथियां - 1, 2, 3, 4, 18, 24, 28, 29 हैं।

धनु -

विशेष रोमांच भरा यह माह आपके लिये नये-नये आय के स्रोत, भाग्योदय एवं पुराने कार्य पूर्ण करने के लिये सहायक होगा। आपके कर्म क्षेत्र और वर्तमान स्थित कार्य में बढ़ोतरी होने का पूर्ण योग है। यह माह आपके स्वास्थ्य के लिये अनुकूल सिद्ध नहीं होगा, हो सकता है कि स्वास्थ्य पर आपको कुछ व्यय करना पड़े। गुरु शुत्रों से सावधान रहें। व्यापारियों को अच्छे समय का इंतजार करना हितकर होगा। स्त्रियों को मानसिक परेशानी एवं गृहस्थ सुख का अभाव रह सकता है। आप 'उन्मत्त भैरव साधना' (फरवरी 2005) करें। तिथियां - 5, 10, 11, 20, 21, 23, 25 हैं।

मंकर -

विशेष सावधानियों के साथ अपने जीवन में आने वाली बाधाओं को समाप्त करने का प्रयत्न करें। व्यापार में, नौकरी पेशा वर्ग का अपने क्षेत्र में विशेष पराक्रम बढ़ेगा। यह माह अर्थ के हिसाब से पूर्ण अनुकूल है। गृहस्थ जीवन में न्यूनता रहेगी। अपने मित्रों, परिचरों एवं सहयोगीयों से व्यर्थ के वाद-विवाद से बचना ही आपके लिये हितकारी सिद्ध होगा। इस माह की गई यात्रा आपके भविष्य की योजनाओं में सहायक सिद्ध होगी। इस माह आप अनुकूलता हेतु 'सर्व रक्षाकारक प्रासाद कवच' (फरवरी 2005) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 3, 4, 7, 8, 9, 18, 19, 27, 30 हैं।

कुंभ -

आने वाले माह में उत्तरोत्तर प्रगति एवं महत्वपूर्ण आकांक्षा मनोनुकूल पूर्णता के साथ आपको अपने कार्य क्षेत्र में व्यस्त रखेगा। अपनी निजी जीवन को नजर अंदाज न करें। किसी भी तरह का लिखावट कार्य करते समय सर्तकता बरतें या यथा संभव भविष्य के लिये टाल दें। शत्रु पक्ष की तरफ से होने वाले वाद-विवाद से बचें। आपके संतान के पराक्रम से आपके मन में आनन्द और गैरव होगा। इस माह 'काली सिद्धि साधना' (फरवरी 2005) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 5, 9, 10, 15, 16, 19, 24, 29, 30 हैं।

मीन -

पूर्वोत्तर चली आ रही योजनाओं को इस माह आप अवश्य पूर्ण कर दें। हर निर्णय लेने से पहले अपने परिचरों से मार्ग दर्शन अवश्य प्राप्त कर लें। इस माह आपको विभिन्न प्रस्ताव प्राप्त होंगे। सही निर्णय आपके भाग्योदय में सहायक सिद्ध होगा। आपके कार्य क्षेत्र में बढ़ोतरी होगी तथा नवीन कार्य आपको नवीन स्थान पर स्थापित कर सकता है। शत्रुओं पर आपकी विजय प्राप्त होगी। इस माह शुभत्व हेतु आप 'महाकाल साधना' (जनवरी 2005) सम्पन्न करें। तिथियां - 2, 4, 12, 17, 19, 20, 27, 28, 29, 30 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

08	अप्रैल	चैत्र कृष्ण पक्ष-30	शुक्रवार	अमावस्या
09	अप्रैल	चैत्र शुक्ल पक्ष-01	शनिवार	घट स्थापन/नवरात्रि प्रा.
17	अप्रैल	चैत्र शुक्ल पक्ष-08	रविवार	दुर्गाष्टमी
18	अप्रैल	चैत्र शुक्ल पक्ष-09	सोमवार	राम नवमी
20	अप्रैल	चैत्र शुक्ल पक्ष-11	बुधवार	कामदा एकादशी
21	अप्रैल	चैत्र शुक्ल पक्ष-12	गुरुवार	निखिल जयंती
24	अप्रैल	चैत्र शुक्ल पक्ष-15	रविवार	पूर्णिमा व्रत
01	मई	वैशाख कृष्ण पक्ष-08	रविवार	शीतलाष्टमी
04	मई	वैशाख कृष्ण पक्ष-11	बुधवार	बैरुथी एकादशी व्रत



सामाया



साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहाँ प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप ख्यां अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (अप्रैल 3, 10, 17, 24) (मई 1, 8, 15, 22)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 10:00 तक
सोमवार (अप्रैल 4, 11, 18, 25) (मई 2, 9, 16, 23)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (अप्रैल 5, 12, 19, 26) (मई 3, 10, 17)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (अप्रैल 6, 13, 20, 27) (मई 4, 11, 18)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (अप्रैल 7, 14, 21, 28) (मई 5, 12, 19)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (अप्रैल 1, 8, 15, 22, 29) (मई 6, 13, 20)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (अप्रैल 2, 9, 16, 23, 30) (मई 7, 14, 21)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने बही वर्षाहमि हिरु ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तबावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका प्रत्येक दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मई

से दिन आपके अनुकूल रहेगा।

1. प्रत्येक कार्य के पूर्व 'हीं' बीज का सात बार जप करें।
2. बाहर जाने से पूर्व मूँग से बनी वस्तु ग्रहण करें।
3. प्रातः काल 'हनुमान चालीसा' का पाठ करें।
4. बाहर जाते समय 'अहोर' (न्यौछावर 70/-) किसी मंदिर में चढ़ा दें।
5. आज गुरु पूजन के पश्चात् 'नारायण स्मरण' का पाठ करें।
6. प्रातः काल बेसन से बनी वस्तु दान दें।
7. बाहर जाते समय चुटकी भर हींग को दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।
8. प्रातः काल सबसे पहले अपनी दोनों हथेलियों को देख कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें -
कराग्रे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती।
कर मूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्॥
9. प्रातः काल 'ॐ नमः शिवाय' का 11 बार जप करें।
10. प्रातः काल 'अंगिरा' (न्यौछावर 90/-) का पूजन कर उसे धारण कर ही बाहर जायें, विरोधी परास्त होंगे।
11. अपने पूजन स्थान या व्यापार स्थल में 'श्री प्रदत्त' (न्यौछावर 101/-) स्थापित करें, लाभ होगा।
12. एक कागज पर कुंकुम से तीन बार गुरु मंत्र लिख कर उसे किसी मंदिर में चढ़ा दें।
13. 'आम्बिणी' (न्यौछावर 60/-) को काले वस्त्र में बांध कर पूजा स्थान में रख दें, कार्यों में सफलता मिलेगी।
14. प्रातः 'हं हनुमते लद्रात्मकाय हुं फद' मंत्र का हनुमान के विग्रह के समक्ष 21 बार अवश्य जप करें।
15. प्रातः काल ही भगवान् सूर्य को अर्घ्य प्रदान कर अपना दिवस आरम्भ करें।
16. 'कारकत्व' (न्यौछावर 80/-) को दुर्गा मंदिर में चढ़ाने से दिन आपके अनुकूल रहेगा।
17. इस दिन आप अपने वस्त्रों में सफेद रंग की प्रधानता रखें, आपका दिन शुभ होगा।
18. केसर का तिलक लगा कर कार्य हेतु प्रस्थान करें।
19. किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व पांच बार गुरु मंत्र का जप करें।
20. 'केतकी' (न्यौछावर 50/-) को अपने सिर पर से तीन बार धुमा कर बाहर फेंक दें।
21. गुरु पूजन सम्पन्न कर, गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. बाहर जाने से पूर्व चुटकी भर नमक को एक कागज में बांध कर उसे किसी निर्जन स्थान पर डाल दें।
23. 'पंचमुखी रुद्राक्ष' (न्यौछावर 60/-) को शिव मंदिर में चढ़ाने से आपको कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।
24. प्रातः सरसों के तेल का दीपक हनुमान मंदिर में अर्पित कर दें।
25. 'वक्रतुण्डाय हुं' मंत्र का 21 बार जप करें, आर्थिक लाभ होगा।
26. प्रातः काल निम्न श्लोक का पांच बार उच्चारण करें -
न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्त्वज्ञानात् परं जास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः॥
27. 'वरदिनी' (न्यौछावर 60/-) को बाहर जाते समय पीछे की ओर फेंक दें तथा फिर पीछे मुड़ कर न देखें।
28. 'हेरांगना' (न्यौछावर 30/-) को प्रातः काल किसी को दान में दे दें।
29. प्रातः काल रोटी पर गुड़ रख कर उसे किसी दान लेने वाले को दान कर दें या गाय को खिला दें।
30. शिवलिंग पर काले उड़द अर्पित करें, कार्य सफल होंगे।
31. प्रातः जलदी उठकर तुलसी के पत्तों की माला स्वयं तैयार कर, उसे हनुमान जी को पहना दें।



जीवन साइता



यों तो किसी भी समस्या के समाधान हेतु अनेकों उपाय हैं। परंतु मंत्रों के माध्यम से समस्या के निवारण के पीछे धारणा यह है कि मंत्र शक्ति एवं दैवी शक्ति द्वारा साधक को वह बल प्राप्त होता है जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान सहज हो जाता है। उदाहरण के लिए माना जाता है कि सभी गोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभागों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो गोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं। उसी प्रकार मन को सुदृढ़ करके किसी भी समस्या पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

1. पार्टनर को अपने अनुरूप बनायें

पार्टनर से मन-मुटाव हो गया है, तो फिर आपके तो कई काम रुक गये होंगे और अपने व्यवसाय में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा होगा। यद्यपि आप सही हैं, फिर भी आपको अपने व्यवसाय को चलाने के लिए उसे मनाना ही पड़ता है। अनेक प्रयत्न करने के बाद भी वह नहीं मान रहा है, तो अपने पार्टनर को यूं मनाइये-

अपने पार्टनर का नाम एक कागज पर लिखें, एक लाल कपड़े में उस कागज को प्राण प्रतिष्ठित 'कारुल' के साथ बांधकर उसके सामने निम्न मंत्र का 31 बार उच्चारण करें -

मंत्र

// उँ श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं उँ //

शुक्रवार के दिन पोटली को किसी निर्जन स्थान पर जमीन में दबा दें।

साधना सामग्री - 60/-

+++++

2. आय का स्त्रोत तो है, लेकिन स्थाई नहीं

आप आय का एक निश्चित स्रोत चाहते हैं, अतः आप इसके लिए प्रयत्न भी करते हैं, लेकिन आप किन्हीं कारणों से कोई स्थाई स्रोत नहीं रख पाते हैं और परेशान होते रहते हैं। यदि आप चाहें, तो इस प्रयोग को अपनाकर आय का स्थाई

स्रोत प्राप्त कर सकते हैं।

प्राण प्रतिष्ठित मंत्र सिद्ध 'पंच कमल बीज' को अपने सामने एक बाजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर पांच लाल फूलों को रखें प्रत्येक फूल पर एक कमल बीजों स्थापित कर दें। कमल बीज का संक्षिप्त पूजन करें। एक पीले कागज पर निम्न मंत्र को 21 बार कुंकुम से लिखें-

मंत्र

// उँ शिवत्वं श्रीं उँ //

उसी कागज में कमल बीजों तथा फूलों को लपेट कर बुधवार रात्रि के समय किसी तिराहे पर डाल दें।

साधना सामग्री - 100/-

+++++

3. स्नावधान आपकी बेटी ने दाढ़ता बदल दिया है, जान लीजिये और स्नाही दाढ़ते पर ले आइये।

बेटियां घर की इज्जत मानी गई हैं, उनका एक भी गलत कदम उनके भविष्य पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह बना कर खड़ा हो सकता है। यह मात्र उनका ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार की इज्जत का प्रश्न बन जाता है।

अगर आपकी बेटी भी किसी ऐसे ही रास्ते की ओर अग्रसर हो रही है, आधुनिकता के नाम पर गलत रास्ते की ओर उसके कदम चल पड़े हैं, तो उसे यहीं रोक दीजिये और

अत्यन्त सरलता से उचित मार्ग पर ले आइये।

शुक्रवार के दिन नीले रंग के वस्त्र में हल्दी से अपनी पुत्री का नाम लिखकर उसमें 'दुर्बुद्धि नाशक गुटिका' बांध दें। फिर निम्न मंत्र का 51 बार जप करें -

मंत्र

// ॐ स्तूर्णे हौरे ज्ञातौं साधय ॐ //

गुटिका को उसी वस्त्र में बांधे हुए नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 111/-

+++++

4. आपका बुढ़ापा आनन्दप्रद हो ज्ञकता है, यदि इस विधि को अपना लेते हैं आप...

वृद्धावस्था आना व्यक्ति का अपने भविष्य के प्रति अनेक चिन्ताओं से भर जाना है। यह आवश्यक नहीं, कि वृद्धावस्था में पुत्र अथवा पुत्री सहयोग प्रदान करें ही, अचानक कोई ऐसी समस्या न आ जाय, जिसके कारण वृद्धावस्था दुखमय बीते।

व्यक्ति अपने वृद्धावस्था में सुखमय स्थिति प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार की बीमा तथा योजनाएं करवाता है, इसके साथ ही आप इस प्रयोग को भी सम्पन्न करें और जीवन को आनन्दयुक्त बनायें।

शुक्रवार के दिन 'हमजाद' को गुलाबी रंग के वस्त्र पर स्थापित कर उस पर इत्र लगा दें तथा उसके समक्ष चार तेल के दीपक लगा दें। प्रत्येक दीपक को देखते हुए 21 बार मंत्र का उच्चारण करें। यह प्रयोग सात दिन का है।

मंत्र

// ॐ ऐं श्री ऐं ॐ फट //

प्रयोग समाप्ति पर 'हमजाद' पर इत्र लगाकर नदी में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री - 100/-

+++++

5. आप अपनी प्रेमिका को अपने आकर्षण में पूर्णतया बांध ज्ञकते हैं

आप जिससे प्रेम करते हैं, वह आपकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा है और आप चाहते हैं, कि वह आपकी अभिव्यक्ति का उत्तर दें, आपसे प्रेम करे, आपको बार-बार तवज्जनह दे, आपको अपने जीवन का अहम हिस्सा माने और आपके आकर्षण में पूरी तरह बंध जाय। परन्तु यदि ऐसा नहीं हो रहा है, तो यह प्रयोग सम्पन्न तो करके देखिए, आपकी प्रेमिका निश्चय ही

आपकी ओर आकर्षित होगी और वह स्वयं आतुर रहेगी कि आप उसे एक बार देख लें। यदि आप पत्नी के प्रेम में न्यूनता अनुभव कर रहे हैं, तो भी यह प्रयोग सम्पन्न करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

शुक्रवार के दिन एक भोजपत्र पर अष्टगंध से अपनी प्रेमिका या पत्नी का नाम लिखें, फिर उसके चारों ओर अपना नाम लिखकर उस पर 'आकर्षण यंत्र' स्थापित करें। यंत्र पर इत्र, पुष्प चढाएं तथा सुगन्धित धूप लगाएं। फिर उसके समक्ष पूर्वाभिमुख होकर निम्न मंत्र का 65 बार उच्चारण करें -

मंत्र

// ॐ रत्न्यै ॐ //

मंत्र जप समाप्त होने पर यंत्र पर लगा इत्र स्वयं लगा लें। यह प्रयोग पांच दिन तक करें। पांचवें दिन यंत्र को उसी कागज में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

+++++

6. दूर बैठे व्यक्ति के बारे में जान ज्ञकते हैं इस प्रयोग से ।

आप अपने घर में कार्य करते हैं, कि अचानक एक क्षण आपको अनुभव होता है, कि मेरे घर पर या रिश्तेदार के यहां पर कुछ घटित हो रहा है, जिससे वह दुःखी है या उसका अचानक एक्सीडेन्ट हो गया है। ऐसी घटनाओं का पूर्वानुभास आपको हो सकता है तथा आप अपने स्वजनों तथा मित्रों के बारे में जानना चाहते हैं या आपके शत्रुओं द्वारा आपके लिये बनाई जा रही योजनाओं में बार में जानना चाहते हैं। तो यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करें।

तांबे के पात्र में 'विरोचन गुटिका' को स्थापित कर उसका पूजन कर उसके समक्ष 31 दिन तक नित्य 35 मिनट तक निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

// ॐ हं हंसः अपतिचक्रे हं हं ॐ नमः //

प्रयोग समाप्ति के बाद गुटिका को मंदिर में चढ़ा दें और जब किसी स्वजन को देखना हो, तो मानसिक गुरु पूजन सम्पन्न कर, पूर्ण ध्यान लगाते हुए 21 बार उपरोक्त मंत्र का जप करें। इसके पश्चात् आंखें बंद कर उस व्यक्ति विशेष पर ध्यान केन्द्रित करें, तो आप जान सकेंगे उसके बारे में।

साधना सामग्री - 90/-

+++++

पूर्णत्वं देहं मम प्राण रूपं
त्वमेवं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यं

संसार में साधक शिष्य के लिए गुरु से बढ़कर कीर्झ नहीं है, गुरु ही शिष्य के सब दोषों का क्षय कर दीक्षा प्रदान कर अपने डीसा बना देते हैं गुरु की शिष्य के अन्तर्मन की यात्रा, आत्मशांति एवं पूर्ण कल्याण प्रदान करते हैं। सद्गुरुकैव के श्रीचरणों में अर्पित यै आव प्रत्येक शिष्य के हैं डिठ्हैं जीवन में उतारना ही जीवन का परम सीधार्थ है।

मनुष्य के भीतर गुण-अवगुण दोनों होते हैं। हृदय में भी जन्म-जन्म के भावों का एक आवरण होता है। वह संसार में विषय भोग की लालसा लेकर आता है। इसके उपरान्त भी वह गुरु से यही प्रार्थना करता है कि हे गुरुदेव! आप मेरे चित्त के विचारों की ओर ध्यान न देकर मुझे पूर्ण दोष सहित अपनी शरण में रखीकार कर अपना शिष्य बना लें। क्योंकि आप ही मेरे अन्तर्मन में जाग्रत और क्रियाशील होकर मेरे अङ्गान जन्य सभी कुसंस्करणों को निर्मूल कर देने में सर्वसमर्थ हैं। आपसे प्रार्थना है कि मेरा मन कभी भी विकारों और कुभावों से प्रभावित न हो और गुरु के प्रति ही मेरे हृदय में प्रेम भरपर बना रहे।

सारा ज्ञान गुरुदेव में ही तो निहित है, गुरुदेव ही ज्ञान स्वरूप है। जगत का ज्ञान गुरु शक्ति से ही कार्यशील है। चित्त से गुरु शक्ति का विच्छेद होते ही सारा ज्ञान विलुप्त हो जाता है। क्योंकि जगत के ज्ञान की परिभाषा अलग है। एक ही समय पर एक ही वस्तु का ज्ञान अलग-अलग रूप में

तत्व दर्शन सिद्धान्त के अनुसार गुरु ही एक मात्र शक्तिमान है। उन्हीं से शक्ति भ्रहण कर अन्य सभी शक्ति प्राप्त करते हैं। गुरुदेव ही नित्य शक्तिमान है। उनकी शक्ति का न तो हास्य होता है और न विकास। वह तो सदैव एक रस ही बने रहते हैं। इसीलिये तो गुरुदेव को सबका प्रभु स्वामी कहा गया है। गुरुदेव की शक्ति मन, बुद्धि तथा चित्त को कार्यशील बनाती है। गुरुदेव से मन की कोई गुप्त बात छिपाना संभव ही नहीं है। अन्तर में बरसे होने के कारण और अन्तर की बात जानने के कारण ही गुरुदेव को अन्तर्यामी कहा गया है।

देहधारी गुरु जिन्हें जगत् में गुरु कहा गया है उनकी किसी शारीरिक चेष्टा अथवा संकल्प से शक्ति जाग्रत् नहीं होती। देहधारी गुरु के भीतर जाग्रत् गुरुत्व की कृपा से ही शिष्य में शक्ति जाग्रत् होती है। शिष्य में शक्ति जाग्रत् करना ही गुरुदेव की वास्तविक कृपा है।

यह शक्ति शिष्य के लिये आध्यात्मिक उज्ज्ञति के द्वारा खोल देती है और शिष्य में शक्ति जाग्रत होने पर पुराने सड़े गले संस्कारों का क्षय प्रारम्भ हो जाता है। जब तक शक्ति बढ़िमरखी तब तक मन चित्त में यह संसार खड़ा करती रहती

है। इच्छाओं, कामनाओं, वासनाओं को बढ़ाती रहती है। जब शक्ति अन्तर्मुखी हो जाती है तो भीतर नवीन संस्कार उदय होने लगते हैं। शरीर में विभिन्न क्रियाएं अपने-आप होने लगती हैं। हंसना, गाना, रोना उछलना शरीर का हल्का भारी हो जाना, नाद, श्रवण, दृश्य दर्शन, आसन-प्राणायाम विचिन्त क्रियाएं भीतर ही भीतर अनुभव होने लगती हैं और इन्हीं क्रियाओं से साधक अत्यधिक ही आनन्द अनुभव करता है।

जब गुरु कृपा होती है तो मन निर्मल हो जाता है और बुद्धि आगे हो जाती है। गुरु कृपा से बुद्धि के विवेक युक्त निर्णय के प्रकाश में ही साधक शिष्य संकल्प लेता है। तभी उसे आन्तरिक आनन्द प्राप्त होता है। जब सद्गुरुदेव शिष्य के मन में योग-आग्नि और ज्ञान आग्नि जाग्रत करते हैं तो वह तीव्र ऊर्जा से युक्त होती है। जाग्रत शक्ति स्फीटी आग्नि में सभी कुर्संस्कार जल कर भरम हो जाते हैं। चित एक हवन कुण्ड का स्फूर्त मग्नहण करता है और उसमें जाग्रत शक्ति स्फीटी आग्नि की ज्वालाएं धधकती रहती हैं। पूर्व जन्म के कुर्संस्कार जल कर भरम हो जाते हैं। इसे ही आन्तरिक हवन, यौगिक हवन, आध्यात्मिक हवन कहा गया है। शिष्य के लिये बाह्य हवन की अपेक्षा यह यौगिक हवन, आध्यात्मिक हवन, आवश्यक है।

इतनी अग्नि होते हुए भी गुरु तत्व सदैव शांत रहता है।
गुरु तत्व का कार्य शक्ति की उम्र क्रिया प्रारम्भ करना है।
गुरु शक्ति तो उस दीपक की तरह है जिसके प्रकाश में
विभिन्न क्रियाएं घटित होती रहती है लेकिन प्रकाश सदैव
निर्मल ही बना रहता है।

गुरु के मन के संकल्प से ही शिष्य में शक्ति जाग्रत होती है। शिष्य में यह शक्ति जागरण के लिये, गुरु के मन में शिष्य के कल्याण का ही भाव होता है। गुरु के संकल्प अनुसार शक्ति बाहर प्रवाहित होती है और शिष्य की चित्त शक्ति से संयोग में आती है। यह सारी क्रियाएं अत्यन्त ही सूक्ष्म स्तर पर घटित होती है। शक्ति के इस आवागमन को गुरु द्वारा शक्ति प्रदान करना और शिष्य द्वारा शक्ति ग्रहण करना केवल गुरु और शिष्य ही आपस में समझ सकते हैं। इन भावों को पास बैठा तीसरा व्यक्ति भी समझ नहीं पाता। यह सब क्रिया जो गुरु के मन के संकल्प से होती है। उसे ही दीक्षा कहा

जाता है। यह दीक्षा स्पर्श से, वाणी से, दृष्टि से भी दी जाती है। लेकिन हर स्थिति में संकल्प अवश्य रहता है, हर शिष्य का गुरु के साथ एक अलग शक्ति प्रवाह का सम्बन्ध रहता है।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆
जब शिष्य इस प्रकार की शक्ति तत्व दीक्षा ग्रहण करता है तो यह शक्ति जाग्रत होकर अन्तर्मुखी क्रिया प्रारम्भ कर देती है तब शिष्य के भीतर संचित संस्कार जो उसे कई प्रकार की विद्या, बाधाएं, कठिनाइयां, समस्याएं देते हैं, अपने आप क्षीण होना प्रारम्भ कर देती है। विषयों के प्रति चित्त का आकर्षण हट कर शक्ति के प्रति आन्तरिक आनन्द के प्रति शिष्य का आकर्षण बढ़ने लगता है और वह एक विशिष्ट आन्तरिक शक्ति अनुभव करने लगता है। जगत के इंडस्टर उसे छोटे लगने लग जाते हैं।

देहधारी समर्थ गुरु तो अपने आप में शिव का ही प्रत्यक्ष प्रकट स्वप्न है। सदगुरु के जाग्रत और प्रत्यक्ष दृश्य स्वरूप गुरुतत्व शिव स्वप्न ही है। यह शिव नहीं शिव की शक्ति है जो शिव भाव से प्रकट होकर चित्त में क्रियाशील हो रही है। समर्थ गुरु के समक्ष चित्त में शक्ति उसी प्रकार प्रकट और क्रियाशील होती है जैसे हम कोई बहती हुई नदी देखते हैं। शिव का पूर्णतत्वमय आत्मिक स्वरूप है जिससे शक्ति प्रकट होकर चित्त के सहयोग में आकर उसे क्रियाशील बनाती है।

जिस प्रकार पिता, अपने पुत्र पर स्नेह करता है, इसी तरह गुरु भी अपने शिष्य पर कृपा करते हैं। पिता मोह के वशीभूत, पुत्र पर स्नेह करता है, किन्तु गुरु, शिष्य के आध्यात्मिक कल्याण के लिए कृपा करते हैं। यह कृपा कई स्तरों में प्रकट होती है। कभी तो गुरु स्नेहपूर्वक व्यवहार से, शिष्य को युक्तियों से समझाते हैं तथा कभी डांटकर समझाते हैं, किन्तु दोनों अवस्थाओं में शिष्य की मंगल-कामना ही गुरु के अभिमुख रहती है। गुरु कभी शिष्य को अपमानित करके, उसका अहंकार तोड़ते हैं, तो कभी प्रशंसा करके उसका उत्साह बढ़ाते हैं। किसी शिष्य को उसकी भूमिकानुसार कठिन साधना में लगा देते हैं, तो किसी को अपेक्षाकृत कहीं सरल साधना में लगा कर ही संतोष कर लेते हैं। यह सब कृपा के ही विभिन्न स्वरूप है। साधक शिष्य को अपने मन में यह बात अच्छी तरह समझा लेना चाहिए, कि गुरु उसे किसी भी अवस्था में रख्ते, कैसा भी व्यवहार करें, किन्तु गरु चाहते

एकाग्र होकर अपनी भौतिक और पर्ण करने का प्रयास करता है।

मूर्ति के अन्दर, गहरे में उतर जाता है। फिर गुरु मूर्ति हो, या और देव उसे सारे संसार में उसे गुरु तत्व ही फैला दृष्टिगोचर होने लगता है। वृक्षों, लताओं, वन-पर्वतों, नदी-समुद्रों तथा प्रत्येक जीव जन्म में उसे गुरु तत्व ही खेलता दिखाई देने लगता है, अर्थात् सारा जगत् ही गुरु मूर्ति हो जाता है।

मनुष्य गुरु का एक वाचिक, मानसिक जप करता है। प्राचीन वेद साहित्य हो अथवा नवीन ज्ञान, विज्ञान के ग्रंथ हो इन सब का पठन-पाठन ज्ञान संचय के लिये ही तो करता है। जीवन में किया गया कोई भी कार्य जो संकल्प से युक्त होता है वह यज्ञ कहलाता है, अनुष्ठान कहलाता है और यह सब यज्ञ, अनुष्ठान, क्रिया शक्ति से अर्थात् गुरु तत्व से परिचय के लिये ही है और जब शक्ति से परिचय हो जाता है तो अन्तर्मन में अनायास ही शुद्ध भाव जाग्रत होने लगते हैं।

ऐसा साधक सहज, अनायास ही, जन्म-मरण से अतीत, अमरत्व प्राप्त कर लेता है। अमरत्व प्रयत्न किए से प्राप्त नहीं भी होता। अमरत्व तो जीव पर प्रभु की कृपा का, गुरु तत्व की अन्तर्मुखी क्रियाशीलता का सहज फल है। जब चित्त में जन्म-मरण के संस्कारों का बीज नाश हो जाता है, माया का आवरण पूरी तरह उत्तर जाता है, जगत् में गुरु तत्व को छोड़कर कुछ दिखाई नहीं देता, तब प्रभु कृपा से सहज अमरत्व प्रकट होता है।

साधना का वास्तविक प्रारम्भ गुरु कृपा प्राप्ति के पश्चात् ही प्रारम्भ होता है सबसे पहले गुरु चरणामृत की प्राप्ति, फिर समर्पण भाव से युक्त साधना और साधना से माया की निवृत्ति और उसके उपरान्त परमपद की प्राप्ति। इस क्रम में श्रद्धा, विश्वास, भावना और साधना और साधन की निरन्तरता का महत्वपूर्ण स्थान है जिसके अभाव में साधना खण्डित हो जाती है, खण्डित होने में देर नहीं लगती। श्रद्धा ही वह डोरी है जो पहले गुरु कृपा का अमृतपान करती है फिर साधक उसी को थामे साधना के मार्ग पर, जीवन पथ पर अद्वासर होता रहता है। गुरु मूर्ति का तात्पर्य गुरु का शरीर है। साधक के सामने आरम्भ में गुरुत्व तो होता नहीं, प्रत्यक्ष गुरु का शरीर होता है, इसलिए उसे, गुरु के भौतिक शरीर का निरन्तर ध्यान करने के लिए कहा गया है। फिर गुरु कृपा से उसे अपने अन्तर में गुरु तत्व की अनुभूति क्रिया के स्वप्न में होने लगती है, किन्तु यह अनुभूति भी गुरु तत्व की नहीं, उसकी क्रिया की होती है अतः गुरु का ध्यान करने के लिए, गुरु विग्रह, चित्र की आवश्यकता बनी रहती है। जैसे-जैसे साधक का साधन उज्ज्ञत होता जाता है, उसकी क्रिया में सूक्ष्मता तथा आनन्द की अनुभूति बढ़ती जाती है, किन्तु गुरु मूर्ति के ध्यान की आवश्यकता बनी रहती है। किन्तु यह ध्यान करते समय भी उनके मन में गुरु तत्व की भावना बनी रहती है। वह गुरु मूर्ति का ध्यान करते समय भी, गुरु शरीर में गुरुत्व को खोजता रहता है, उसे अनुभव करने का भाव बना ही रहता है। गुरु शरीर में गुरु तत्व की अनुभूति तब तक नहीं होती, जब तक साधक हृदय में गुरु तत्व के दर्शन नहीं कर लेता। फिर तो गुरु मूर्ति का ध्यान करते ही, गुरु

गुरु शब्द का शास्त्रिक अर्थ तो यही है कि जो अन्धकार को दूर करे और प्रकाश को फैला दें। जो गुरु ऐसा कार्य नहीं कर सकते वे गुरु होते हुए भी सदगुरु नहीं हैं, केवल शिक्षक ही हैं।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖
वास्तव में यह कार्य गुरु तत्व का ही है। जागृति के पश्चात् उसकी प्रथम किरण से ही अंहकार सूपी अंथकार हट जाता हैं साथक को यह प्रारम्भ से लगने लगता है कि अरे! वह तो युगों से भ्रम पाले था कि सब कुछ करने वाला मैं ही हूँ और जब गुरुतत्व जागृत होकर अपनी क्रियाशीलता से कुंसस्कार जन्म जन्म के दोष सूपी अंथकार को हटाता है। साथक में जब गुरु शक्ति प्राप्त होती है तभी वह पूर्व जन्म के दोषों का और जीवन के दोषों का निराकरण कर अपने शुद्ध अन्तकरणः में शांति को अनुभव कर सकता है।

गुरुतत्व का दीपक तो आत्मा में प्रकाशित है। लेकिन जन्मों-जन्मों के गहन अन्धकार से उस पर एक आवरण पड़ा हुआ है। गुरुतत्व शक्ति का कार्य यही है कि प्रकाशमान आत्मा पर पड़े आवरण को हटा कर साधक के मन में पुनः जाग्रति का भाव ले आये।

जैसा हम अपने भीतर भाव का अनुभव करते हैं वैसा ही भाव बाहर देखते हैं। मन में जब हिंसा, चोरी, शक, झूठ, उल्लंघन, कृपट भरा होता है तो पूरा संसार ऐसा ही दिखता है

लेकिन जब अन्तर मन में शुद्ध प्रकाश हो जाता है तो बाह्य सृष्टि भी श्रेष्ठ लगती है और यही बात जगद्गुरु भगवान् श्री कृष्ण ने गीता के अद्वाहरणे अध्याय में कहते हैं कि - हे! अर्जुन (शिष्य) तू सब धर्मों का त्याग कर मेरी शरण ग्रहण कर मैं तुझे पापों से मुक्त कर दूँगा।' इसमें जगद्गुरु कृष्ण का अंहकार नहीं है। इसमें जगद्गुरु श्रीकृष्ण के भीतर व्याप्त गुरुतत्व क्रियाशील होकर पूर्ण विश्वास के साथ कहते हैं कि तुम्हारे मन के कुसंस्कारों का मैं स्वयं क्षय कर सकता हूँ आवश्यकता इस बात की है कि मेरा गुरुतत्व तुम्हारी आत्मा में स्थापित हो एवं गुरुतत्व का तीव्र शक्ति द्वारा मिलन होना चाहिए।

गुरु में शक्ति है शिष्य में शक्ति है, साधक की शक्ति मन्त्र के माध्यम से जाग्रत प्रकट और क्रियाशील होती है तब इन क्रियाओं के माध्यम से मलीन संस्कारों का क्षय होने लगता है और साधक में एकाग्रता का भाव उदय होता है। जो शिष्य गुरुदेव को नमन, समर्पण करता है। उसका मन सदैव उल्लास से भरा रहता है। इसी उल्लासता को चित्त प्रसाद कहा गया है। इसके बिना व्यवहार, साधना, कार्य में कुशलता नहीं आ सकती। गुरु के प्रति नमन केवल बाह्य दिखावा ना होकर आन्तरिक, मानसिक होना चाहिये तभी मन में प्रसन्नता आती है। समर्पण करते ही साधक अपने आप को भार मुक्त अनुभव करने लगता है क्योंकि वह अपना भार गुरुदेव को सौंप देता है और सद्गुरुदेव इतने शक्तिमान होते हैं कि उन पर कोई बोझ नहीं पढ़ सकता। लेकिन इस क्रिया से समर्पण भाव से सम्पन्न करने से साधक की चिंता समाप्त हो जाती है।

गुरु की कृपा से साधक शिष्य की चेतना अन्तर्मुखी हो जाती है। बाह्य इन्द्रियों से कार्य करने की एक क्षमता है लेकिन जब गुरु की कृपा से भीतर की इन्द्रियां जाग्रत होती हैं तो चित्त में समाये सभी अंधकार दूर हो जाते हैं और साधक आत्मप्रकाशित हो उठता है। जो व्यक्ति यह क्रिया सम्पन्न कर सकता है, आसम्भ उसने की क्षमता स्वता है वही गुरु है।

गुरु के लिये तीन विशेषण कहे गये हैं।

१. चैतन्य, २. शाश्वत, ३. अनन्त।

गुरुदेव चैतन्य शक्ति है। गुरुदेव शाश्वत अर्थात् नित्य बने रहने वाले हैं। गुरुदेव की कृपा अबन्न सर्वव्यापक है।

गुरुदेव एक अनन्त अथाह सागर की भाँति है, जिसमें
सृष्टियां मछली की भाँति तैरती फिरती है। जीव तो इस
अनन्त सागर की थाह पाने में पृष्ठिया असमर्थ है। जिस
पर गुरुदेव की कृपा होती है। उसी के समक्ष गुरुदेव अपने
रहस्य प्रकट कर देते हैं। अपने अभिमान रूपी सिर को
काटकर, गुरुदेव के चरणों में चढ़ा देता है तब कही जाकर,
गुरुदेव प्रसन्न होते हैं।

गुरु जब, गुरु मन्त्र प्रदान करते हैं तो उस पर पूर्ण स्वप्न से अपनी चित्त शक्ति लगानी चाहिये और मन्त्र जप का मानसिक संकल्प हो और उस पर बुद्धि को एकाग्र करें। यदि मन्त्र का संकल्प तो ले लिया लेकिन बुद्धि किसी अन्य विषयों के विचार में लगी है तो चित्त गुरु मन्त्र पर एकाग्र नहीं हो पायेगा।

जब गुरुत्व अन्तर में प्रत्यक्ष क्रियाशील हो जाए, उसके प्रति शिष्य में प्रेम तथा समर्पण का भाव जाग्रत हो जाता है। भक्ति किसी क्रिया या अभ्यास का नाम नहीं है। हृदय की एक अवरथा विशेष है। गुरु शक्ति की क्रियाशीलता भक्ति नहीं है, उसके प्रति हृदय का भाव ही भक्ति है। जो कि गुरुसेवा से ही प्राप्त किया जा सकता है।

गुरु तो शिष्य को उसकी श्रद्धा, उसकी मान्यता, उसके चित्त की स्थिति, उसकी भावभूमि के अनुसार कोई भी देवता का मंत्र दे सकते हैं। परम्परागत एक ही गुरु मंत्र प्रदान कर सकते हैं लेकिन शिष्य का कर्तव्य है कि मंत्र के अक्षर समूह पर अपना पूरा चित्त एकाग्र करना चाहिये।

गुरुदेव देशकाल की सीमा से रहित है, सदैव ही पवित्र,
चैतन्य, शुद्ध, आनन्द रूप मायातीत विराट है, जिनकी
कृपा वहीं जान सकते हैं जो उनकी शरण में नमन भाव से
जाते हैं इसलिये शिष्य-साधक के लिये गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु,
महेश एवं सभी देवी-देवता, शक्ति है।

जीवन की पूर्णता के लिये अवश्यक है

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

शक्तिपात्र समये विचारणं प्राप्तमीश न करोषि कहिंचित्।
अद्य मां प्रति किमागतं यतः स्वप्रकाशन विधौ विलम्बसे।

हे सद्गुरु! आप शक्तिपात्र के समय अर्थात् जीव के प्रति कृपा करते समय न्यायतः उचित होने पर भी कभी पात्र-अपात्र का विचार नहीं करते। तो फिर इग्नेश मुझमें उसा नया क्या हुआ है कि आप मेरे प्रति आत्म-प्रकाशन (पूर्णता देने हेतु) में विलम्ब कर रहे हो?

श्री सद्गुरु द्वारा शक्तिपात्र अथवा कृपा कब और क्यों को गलाता है। वैसे ही एक ही परमेश्वर मोक्ष के अधिकारी होती है? यह एक प्रश्न है, इसके बारे में विभिन्न मत हैं। कोई पक्वमल जीव को मोक्ष देने की व्यवस्था करता है और बन्धन कहते हैं कि ज्ञान का उदय होने से शक्तिपात्र होता है। अज्ञान योग्य अपक्व मल जीव के मलपाक के लिए बन्धन की व्यवस्था दूर होकर शक्तिपात्र होता है। ज्ञान रूपी अग्नि सभी प्रकार के करता है।

कर्मों को भस्म कर शक्तिपात्र की भूमि की रचना करती है।

शक्तिपात्र का वास्तविक कारण मलपाक है -

किरणागम में लिखा है -

अनेक भविक कर्म दृश्य बीज मिवाहिनाभिः।

भविष्यदपि संरुद्धं येनेदं तद्धि भोगतः॥

अर्थात् बहुत जन्मों का संचित कर्म अग्नि में भुने बीज की तरह दृश्य होता है। भावी कर्म की फल देने वाली शक्ति रुद्ध होती है, और जिस कर्म से यह जन्म हुआ है, उसी कर्म यानी प्रारब्ध कर्म के भोग द्वारा क्षय होता है।

मलपाक से अनुग्रह-शक्तिपात्र होता है। शक्तिपात्र होते ही मल का आवरण हट जाता है और नित्य सत्य विशुद्ध सर्वज्ञत्व आदिमय स्वरूप प्रकाशित होता है, अर्थात् शान्त और निर्मल आत्मा के स्वरूप का साक्षात्कार होता है। एक ही परमेश्वर जीव का बन्धन भी करते हैं, मोक्ष भी करते हैं। जिस प्रकार एक ही सूर्य अपने सान्तिध्य में गलने योग्य मोम जैसे पदार्थों

मलपाक से उपकार और अपकार रूप में साम्य बुद्धि होती है तब मोक्ष होता है। सभी प्रकार के कर्म का साम्य होने से विज्ञान कैवल्य मात्र सिद्ध होता है, मोक्ष नहीं होता। यथार्थ कर्म साम्य का कारण मलपाक है। इसीलिए मलपाक से दीक्षा के प्रभाव से मोक्ष मिलता है। जीव (पशु) आत्मा मल, माया और कर्म पाश में बद्ध होता है और सद्गुरु कृपा करके उसके इन पाशों या बन्धनों को छिन्न करके अपने जैसा कर लेते हैं।

किन्तु जब तक पशु अर्थात् जीव के चैतन्य अवरोधक आदिमल का अधिकार निवृत्त नहीं होता तब तक अनुग्रह की प्रवृत्ति ही नहीं होती।

मृगेन्द्र आगम में लिखा है -

तमः शक्त्यथिकारस्य निवृत्ते च परिच्युते।

व्यनक्ति दृक् क्रियाज्ञिन्त्यं जगद्बन्धुरणो शिवः॥

तमः शक्ति, रोध शक्ति या तिरोधान का दूसरा नाम है। जब तक इस शक्ति का अधिकार रहता है, तब तक उद्धार का कोई

उपाय नहीं। आवरण शक्ति के अधिकार की निवृत्ति होने पर मिल जाते हैं।

शक्ति का क्षय होता है, वैसे में परम कृपालु सद्गुरु रूपी परमेश्वर ही पशु या बद्धजीव के प्रति अपनी अनन्त ज्ञान क्रिया अभिव्यक्त करते हैं, यानि उसे मुक्त कर देते हैं। अनादि मल धीरे-धीरे पकता है परिणाम प्राप्त करता है। परिपक्वता पूर्ण हो जाने पर उसकी निवृत्ति का समय आता है।

जैसे - आंख में छाला पड़ने से अस्त्रोपचार द्वारा उसे दूर करना पड़ता है। परन्तु जब तक वह पूरी तरह पक नहीं जाता अस्त्र का प्रयोग हो नहीं सकता। इसी तरह अपक्व मल को खींच कर हटाने की कोशिश करने से जीव का सर्वनाश होता है। इसलिए मंगलमय भगवान रूपी सद्गुरु इस तरह से बल प्रयोग नहीं करते। वह मलपाक के अवसर की प्रतीक्षा करते हैं, और उसके पक जाने पर दीक्षा द्वारा उसे हटाते हैं।

अनेक जन्मों की वासना और पुण्य के प्रभाव से जिस किसी समय या जिस किसी आश्रम में रहते हुए अचिन्त्य भग्योदय के कारण द्विसी-किसी आत्मा की चैतन्य शक्ति का अनादि आवरणभूत मल कुछ पकने पर उसी के अनुसार शक्तिपात होता है। प्रचलित भाषा में इसी को सद्गुरु कृपा कहते हैं। इसकी मात्रा के अनुसार भगवान के प्रति भक्ति और श्रद्धा उत्पन्न होती है। तब शक्तिपात के अनुरूप दीक्षा का अवसर आता है। शक्तिपात के तारतम्य से दीक्षा का भेद होता है।

शक्तिपात कर्मसाम्य, मलपाक प्रभृति के अधीन नहीं है। वह निरपेक्ष और स्वतंत्र है। पुराण आदि में भी ऐसा मत पाया जाता है -

‘तस्येव तु प्रसादेन भक्तिः सत्पद्यते नृणाम्’

पर और अपर भेद से शक्तिपात मुख्यतः दो प्रकार का है। पर और अपर शक्तिपात का पूर्ण अपूर्ण कृपा कहा जाता है सद्गुरु के सिवाय पूर्ण कृपा और कोई नहीं कर सकता। अपूर्ण कृपा ब्रह्मा आदि देव भी कर सकते हैं, और किया करते हैं, जिसके प्रभाव से कृपापात्र जीव ब्रह्मा आदि के अधिकार के अन्तर्गत नाना प्रकार के भोग और अधिकार पा सकते हैं परन्तु पूर्णत्वया परमेश्वरत्व नहीं पा सकते।

युरुब्रह्मा युरुर्विष्णु युरुर्देवो महेश्वरः।

युरुः सरक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री युरवे नमः॥

सद्गुरु या पूर्ण ब्रह्म की कृपा से मूल अज्ञान-रूप-आणव मल निवृत्त होता है और पूर्णत्व की अभिव्यक्ति होती है। सद्गुरु रूपी ब्रह्म के अलावा माया - अन्तर्गत अधिकारी पुरुष की कृपा से पूर्णत्व लाभ नहीं हो सकता। सिर्फ उत्कृष्ट भोग आदि

शक्तिपात विचित्र है, इसलिए उसका अधिकार विचित्र है। समयी (दीक्षा), साधक (दीक्षा), आचार्य (दीक्षा) यह सब अधिकार भेद विभिन्न प्रकार के शक्तिपात से होता है। यह सब अधिकार समष्टि रूप में या अलग-अलग भी हो सकता है। यह सब किसी को पहले होता है, यानी पहले समयी का अधिकार पाकर पुत्रक-भाव प्राप्त होता है, उसके बाद आचार्य भाव में स्थिति होती है। परन्तु किसी-किसी के जीवन में यह सब बिना किसी क्रम के ही आते देखा गया है। जैसे कोई पुरुष समयी अवस्था प्राप्त किये बिना ही पुत्रक अवस्था पा लेता है अथवा समयी और पुत्रक अवस्थाओं को पार करे आचार्य पद (दीक्षा) पर पहुंच जाता है।

शक्तिपात के मात्रा मंत्र होने से जीव माया अधिकार प्राप्त करता है और रुद्रांश भाव लाभ करता है। उसके बाद सद्गुरु की विशिष्ट कृपा से पुत्रक दीक्षा के बाद पूर्णत्व पर पहुंच जाता है। इसका नाम ‘समयी’ है। कोई पहले भोग और ऐश्वर्य प्राप्त करके वैराग्य से परम पद में स्थित होता है। इनमें भी योग्यता भेद से कोई शीघ्र और कोई विलम्ब से लक्ष्य को प्राप्त करता है। इनका नाम ‘साधक’ है।

शक्तिपात - तीव्र, मध्यम और मन्द तीन प्रकार का होता है। इसका प्रत्येक भेद फिर तीव्र, मध्यम और मन्द भेद से तीन अलग-अलग है। तीन शक्तिपात के तीन भेद ये हैं - तीव्र-तीव्र, मध्य तीव्र और मन्द तीव्र।

अतः प्रचलित शास्त्रीय परिभाषा के अनुसार कहा जा सकता है कि तीव्र-तीव्र शक्तिपात से प्रारब्ध सहित कर्मों का दाह होता है, और मध्य तीव्र शक्तिपात से प्रारब्ध के अलावा बाकी कर्म जल जाते हैं। दूसरे शब्दों में यह कि तीव्र-तीव्र शक्तिपात वशतः अज्ञान का आवरण अंश दोनों एक साथ (जैसा तीव्र-तीव्र मात्रा में होता है) अथवा क्रमशः (तीव्र-तीव्र के मध्य और मन्द मात्रा में होता है) और मन्द तीव्र शक्तिपात के प्रभाव से अज्ञान का केवल आवरण-अंश नष्ट हो जाता है विक्षेप-अंश शेष रहता है।

शास्त्रों में गुरु को उपाय और शास्त्र को उपेय कहा गया है। गुरु साक्षात् परमेश्वर रूप होने पर भी इस स्थिति में उपाय भूत शास्त्र आदि का श्रवण, अध्ययन आदि का आदर किया जाता है। प्रत्येक संस्कार के अनुसार उपकरण भी नाना प्रकार के होते हैं। रोग भिन्न हो तो दवा भी भिन्न होती है। इसी तरह चित्त भिन्न होने से शास्त्र भी भिन्न होता है। तात्पर्य यह है कि सद्गुरु शिष्य की योग्यता देखकर उसके अधिकार के

अनुसार उस पर अनुग्रह करते हैं।

जब सद्गुरु साधक के मायापाश को दीक्षा रूपी अस्त्र से काटते हैं, जिस समय साधक आगम के द्वारा सत्यासत्य भावना से भवित होते हैं, वास्तव में उसी समय का प्रतिभा तत्व खुल जाता है।

शास्त्रों के अनुसार -

तदागम वशात् साध्यं गुरुवक्त्रान्
महाधिया।
शिवशक्ति करा-वेशात् गुरोः
शिष्यप्रबोधकः॥

अर्थात् यह ज्ञान आगम और गुरु मुख से पाया जा सकता है। गुरु के चैतन्य शक्तिमय हस्त स्पर्श से अर्थात् गुरु रूपी शिव की शक्ति रूपी किरण के द्वारा शिष्य प्रबुद्ध होता है।

राख से ढकी आग जैसे मुंह की फूंक से जल उठती है, जैसे ठीक समय बोने-सीचने से बीज में अंकुर, पल्लव आदि निकल आते हैं, उसी प्रकार गुरु उपदिष्ट क्रिया से प्रातिभ ज्ञान अभिव्यक्त होता है।

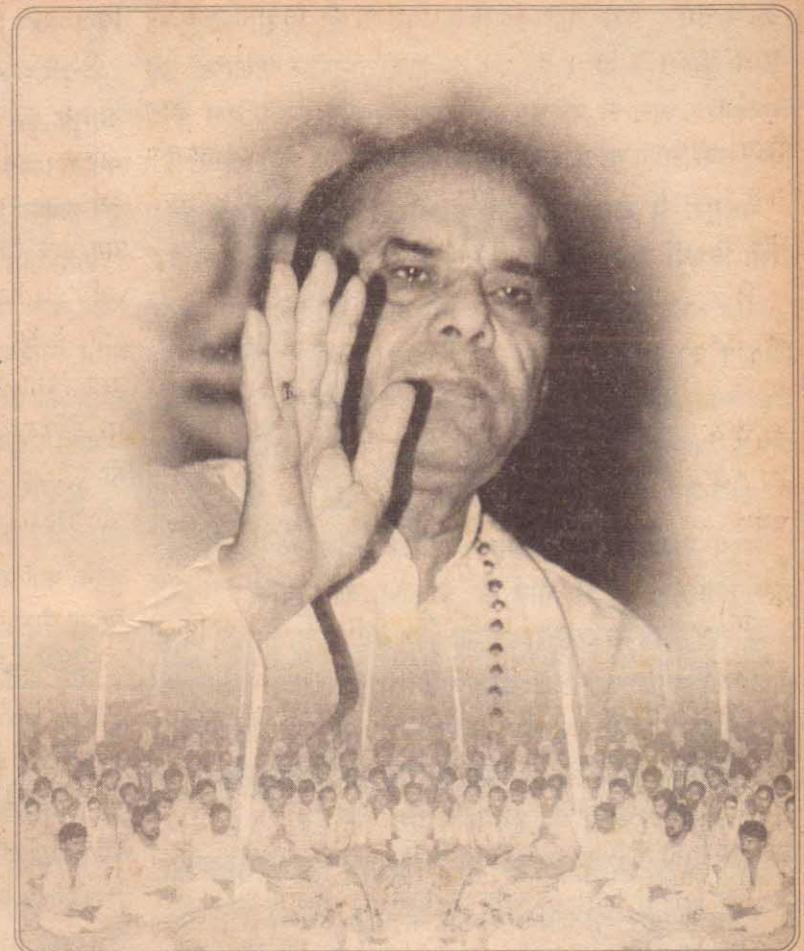
शक्तिपात के फलस्वरूप संकोच दूर हो जाने से साधक का नित्य सिद्ध स्वभाव जाग उठता है।

मध्यतीव शक्तिपात के निम्नलिखित लक्षण शास्त्र में हैं -

1. भगवान् (सद्गुरु) में निश्चल भक्ति।
2. मंत्रसिद्धि, जिसके प्रभाव से श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होता है।
3. सभी तत्वों को आयत्त करने का सामर्थ्य।
4. आकस्मिक रूप से सभी शास्त्रों का अर्थ ज्ञान, आदि आदि।

वे सब लक्षण धीरे-धीरे उभरते हैं। शक्तिपात के तारतम्य के अनुसार किसी साधक में सबका ही प्रकाश होता है, तो किसी साधक में मात्र किसी एक का ही प्रकाश होता है।

महोपनिषद् अध्याय 2 में लिखा है कि शुक्रदेव ने जन्मकाल में ही विवेक ज्ञान को प्राप्त किया था। पातञ्जल ने दर्शन में विवेक, ज्ञान को प्राप्त किया था। पातञ्जल दर्शन में विवेक ज्ञान के स्वरूप वर्णन प्रसंग में कहा गया है कि यह सर्व विषयक, सर्वथा विषयक और क्रमहीन अनौपदेशिक तारक



ज्ञान है। यह ज्ञान शुक्रदेव जी के विवेक से स्वतः स्फुरित हुआ था।

जरत्मात्रेण मुनिराद् वत् सत्यं तवात्मवान्।
तेनासौ स्वविवेकेन स्वव्यमेव महामन्त्रः॥
प्रविचार्य चिरं साधु स्वात्मनिश्चयमात्म वान्॥

इस ज्ञान के प्रभाव से उन्होंने गुरु के उपदेश के बिना ही परमार्थ तत्व का अनुभव किया था और उनकी भोग-वासना निवृत्त हो गई थी। परन्तु उस ज्ञान के दृढ़ नहीं होने से उनके मन में शान्ति नहीं थी। अपने ज्ञान पर उन्हें विश्वास नहीं था। इसीलिए अपने पिता व्यास देव के आदेश से वह विदेह राजा जनक के पास जाने को विवश हुए थे। अतः सिद्ध होता है कि सद्गुरु की प्राप्ति आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

मन्दतीव शक्तिपात के प्रभाव से सद्गुरु लाभ की इच्छा उत्पन्न होती है। शक्तिपात होने के बाद जब किसी में मंद प्रतिभ ज्ञान उत्पन्न होता है उस समय यह जानने की इच्छा होती है कि तत्व क्या है, और उसका अपरोक्ष ज्ञान किसे कहते हैं? इसके बाद सद्गुरु को पाने की इच्छा होती है और

यथा समय उसकी प्राप्ति होती है। पर किसी-किसी को ऐसा ग्रहण करके अन्त में शिवत्व पाता है। भी हो जाता है कि शक्तिपात के बाद जागतिक उपदेष्टा या उपरोक्त कथन से यह समझ में आता है कि शक्तिपात या व्यवहारिक गुरु से परिचय हो जाता है और उसके बाद कुछ सदगुरु की कृपा के बिना कोई जीवन पूर्णत्व नहीं प्राप्त कर सकता। इतना ही नहीं, वह पूर्णत्व के पथ पर प्रवेश भी नहीं दिनों तक आदि के कारण सदगुरु को पाने की इच्छा होती है। सकता। इतना ही नहीं, वह पूर्णत्व के पथ पर प्रवेश भी नहीं सदगुरु से दीक्षा प्राप्त करके जीव शिवत्व पाता है और कर सकता।

सदगुरु से दीक्षा प्राप्त करके जीव शिवत्व पाता है और सभी विषयों के तत्त्वज्ञान से सम्पन्न हो जीवन मुक्त होता है।

तीव्र मध्य शक्तिपात के बाद जो दीक्षा होती है उसे अपने शिवत्व की सुदृढ़ उपलब्धि नहीं होती। दीक्षा के साथ-साथ शिव भाव होता जरूर है पर उसका स्पष्ट अनुभव नहीं होता। किन्तु एकान्त में उसका शिव सायुज्य निश्चित है। इस दीक्षा का शास्त्रीय नाम ‘पुत्रक-दीक्षा’ है।

मध्य-मध्य और मन्द-मध्य शक्तिपात से इष्ट प्राप्ति की उत्सुकता होते हुए भी भोग की आकंक्षा की निवृत्ति नहीं होने के कारण दीक्षा से उस प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस दीक्षा को बहुत स्थानों में ‘शिवधर्मी साधक दीक्षा’ कहा गया है। इसके प्रभाव में इष्ट तत्व आदि में योजना स्थापित होती है और योगाभ्यास आदि के कारण उस तत्व सम्बन्धी सभी भोग्य को भोग करने का अधिकार पैदा होता है।

मध्य-मध्य शक्तिपात में भोग वर्तमान देह में रहते हुए ही होता है और भोग की समाप्ति के बाद देहान्त में शिवत्व प्राप्त होता है। परन्तु मन्द-मध्य शक्तिपात में वह भोग वर्तमान देह में न होकर देहान्तर में होता है। उसके बाद शिवत्व मिलता है।

तीव्र-मध्य, मध्य-मन्द और मन्द-मन्द ये तीन प्रकार के शक्तिपात भोग की आकांक्षा जब प्रधान होती है, तब होते हैं। इस प्रकार शक्तिपात के इन मन्द अधिकारियों के चित्त में शिवत्व लाभ की उत्सुकता अधिक नहीं रहती। इनमें एक के बाद दूसरे भोग की लालसा अधिक होती है। ऐसे में 'लोक-धर्मी' दीक्षा आवश्यक होती है। तीव्र-मन्द शक्तिपात होने से साधक अभीष्ट भुवन में मणिमादी ऐश्वर्य का भोग करते-करते ऊर्ध्वं गति लाभ करता है।

परन्तु शक्तिपात्र और भी कम होने से अर्थात् मन्द-मन्द मात्रा में होने से किसी भुवन में कुछ समय तक भोग्य पदार्थ का उपयोग करके उस भुवन में अधिष्ठाता से दीक्षा ग्रहण करके शिवत्व को पाता है।

किन्तु मन्द-मन्द शक्तिपात में उस भूवन में सालोक्य, सामीप्य और सायुज्य प्राप्त करके दीर्घकाल तक भोग का आस्वादन करते-करते उस भवन के नायक भवनेश्वर से दीक्षा

ग्रहण करके अन्त में शिवत्व पाता है।
उपरोक्त कथन से यह समझ में आता है कि शक्तिपात या सदगुरु की कृपा के बिना कोई जीवन पूर्णत्व नहीं प्राप्त कर सकता। इतना ही नहीं, वह पूर्णत्व के पथ पर प्रवेश भी नहीं कर सकता।

शक्तिपात के समय योग्यता का विचार नहीं होता। परन्तु स्वभावतः योग्यता की मात्रा के अनुसार ही शक्तिपात की मात्रा निश्चित होती है। पर मात्रा चाहे जो भी हो, सद्गुरु शक्ति की ऐसी महिमा है कि एक बार वह तो जीव को सद्गुरु धाम में पहुंचाये बिना शांत नहीं होती, इसमें कोई सन्देह नहीं कि सद्गुरु के रूप में ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। विवेक और ज्ञान का विकास होता है। प्रत्येक जीवन को पूर्णत्व प्राप्त करने का अधिकार है, पर सभी को यह प्राप्त नहीं होता, परन्तु मार्ग का परिचय सभी को जानना चाहिए।

शिव होने पर भी तब तक पूर्णत्व नहीं आता जब तक शिव होने का बोध नहीं होता। आद्यशंकराचार्य को भी इस का ज्ञान प्राप्त करने हेतु ओकारेश्वर में अपने सद्गुरु के पास आना पड़ा। निष्काम कर्म से जब चित्त निर्मल हो जाए तब सद्गुरु की परमेश्वरी शक्ति के सहारे आगे बढ़ना चाहिए। इसी को कृपा कहते हैं। सद्गुरु देव की महाकृपा की यही विशिष्टता है जैसे बच्चे के रोने पर माँ को आना पड़ता है।

सदगुरु द्वारा शक्तिपात्र प्राप्त करने हेतु निम्न लिखित सामग्रियों की आवश्यकता होती है। सदगुरु प्रदत्त ‘श्री पूर्ण गुरु रहस्य सिद्धि रुद्राक्ष माला’, जो कि दीक्षा या शक्तिपात्र के समय गले में धारण करने हेतु आवश्यक है, साथ ही ‘निखिलेश्वरानन्द सिद्धि सिद्धाश्रम गुटिका’। गुरु यंत्र चित्र में गुरुदेव का संक्षेप में पूजन कर के स्फटिक माला से, यदि दीक्षित हो तो निम्न मंत्र का जप करें -

॥ॐ परम तत्त्वाय ज्ञानायणाय गुरुभ्यो लभः ॥

यदि अपेक्षित है, तो निम्न मंत्र का जप करें -

ॐ नमो नारायणाय

अथवा

ॐ नमः शिवाय

मंत्र का 16 माला जप करें।

यह नित्य प्रति बिना नाग किये करें तो इस प्रकार की साधना सम्पन्न करके आप प्रत्येक दीक्षा और साधना का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।



पुण्य वाहना धवला छीर्ति द्विवक्षा

21 अप्रैल

सद्गुरुदेव निखिल जन्म दिवस जो अहोभाव्य दिवस है

इस दिव गुरु पूजन से एकाकाट हो, अद्गुरुदेव से

यदा-यदा ही धर्मस्य जलानिर्भवति भारत!

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहं

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युजे-युजे।

श्रीमद्भगवद्गीता का यह श्लोक बचपन से ही मेरे मन में अनेक प्रश्नों को जन्म देता रहा है - यदि भगवान्, अद्वितीय महापुरुष इस पृथ्वी पर अवतरित होते हैं, फिर अर्थम्, अत्याचार

और व्यभिचार का बोलबाला क्यों बना रहता है? कभी इस प्रश्न का उत्तर मैं अपने आपको नहीं दे सका - लेकिन सदैव इसका उत्तर प्राप्त करने की जिज्ञासा मेरे मन-मस्तिष्क को व्यथित करती ही रही। जिसके बारे में पता चलता, कि वह व्यक्ति ज्ञानवान् है, मैं अपनी जिज्ञासा लेकर उसके पास पहुंचती

- लेकिन उसकी बातों से कभी संतुष्टि प्राप्त नहीं हुई।

हारकर मैं स्वयं ही इसका उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास करने लगी और जब 'युग' और 'युगपुरुष' दोनों को विवेचनात्मक रूप में देखना शुरू दिया, तो स्वतः अपनी जिज्ञासा के बादलों को छंटते हुए अनुभव किया।

पहली बात तो मेरे मानस में यह स्पष्ट हुई, कि युगपुरुष का जन्म भी एक सामान्य बालक की तरह ही होता है, चाहे वे योगश्वर श्रीकृष्ण हों, चाहे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अथवा रामकृष्ण परमहंस या फिर गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी या

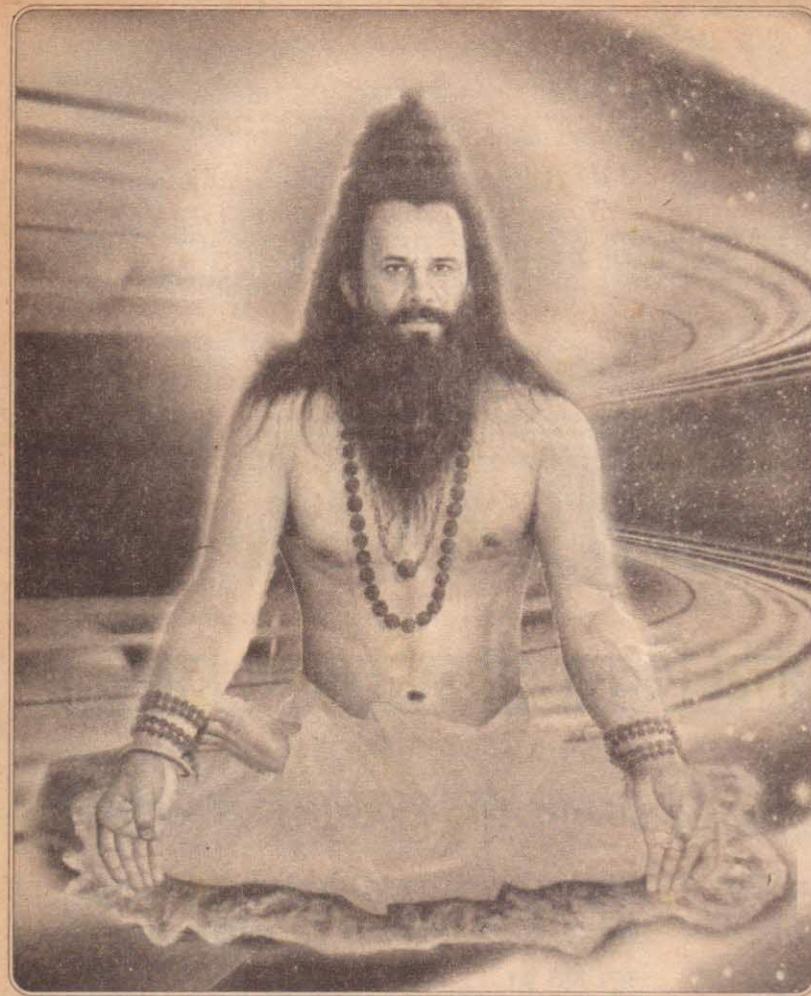
गोरखनाथ, विशुद्धानन्द या भगवत्पाद आद्यशंकराचार्य। सभी लोग मां के गर्भ में पलते हैं और सामान्य बालक की तरह जन्म लेते हैं।

- यदि ऐसा है, तो इनके जन्म को अवतरण क्यों कहा जाता है? ऐसी कौन सी विशेषताएं इनके अन्दर हैं, जिसके कारण ये अवतारी पुरुष कहे जाते हैं?

- ठीक यही क्रिया युगपुरुषों के संदर्भ में भी घटित होती है, और उनके पूर्वजन्मकृत सुसंस्कारों की श्रृंखला ही उन्हें युगपुरुष बनाने के सम्मान से विभूषित करा देती है... और जब कोई व्यक्ति युगपुरुष बन जाता है, तो फिर उसका जन्म साधारण जन्म न होकर अवतरण बन जाता है।

... और युगपुरुष का तो प्रत्येक वाक्य, प्रत्येक शब्द एक तीव्र हथौड़े के प्रहार जैसा होता है, जिससे हमारा, पूरे समाज का अंहकार खण्डित होता है। यही कारण है कि हमने, इस पूरे समाज ने कभी भी जीवित व्यक्तित्व को पहचानने का प्रयास नहीं किया और तो और सदैव ऐसे अद्वितीय पुरुषों को प्रताड़ित ही करते रहे, तरह-तरह से उनको सताते ही रहे और इसी कारण तो सुकरात को विष पीना पड़ा, जीसस को क्रॉस पर टांग दिया गया।

वर्तमान युग को यदि देखें तो, हम दिन-प्रतिदिन भै



की अंधी भागदौड़ में फंसकर एक बार फिर वही पुरानी कुत्सित क्रिया की पुनरावृत्ति ही तो कर रहे हैं, क्योंकि इस बार फिर 2500 वर्षों बाद इस पृथ्वी पर एक युगपुरुष ने अवतार लिया है। उसी श्रृंखला की एक दृढ़ संकल्प युक्त कड़ी हमारी आंखों के सामने दृश्यमान है, लेकिन हम एक बार फिर अपनी आंखों पर कुर्क, संदेह और भ्रम की दुष्प्रवृत्ति से आबद्ध हो कर खड़े हो गए हैं; यदि इस अवैचारिक दुष्प्रवृत्ति को बदलने में समर्थ नहीं हो सके, तो एक बार फिर हम सब कुछ प्राप्त करके भी सब कुछ खो बैठेंगे। एक बार फिर हमारे सामने पश्चाताप करने के अलावा कुछ भी शेष नहीं रह पायेगा।

आज सद्गुरुदेव को सिद्धाश्रम शमन किये करीब सात वर्ष व्यतीत हो गये हैं। लेकिन इन सात वर्षों में हमने क्या खोया, क्या पाया यह विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

21 अप्रैल निखिल जयंति के अवसर पर भावुक होकर अश्रु बहाने का समय नहीं है यह तो हमें उस महान् दिवस का

स्मरण करता है जिस सिद्ध दिवस पर सद्गुरुदेव का इस धरा पर आगमन हुआ था। हम सद्गुरुदेव का पूजन कर सकते हैं। उनका ध्यान कर सकते हैं, उनके ज्ञान का बार-बार स्मरण कर सकते हैं। 21 अप्रैल का पूजन तो प्रतीक मात्र है। शुद्ध रूप में तो पूजन यही होगा कि हम उनके ज्ञान को अपने हृदय में उतारे और उनके द्वारा प्रज्ज्विलित ज्ञान जोत को पूरे भारतवर्ष में कश्मीर से कन्या कुमारी तक, कच्छ से त्रिपुरा तक सब ओर फैला दें। गुरुदेव के ज्ञान से प्रत्येक ग्रह जगमग ज्योतिवान हो जाये। सद्गुरुदेव शाश्वत है, सत्य है, निखिल है, संसारिक देव से भले ही अलग है लेकिन साधकों के शिष्यों के हृदय में विराजमान है। उनका विधिवत् पूजन करना हम सबका कर्तव्य है।

गुरु पूजन

सामग्री - गुरु कृपा माल्य, स्फटिक माला, श्रीयत्व फल (27), गुरु चित्र, गुरु यंत्र।

दिवस - 21 अप्रैल 2005

समय - प्रातः 4 से 8 बजे के मध्य

- दोपहर 11.30 से 2.30 तक

- सांय 9.25 से 12.15 तक

इन तीनों विशिष्ट मुहूर्तों में से किसी भी मुहूर्त में आप साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।

विधि - 21 अप्रैल से एक दिन पूर्व ही पूजा कक्ष को धोकर स्वच्छ करें तथा फूल मालाओं से सुसज्जित करें। पूजन के लिए एक गुलाब के पुष्पों की माला अथवा अन्य कोई सुगन्धित माला ले आएं तथा अपनी सामर्थ्यानुसार फल तथा मिठाइयां ले आएं। 21 अप्रैल को विविध सुस्वादु भोजन बनाएं।

निर्धारित मुहूर्त में अपने आसन पर आकर बैठ जाएं तथा पूजन प्रारम्भ करें।

पूजन क्रम -

सर्वप्रथम बाएं हाथ में जल लेकर उसे दाईं हथेली से ढक-कर निम्न मंत्र पढ़ें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

इस अभिमंत्रित जल को दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने सम्पूर्ण शरीर पर छिड़कें, जिससे आन्तरिक और बाह्य शुद्धि हो।

आचमन

मन, वाणी, अन्तः करण की शुद्धि के लिए पंचपात्र से आचमनी द्वारा जल लेकर तीन बार निम्न मंत्रों के उच्चारण के साथ पीयें -

ॐ अमृतोपस्त्ररणमसि स्वाहा ।

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा ।

ॐ सत्यं वशः श्रीमवि श्रीः श्रवतां स्वाहा ।

शिखा बन्धन

तदुपरान्त शिखा पर दाहिना हाथ रखकर दैवी शक्ति की स्थापना करें, जिससे साधना पथ में प्रवृत्त होने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्राप्त हो सके -

चिद्रूपिणी महामाये दिव्य तेजः समन्विते ।

तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजो वृद्धिं कुरुष्व मे ॥

न्यास

इसके उपरान्त मंत्रों के द्वारा अपने सम्पूर्ण शरीर को साधना के लिए पुष्ट व सबल बनाएं। प्रत्येक मंत्र उच्चारण के साथ सम्बन्धित अंग पर जल का स्पर्श करें -

ॐ वाइग मे आस्येऽस्तु - मुख को स्पर्श करें

ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु - नासिका के दोनों छिद्रों पर

ॐ अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु - दोनों नेत्रों पर

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु - दोनों कानों पर

ॐ बाह्नोर्मे बलमस्तु - दोनों बाजुओं पर

ॐ अरिष्टानि मे अंगानि सन्तु - सम्पूर्ण शरीर पर

दिशा बन्धन

बाएं हाथ में जल या चावल लेकर, दाहिने हाथ से चारों दिशाओं में व ऊपर - नीचे छिड़के -

ॐ अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमि संस्थिताः ।

ये भूता विध्नकर्त्तरस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्

सर्वेषामविरोधैन् पूजाकर्म समारभे ।

गणेश स्मरण

तपश्चात् गणपति के बारह नामों का स्मरण करें, प्रत्येक कार्य करने के पूर्व भी इन बारह नामों का स्मरण सिद्धिदायक माना गया है -

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतु जपाद्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।

द्रादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्जमे तथा ।

संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

गणपति पूजन के पश्चात् गुरु ध्यान करें

ध्यान

येनोदात्ततपः चयेन सततं सन्यस्तमाभूषितं,

ब्रह्मानन्द रसेन सित्तमनसा शिष्याश्च संभाविताः ।

ब्रह्मणः नवराज रंजितवपुः हस्तामलमकवद्धृतं

सोऽयंभूतिविभूषितः गुरुवरः निखिलेश्वरः पातु मां ।

श्री ब्रह्मस्वरूपाय निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि ।

श्री गुरुपादुका उच्चारणम्

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो

नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।

आचार्यसिद्धे श्वपादुक भूम्यो

नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः ॥१॥

एंकार हींकाररहस्ययुक्त

श्रीकारगूढार्थ महाविभूत्या ।

आंकारमर्म प्रतिपादिनीभ्यां

नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥२॥

होत्राज्ञिनहौत्राज्ञिनहविष्यहोत् -

होमादिस्वर्कृ तिभासमानं ।

यद् ब्रह्म तद्रोथवितारिणीभ्यां

नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥३॥

कर्मादिसर्वद्वजगारुडभूम्यां

विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्यां ।

बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां

नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥४॥

अन्तस्तसारस्त्रद्रत्तर

नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां ।

जाङ्ग वानिधसंशोषणवाङ्गवाभ्यां

नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥५॥

आहान

सर्वात्मने श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः
आहानं समर्पयामि।

आसन

शिष्यप्रियाय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः
आसनं समर्पयामि।

अर्ध्य स्नान

विज्ञानात्मने श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः
परायं, अर्ध्यं, स्नानं च समर्पयामि।

वस्त्र, चन्दन, अक्षत

तत्त्वमस्यादि लक्ष्यात्मने श्री निखिलेश्वराय
गुरुभ्यो नमः पुष्पं, बिल्वपत्रं, पुष्पहारं च
समर्पयामि।

पुष्प, बिल्वपत्र

परमानन्दरूपाय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः
पुष्पं, बिल्वपत्रं, पुष्पहारं च समर्पयामि।

धूप दीप

गुणमयातीताय श्री निखिलेश्वराय गुरुभ्यो नमः
धूपं, दीपं, नैवेद्यं, च निवेदयामि।

(एक थाली में समस्त भोज्य पदार्थ तथा फल को सजा कर
भोजन ग्रहण करने का निवेदन करें।)

ताम्बूल

देहध्यासातीताय श्री परमपुरुषाय निखिलेश्वराय
गुरुभ्यो नमः ताम्बूलं, दक्षिणा द्रव्यं च समर्पयामि।

नीराजन

कालमयातीताय सर्वदेवमयाय श्री निखिलेश्वराय
गुरुभ्यो नमः नीराजनं, प्रदक्षिणां च समर्पयामि।

उपरोक्त मंत्रों का उच्चारण करते हुए क्रमानुसार उसमें वर्णित
सामग्रियों को श्री गुरुदेव के सम्मुख अर्पित करें। ‘गुरु-कृपा
माल्य’ को गले में धारण कर ‘स्फटिक माला’ से गुरु मंत्र का
तीन, सोलह, इक्कीस या एक सौ आठ माला (अपनी
सामर्थ्यनुसार) मंत्र जप सम्पन्न करें।

गुरु मंत्र

ॐ परम तत्त्वाय नारायण गुरुभ्यो नमः

मंत्र जप समाप्ति के उपरान्त हवन, के लिए अग्नि प्रज्वलित
करें तथा निम्न मंत्र बोलते हुए, सुख, सम्पदा व सिद्धि प्रदायक,

‘श्रीयत्व फल’ को एक-एक कर में अग्नि समर्पित करें -

ॐ नारायणाय नमः स्वाहा।

ॐ भुवनेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ परमेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ भाग्येश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ योगेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ वागीश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ पूर्णेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ मंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ तंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ वंत्रेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ व्याप्तेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ श्रीं शेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ ह्रीं शेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ वतीं शेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ तपसेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ कालेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ निखिलेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ यजन्त्रेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ लेखेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ करुणेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ मदनेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ सकलेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ ज्ञानेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ दिव्येश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ सिद्धेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ अमलेश्वराय नमः स्वाहा।

ॐ इच्छेश्वराय नमः स्वाहा।

तत्पश्चात् गुरु-आरती एवं समर्पण स्तुति (दैनिक साधना
विधि पुस्तक से) सम्पन्न करें तथा आसन पर शान्त चित्त से
बैठ कर, गुरुदेव से हाथ जोड़ कर अपनी गलतियों के लिए
क्षमा-प्रार्थना करते हुए, गुरु पादुका पंचकम् का पाठ कर।
गुरुदेव की कृपा-प्राप्ति की कामना करें।

इस प्रकार पूजन सम्पन्न करने से निश्चित रूप से मनोवांछित
फल प्राप्त होता है। गुरु-चित्र व यंत्र को अपने पूजा स्थान में ही
स्थापित रहने दें, स्फटिक माला से नित्य पूजन के लिए प्रयोग
करें। सदैव यही भाव रखते हुए जीवन में संकल्प लें कि आज
से मैं गुरु सेवा के जिस कार्य को हाथ में ले रहा हूं उसे पूरे वर्ष
अपनी पूर्णशक्ति से सम्पन्न करूंगा।

साधना सामग्री - 360/-

हिंडिम्बा यंत्र

- ❖ क्या आप शत्रुभय से मुक्तकारा पाना चाहते हैं ?
- ❖ क्या आप अकाल मृत्यु के भय को समाप्त करना चाहते हैं ?
- ❖ क्या आप मुक्तदमें में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं ?
- ❖ क्या आप जीवन में सर्वत्र विजय और चतुर्दिक्ष सफलता प्राप्त करना चाहते हैं ?
- ❖ यह दुर्लभ यंत्र आपके इतन सभी उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक है औरपूर्णतः तिःशुष्क भी।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि “मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित ‘हिंडिम्बा यंत्र’ 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें”, आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित ‘हिंडिम्बा यंत्र’ भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुकृष्णाम् दिल्ली

जिक्क मूर्मि पर कैकड़ों प्रयोग और अकंक्षियों दीक्षाएं
कम्पन्न हो चुकी हैं, उक्के किंद्रु चैतन्य दिव्य मूर्मि
पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों
के लिए यह योजना प्रारंभ हुई
है, इसके अन्तर्गत विशेष
दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम'
में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में
ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान
के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,
जो कि उस दिन शाम 6 से 8
बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि
श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी
दिन से साधनाओं में सिद्धि का
अनुभव भी होने लगता है।



मंगलवार, 24-05-05

जीवन में बल, बुद्धि, साहस, कर्मठता, तेजस्विता, ओज और संकटों पर विजय प्राप्त कर लेने का साहस और सब कुछ अदम्य उत्साह का मिला जुला रूप आ जाती हैं, और पग-पग पर शत्रु हम पर वार करने के लिए तैयार खड़े रहते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि छुरा सामने से ही भोका जाए, आज कल लोग छोटे-मोटे सड़क छाप तांत्रिकों से कुछ ऐसे प्रयोग करा देते हैं, जिनसे जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। घर में कलंक, आए दिन एक्सीडेंट, चोट लगना, खर्च का तेजी से बढ़ जाना, घर में लोगों का बीमार रहना, मन में उदासी व निराशा की भावना - ये सब आप पर कराए गए किसी तंत्र प्रयोग के कारण भी हो सकता है। इसके अलावा अनजाने में भी हमसे कुछ दोष हो जाता है, जिसके कारण अशरीरी आत्माएं हमारे अन्दर निवास कर लेती हैं, जिनके प्रभाव से जीवनी शक्ति समाप्त सी हो जाती है।

हनुमान साधना द्वारा ऐसी कोई भी बाधा टिक नहीं सकती है, क्योंकि इस साधना के बाद हनुमान सदैव अपने साधक की प्रतिपल रक्षा करते हैं।

बुधवार, 25-05-05 प्राण वल्लभा किञ्चरी प्रयोग

जिस तरह अप्सरा एक देव योनि है उसी प्रकार किञ्चरी भी एक योनि है। अप्सरा वर्ग की तुलना में किञ्चरियों की साधना कम प्रचलित है, यद्यपि ये अधिक शीघ्रता से सिद्ध होने वाली हैं... क्योंकि जहां अप्सरा को सिद्ध करने के लिए साधक को ही प्रयास करना पड़ता है, वहीं इसके विपरीत किञ्चरियां स्वयं इस बात के लिए प्रयत्नरत रहती हैं, कि उन्हें मृत्युलोक में श्रेष्ठ साधना सम्पन्न पुरुषों का साहचर्य प्राप्त हो सके। ऐसे साधकों का साहचर्य प्राप्त कर वे स्वयं अपने को धन्य अनुभव करती हैं, और अपने साधक को जीवन के रूप, रस, यौवन, धन, ऐश्वर्य, मार्धुर्य सभी कुछ प्रदान करती हैं... ऐसी ही एक किञ्चरी का नाम है प्राण वल्लभा।

गुरुवार, 26-05-05 इन्द्रकृत स्वर्ण लक्ष्मी प्रयोग

यदि वैभव और ऐश्वर्य का एक ही स्थान पर पूर्ण विस्तार देखना हो तो, इन्द्र के दरबार के अलावा कोई दूसरी ऐसी जगह नहीं है, जहां इतना विपुल ऐश्वर्य बिखरा पड़ा हो, स्वर्ण आभूषणों, रत्न-मणिकर्णों से आभूषित देवगण, यौवन से परिपूर्ण अप्सराएं, सुन्दर नन्दन कानन और भौतिक दृष्टि से हर प्रकार की पूर्णता का नाम ही स्वर्ग है।

स्वर्ग के इस ऐश्वर्य के पीछे रहस्य है इन्द्र प्रतिपादित एवं की गई स्वर्ण लक्ष्मी साधना का। इस साधना द्वारा साधक अपने जीवन में विपुल ऐश्वर्य को निमत्रण दे सकते हैं। लक्ष्मी और स्वर्ण लक्ष्मी की कृपा साधक पर आजीवन बरसती है, फिर अभाव या दरिद्रता उसके जीवन में रह नहीं पाती है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि परम्परा की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे, उससे भी अधिक समुद्रतट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां विव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी इर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धूम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जायत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन दिवसों को साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला संधर्मित की गई है।

योजना के बारे में इन 3 दिनों के लिये 24-25-26 मई

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $240 \times 5 = \text{Rs.} 1200/-$ जमाकर के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोषपुर कार्यालय भेजें।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊर्जाओं को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव का, अध्युरेपन को दूर कर देने का, जीवन में असुल्लानीय बल, साहस, पौष्ट्र एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का...

* गुरु प्रदान शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य द्वारा वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निषुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है...

* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों का जल में अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में स्थायी बनेगी प्रदान की जाएगी।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

महाकाली महाविद्या दीक्षा

यह तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है। आप चाहें या न चाहें विघ्नकारी तत्व आपके जीवन की शांति, सौहार्द भंग करते ही रहते हैं। एक दुष्ट प्रवृत्ति वाले व्यक्ति की अपेक्षा एक सरल और शांत प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के लिए अपमान, तिरस्कार के द्वारा खुले ही रहते हैं। आज ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है, जिसका कोई शत्रु न हो ... और शत्रु का तात्पर्य किसी मानव जीवन की शत्रुता से ही नहीं, वरन् रोग, शोक, व्याधि, पीड़ा भी मनुष्य के शत्रु ही कहे जाते हैं, जिनसे व्यक्ति हर क्षण त्रस्त रहता है... और उनसे छुटकारा पाने के लिए टोने टोटके आदि के चक्कर में फंसकर अपने समय और धन दोनों का ही व्यय करता है, परन्तु फिर भी शत्रुओं से छुटकारा नहीं मिल पाता।

महाकाली दीक्षा के माध्यम से व्यक्ति शत्रुओं को निस्तेज एवं परास्त करने में सक्षम हो जाता है, चाहे वह शत्रु आभ्यान्तरिक हों या बाहरी, इस दीक्षा के द्वारा उन पर विजय प्राप्त कर लेना है, क्योंकि महाकाली ही मात्र वे शक्ति स्वरूप हैं, जो शत्रुओं का संहार कर अपने भक्तों को रक्षा करच प्रदान करती हैं।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 011-27196700

श्री गणेशा स्तोत्रम्



देवों में प्रथम पूज्य भगवान गणपति की पूजा साधना, आवाधना, ध्यान और स्थापना जीवन के प्रत्येक शुभ कार्य में आवश्यक है, जब साधना विधान का ज्ञान है, पारदेशवर गणपति विद्वाह रूप में है तो उन्हें अपने पूजा स्थान में स्थापित कर स्तोत्र का पाठ वंदना अवश्य ही करनी चाहिए। जहाँ गणपति स्थापित होते हैं, वहाँ ऋषिद्वि-सिद्धि, शुभ-लाभ अपने आप स्थापित हो जाते हैं -

दिवस का प्रारंभ गुरु पूजन और गणपति पूजन से ही होना चाहिए, विध्नविनाशक गणपति को देवताओं का अधिपति एवं प्रथम पूज्य माना जाता है, जिन्होंने भगवान शंकर और माता पार्वती की परिक्रमा कर संसार में आदर्श स्थापित किया, उन गणेश का ध्यान, वंदन जीवन में निरन्तर कल्याण कारी होता है, जिन के बारे में यह कहा जाता है कि -

विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विध्नतस्य न जायते ॥

अर्थात् विद्या प्रारंभ करते समय, विवाह के समय, गृह प्रवेश के समय, घर से बाहर जाते समय, यात्रा प्रारंभ करने से पहले, युद्ध में जाने से पहले, संकट के समय जो विध्नविनाशक, वरदायक भगवान गणपति की वंदना करता है उसकी सदैव विजय होती है। क्योंकि जहाँ गणपति है वहाँ आदि देव शिव और महादेवी पार्वती भी है, वहाँ ऋषिद्वि और सिद्धिद्वि है, शुभ और लाभ है, अर्थात् जीवन का सम्पूर्ण आनन्द है। प्रस्तुत स्तोत्र गणेश वंदना का महान स्तोत्र है, जिसका नित्य प्रति और विशेष कर बुधवार को तथा प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को अवश्य ही करना चाहिए।

श्री गणेश स्तोत्रम्

ॐ कारमांधं प्रवदन्ति सन्तो वाचः शुतीन्नामपि वे गुणन्ति ।
गजाननं देव- गणाननांधिं भजेऽहमद्वेन्दु - कृतावतंसम् ॥१॥

पादारविन्दार्चनं तत्पराणां संसार - दावानलं भङ्ग-दक्षम् ।
निरन्तरं निर्गत-दान-तोयैस्तं नौमि विघ्नेश्वरमम्बुजाभम् ॥२॥

कृतङ्ग- रागं नव-कुंकुमेन, मत्तालि - मालां मद- पङ्क-लग्नाम् ।
निवारयन्तं निज-कर्ण-तालैः, को विस्मरेत् पुत्रमनङ्ग-शत्रोः ॥३॥

शम्भोर्जटा— जूट-निवासि-गङ्गा-जलं समानीय कराम्बुजेन।
लीताभिराराच्छवमर्चयन्तं, जजाननं भक्ति— युता भजन्ति॥४

कुमार-भुक्त्रौ पुनरात्म-हेतोः, पयोधरौ पर्वत-राज-पुत्र्याः।
प्रक्षालयन्तं कर-शीकरेण, मौजैद्येन तं नाग- मुखं भजामि॥५

त्वया समुद्धृत्य गजास्य-हस्तं, संशीकराः पुष्कर-रन्ध्र-मुक्तः।
व्यामङ्गने ते विचरन्ति ताराः, कालात्मना मौक्तिक-तुल्य-भासः॥६

क्रीडा-रते वारि-निधौ गजास्यै, वेलामतिक्रामति वारि-पूरे।
कल्पावसानं परिचिन्त्य देवाः, कैलास-नाथं श्रुतिभिः स्तुवन्ति॥७

नागानने नाग-कृतोत्तरीये, क्रीडा-रते देव-कुमार-सङ्गे।
त्वयि क्षणं काल-गति विहाय, तौ प्राप्तुः कन्दुकतामिनेन्दु॥८

मदोल्लसत्-पञ्च- मुखैरजस्त्रमध्यापयन्तं सकलागमार्थान्।
देवान् ऋषीन् भक्त-जनैक-मित्रं, हेरम्बमकर्णिणमाश्रयामि॥९

पादाम्बुजाभ्यामति-कोमलाभ्यां, कृतार्थयन्तं कृपया घरित्रीम्।
अकारणं कारणमाप्त-वाचां, तद्वाग-वक्त्रं न जहाति चेतः॥१०

यैनापितं सत्यवती-सुताय, पुराणमालिख्य विष्णाण-कोटच्च।
तं चन्द्र-मौलेस्तनयं तपोभिराराध्यमानन्द-धनं भजामि॥११

यदं श्रुती-नामपदं स्तुतीनां, लीलावतारं परमात्म-मूर्तेः।
नागात्मको वा पुरुषात्मको वेत्यभेदमाद्यं भज विध्न-राजम्॥१२

पाशांकुशौ भग्नरदं त्वभीषं, करैर्दधानं कर-रन्ध्र-मुक्तैः।
मुक्त-फलाभैः पृथु-शीकरौथैः, सिञ्चन्तमङ्गं शिवयोर्भजामि॥१३

अनेकमेकं गजमेक-दन्तं, चैतन्य-रूपं जगदादि-बीजम्।
ब्रह्मेति यं ब्रह्म-विदो वदन्ति, तं शम्भु-सूनुं सततं भजामि॥१४

अङ्गे स्थिताया निज-वल्लभाया, मुखाम्बुजालोकन-लोल-नेत्रम्।
स्मेरानन्दाङ्गं मद-वैभवेन, रुद्रं भजे विश्व- विमोहनं तम्॥१५

ये पूर्वमाराध्य गजानन! त्वां, सर्वाणि शास्त्राणि पठन्ति तेषाम्।
त्वत्तो न चान्वत् प्रतिपाद्यमस्ति, तदस्ति चेत् सत्यमसत्य-कल्पम्॥१६

हिरण्य वर्ण जगदीशितारे, कवि पुराणं रवि- मण्डलस्थं।
जजाननं यं प्रवदन्ति सन्तस्तत् काल- योगेस्तमहं प्रपद्ये॥१७

देवान्त गीतं पुरुषं भजेऽहमात्मानमानन्द- घनं हृदिस्थम्।

जग्जाननं यन्महसा जनानां, विद्धनान्थकारो विलयं प्रवाति॥१८

शम्भोः समालोक्य जटा-कलापे, शशाङ्क-खण्डं निज-पुष्करेण।
स्व-भजन-दन्तं प्रविचिन्त्य मौजध्यादाकर्षु-कामः श्रियमातनोतु॥१९

विद्धनार्जलानां विनिपातनार्थ, यं नारिकेलैः कदली-फलाद्यैः।
प्रभावयन्तरो मद-वारणास्यं, प्रभुं सदाऽभीष्टमहं भजेतम्॥२०

यज्ञेरन्ने के र्वहुभिस्तपोभिराराध्यमाद्यं जज राज वक्त्रम्।
स्तुत्याऽन्या ये विधिना स्तुवन्ति, ते सर्व-लक्ष्मी-निधयो भवन्ति॥२१

// श्री जगेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम् //

आवार्थ

सभी शास्त्र, वचन जौ अगवान द्वारा रचे गये तथा हैं। तो जल राशि उछल-उछल कर किनारे तीँड़ने लगती श्रवण के योग्य हैं, वे वचन तथा सिद्ध वचन तिन्हें 'आद्य हैं, और देवता यह सीचने लगते हैं कि प्रलय आ नया है, वे उँकार' कहते हैं। देवता छंद वंदना करते हैं, तथा मस्तक अगवान शंकर का आळान करने लगते हैं। उन अगवान पर अर्ध चन्द्र आभूषण के समान शीशायमान हैं, उन गणपति की मैं निरन्तर वंदना करता हूं॥७॥

मजानन का मैं वंदन करता हूं॥१॥

आपके शरीर मैं मद् द्रव्य निरन्तर प्रवाहित होता रहता है, और यह मद् द्रव्य संसारिक व्यक्तियों का दाह, अग्नि की नष्ट करने मैं समर्थ है, ऐसे महान रक्त कमल के समान आशा वाले विद्वनेश्वर की मैं प्रणाम करता हूं॥२॥

आपके स्वरूप मैं नित्य नवीन कुमकुम का लैपन किया जाता है, तथा अपने दोनों कर्ण की हिलाकर मद् मैं इबै हुए अंदरों की हटाते रहते हैं। आप कामदेव की हीन करने वाले अगवान शिव के पुत्र हैं, आपका मैं निरन्तर स्मरण करता हूं॥३॥

अगवान गणपति अपने करकमलों द्वारा अगवान महेश्वर के जटाझूट से नंगा जल लैकर उसे कीड़ा करने के बहाने से अगवान शंकर की विराजमान रखते हैं, जिससे नंगा निरन्तर बहती रहे, उन श्री मजानन की मैं पूर्ण अक्षि सहित वंदना करता हूं॥४॥

जौ अपनी सूंड मैं जल अरकर आदि शक्ति मां पार्वती का अभिषेक करते हैं, और उसे निरन्तर प्रसङ्ग करते हैं, उन अगवान गणपति का मैं संदेव पूजन वंदन करता हूं॥५॥

है दिव्य देव मजानन ! आप द्वारा अपनी सूंड मैं उठाकर जौ जल बिन्दु आकाश की और फैलाये जाते हैं वही जल बिन्दु काल क्रम मैं तारे बनकर प्रकाशित होकर अग्न मंडल मैं धूमते हैं, मैं आपका वंदन करता हूं॥६॥

आपकी महिमा विशाल है, जब सामर मैं जल कीड़ा करते श्रवण के साथ कीड़ा करते हैं, तब यह महान लीला देखकर सूर्य और चन्द्र भी अपनी काल मति शूलकर आपके सठमुख कीड़ा कढ़ाक अर्थात् आपके सठमुख ठेंद बनकर उपस्थित हो जाते हैं। ऐसे अगवान गणपति की मैं वंदना करता हूं॥७॥

आप अपने बाल रूप मैं जब उत्तरी धारण कर देवताओं के साथ कीड़ा करते हैं, तब यह महान लीला देखकर सूर्य और चन्द्र भी अपनी काल मति शूलकर आपके सठमुख कीड़ा कढ़ाक अर्थात् आपके सठमुख ठेंद बनकर उपस्थित हो जाते हैं। ऐसे अगवान गणपति की मैं वंदना करता हूं॥८॥

आप अपने पंचमुखी द्वारा संदेव देवीं और त्रैषियों की वृद्धतम आगम शास्त्री का अर्थ बताते हैं, और उन्होंने हुए सूर्य के समान रक्त वर्ण के कारण आपका नाम 'हैरम्ब' है तथा भर्तों के एक मात्र मित्र है। उन अगवान गणपति की शरण मैं आकर मैं अपने धन्य धन्य अनुभव करता हूं॥९॥

जौ अपने चरण कमलों के स्पर्श द्वारा इस पृथ्वी की धन्य करते हैं, तथा अपनी सिद्ध वाणीके कारण जगत के सभी कार्यों के कारण हैं, और चैतना संदेव आपके पास विद्यमान रहती है, उन अगवान मजानन का मैं वंदन करता हूं॥१०॥

आपकी महिमा तौ उतनी विशाल है कि आपने विशाल ढांतों के अवभाव से पुराण और श्रीमद् भागवत की लिपि बद्ध कर दिया और जौ आनन्द मय 'चन्द्रमीली अगवान शंकर' के पुत्र हैं ऐसे ज्ञान के प्रकाश मजानन की मैं वंदना करता हूं॥११॥

श्रुति, पुराण, स्तुति के द्वारा भी आपका स्तवन पूर्णरूप से नहीं किया जा सकता और परमात्मा मूर्ति के लीलारूपी

अवतार हैं, जो नज़ार्मूर्ति स्वरूप हैं या पुरुष मूर्ति स्वरूप हैं। यह समझ के परे हैं उन आदि देव विद्वन्हर्ता नज़ारन की मैं वंदना करता हूं॥१२॥

आपके स्वरूप मैं चार हाथों मैं पाश, अंकुश, अन्गदंत, और वरमुद्रा धारण किये हुए हैं तथा अपने सुंद के छिद्र से निकलती हुई मौती कणों दौसी डलधारा से अगवान शिव और अवानी के साक्षात् शरीर का अभिषेक करते हैं, उन अगवान नज़ारन की मैं वंदना करता हूं॥१३॥

जौ एक हीकर भी अनेक रूप अर्थात् द्वादश नामों से शौभा पाते हैं, जो चैतन्य रूप है, जो जगत के आदि बीज है, ब्रह्मविद्या के जानकार, जिन्हें ब्रह्म कहते हैं, उन शम्भुपुत्र श्रीगणेश की मैं वंदना करता हूं॥१४॥

जिनके दाये और बाये त्रिष्णि और सिंहि विराजमान हैं, जिनके मुख कमल पर सदा कोमल मुस्कान रहती है, तथा अपने मस्तक से निकलने वाली मदभाश से सर्वे प्रसन्न रहती हैं, उन जगत मौहक गणपति की मैं वंदना करता हूं॥१५॥

हे देवाधिदेव नज़ारन ! जो सर्वप्रथम आपकी पूजाकर शास्त्रों का अद्ययन करते हैं, उन्हें आपके स्वरूप का दृश्य प्राप्त होता है, संसार के अन्य दृश्य सामान्य प्रतीक होते हैं, उन नज़ारन की मैं वंदना करता हूं॥१६॥

आपके शरीर की शौभा स्वर्ण के समान है, और नगन मंडल, आदित्यमंडल मैं स्थित देवता, सप्तऋषि, साधु 'नज़ारन' कहते हैं, मेरी यही इच्छा है कि उन अगवान गणेश की मैं निरन्तर स्मरण कर प्राप्त करुं॥१७॥

जिनके तैज से विद्वन्हर्पि अंधकार का नाश हो जाता है, दैदान, शास्त्र द्वारा जिन्हें आनन्दद्वयन परमात्मा के नाम से जाना जाता है, उन्हीं नज़ारन की मैं अपने हृक्य मैं स्थापित होते कि प्रार्थना करता हुए वंदना करता हूं॥१८॥

जो गणपति अपने बाल स्वरूप मैं अगवान शंकर के डटा मैं स्थित चंद्रखण्ड की अपना टूटा हुआ दांत समझकर खींचने का प्रयास करते हैं, और शंकर प्रसन्न होते हैं, ऐसे अगवान गणेश मेरे ऐश्वर्य की दृष्टि करें, उनकी मैं वंदना करता हूं॥१९॥

अपने जीवन मैं बाधाओं की हटाने के लिए अगवान नज़ारन का द्यान करते हुए सभी लोग नारियल, कढ़ली फल, केला आदि से पूजा अर्चना करते हैं, और जो अपने अत्ती की, अभीष्टफल प्रदान करते हैं, ऐसे अगवान गणपति का मैं वंदन करता हूं॥२०॥



फलश्रुति

इस स्तोत्र के अंतिम श्लोक में लिखा है कि अनेक प्रकार के यज्ञों और तप के द्वारा जिन महादेव पुत्र की उपासना की जाती है और जो नज़ाराज मुख अगवान गणपति के स्तोत्र का पाठ करते हैं, उन्हें जीवन में विद्वाँ से मुक्ति मिलती है, और अगवानी लक्ष्मी की कृपा निरन्तर प्राप्त होती रहती है॥२१॥

विशेष

अपने पूजा स्थान में गुरु चित्र, गुरुविग्रह, गुरु यंत्र के साथ पारदेश्वर अर्थात् भगवान शंकर के रस से निर्मित 'पारद जग्नपति' की स्थापना कर उन्हें नित्य कुमकुम का तिलक लगाकर जो व्यक्ति, साधक गणेश स्तोत्र, गणेश मंत्र 'ॐ गं जग्नपतये नमः' तथा गणेश स्तुति का पाठ करता है उसे जीवन के सभी विद्वाँ में विजय प्राप्त होती है, क्योंकि गणपति का पारदेश्वर स्वरूप पूर्ण विद्वन्हर्ता और विजय प्राप्ति स्वरूप माना जाया है, यदि आपके पूजा स्थान में पारदेश्वर गुरुपादुका, पारदेश्वर गुरु यंत्र, और पारदेश्वर शिवलिंग तथा पारदेश्वर गणपति नहीं हैं तो वह पूजा स्थान पूर्ण नहीं है, आपके पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त ये चारों स्वरूप अवश्य ही स्थापित होने चाहिए।

19, 20, 21 अप्रैल 2005

निर्विल जयन्ती महोत्सव, फैजाबाद

शिविर स्थल: जी.आई.सी ग्राउण्ड, फैजाबाद
 आयोजक: फैजाबाद: अलख कुमार पाण्डेय - 05278-245851/
 323395 ○डॉ. रुद्र प्रताप सिंह - 09415047594 ○मणीन्द्र कुमार
 पाण्डेय - 09415076905 ○दीनानाथ शुक्ला ○राकेश कुमार
 पाण्डेय - 09839580058 ○राम खेलावन ○रमेशचन्द्र गर्ग
 ○रवीन्द्र कुमार पाण्डेय ○गणेश शंकर गुप्ता ○रमेश चन्द्र
 गुप्ता ○राजेन्द्र गुप्ता ○राज कपूर ○गोकुल प्रसाद ○राज
 माझी ○विनय कुमार ○बाबू भाई ○रामतेज ○अनिल कुमार
 गुप्ता ○अंजनी सिंह ○राज कुमार तिवारी ○एम.पी.यादव
 ○निशाकान्त पाण्डेय ○डॉ. सोनी सावित्री ○राम आधार
 ○राम इकबाल ○दीवानचन्द्र ○हरिप्रसाद ○अुनन्द ○ओम
 प्रकाश जायसवाल ○सभापति पाठक ○विद्यापति सहाय
 ○रमेश गुप्ता ○अंगद पटेल ○सिद्धाश्रम सहायक परिवार,
 रामनगर: अशोक कुमार शुक्ला एवं श्रीमती सरोज शुक्ला -
 05274-275007 ○अच्छेलाल यादव ○कैलाश सिंह ○श्रीमती
 सरोज शुक्ला ○सिद्धाश्रम सहायक परिवार, जहाँगीरगंजः
 अरुण कुमार तिवारी ○अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, शाहजहाँपुरः
 बी.के.भाई - 05842-311908 ○रामबाबू ○सुनील टण्डन ○मदल
 लाल गुप्ता ○राम नरेश ○प्रमोद मिश्रा ○अन्तर्राष्ट्रीय
 सिद्धाश्रम, लखनऊः बी.सी.शर्मा ○बसन्त श्रीवास्तव -
 09415001514 ○विवेक मिश्रा - 09839133188 ○अन्तर्राष्ट्रीय
 सिद्धाश्रम, रायबरेलीः एन.सी.सिंह ○जगदम्बा सिंह
 ○अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, सुल्तानपुरः भरतलाल गुप्ता ○राज
 कुमार तिवारी ○अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, प्रतापगढ़: कमलेश्वर
 पाण्डेय - 09415188288 ○डॉ. रवि श्रीवास्तव ○अन्तर्राष्ट्रीय
 सिद्धाश्रम, मिर्जापुरः संजय मिश्रा ○अमृतांशु मिश्र
 ○अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम, बहराइचः अखिलेश्वर कुमार
 पाण्डेय - 09415160759 ○पतन्जलि कुमार पाण्डेय ○आशीश
 कुमार मौर्या ○राजेन्द्र त्रिपाठी ○

♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦

21-22 मई 2005

शिवशक्ति महालक्ष्मी साधना शिविर, बैतुल

शिविर स्थल: न्यू बैतुल महाविद्यालय ग्राउण्ड, कोठी
 बाजार थाने के पास, बैतुल (म.प्र.)
 आयोजक: बैतुल (07141): प्रशांत गर्ग - 9825003036 ○राजीव
 खेडेलवाल - 9425002638 ○आर.सी.मिश्रा - 232341 ○मनोज
 अग्रवाल - 231541 ○जनकलाल मवासे - 239344 ○विजय

सीते - 9425002418 ○आई.डी.कुमरे - 239610 ○एस.एल.धूर्वे
 - 291820 ○टी.एन.अग्निहोत्री - 236779 ○राजेन्द्र पंवार -
 225266 ○बलदेव दवन्डे - 232436 ○ओमकार साहू
 9329037801 ○पी.आर.सोनारे - 232500 ○जनक प्रसाद ठेकेदार
 - 232291 ○राजश्री मरकाम - 237974 ○आठनेर(07144):
 अमित जीत पुरे - 286453 ○मुलताई(07147): एन.के.श्रीवास्तव
 - 9425149852 ○सी.एल.मरकाम - 297585 ○सरदार निर्मल
 सिंह - 224333 ○मनीष परमार - 224577 ○आमला(07147):
 डॉ. संतोषराव कवडकर - 285772 ○उदय लाल मालवीय -
 285892 ○राजेश वटटी ○जगल उईक (सरपंच) ○सारणी
 (07146): एम.एल.हारोडे - 250813 ○एस.आर.पडलक -
 256273 ○सुन्दरसिंह ठाकुर - 271791 ○एम.एल.गायकवाड़ -
 - 278681 ○शिवकुमार धाइसे - 250764 ○अर्जुन सिंह उईक
 - 251317 ○घोड़ा डोगरी (07146) नरेन्द्र महतो - 296944
 ○शाहपुर (07142) महेन्द्र मवासे - 234664 ○शंकरलाल जीतपुरे
 - 228129 ○भैंसदेही (07143) एस.आर.उईक - 231473
 ○ब्रह्मपुरी: सुधीर सेलोकर ○भोपाल (0755) : पदाम-
 2783931 ○विदिशा (07592) : बी.पी.दूबे - 236652 ○इंदौर :
 कुलदीप - 09425057411 ○

♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦

29 मई 2005

माँ चामुण्डा साधना शिविर, कांगड़ा।

शिविर स्थल: माँ चामुण्डा धाम, जिला-कांगड़ा (हि.प्र.)
 धर्मशाला एवं कांगड़ा-पालमपुर राष्ट्रीय मार्ग में मेला स्थान से
 चामुण्डा धाम के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है।

आयोजक: पालमपुर: आर.एस. मिन्हास - 01894-238356
 ○सुरेश सुवेहिया - 233666 ○धर्मशाला: आर.एस. वधवार
 - 094180-88358 ○कमल - 094181-22854 ○ललित - 094180-
 86082 ○नवरत्न भाटिया - 098164-82685 ○नगरोटा सूरियां:
 ओम प्रकाश शर्मा - 01893-265174 ○ज्वाली: चमन लाल
 कौण्डल - 094180-30506 ○भूरपूर: पीताम्बर - 01893-250312
 ○एन.सी.शर्मा - 250614 ○घुमारवी: के.डी.पण्डित - 094180-
 65655 ○सोहन लाल ○मण्डी: शैलेन्द्र (शैली) - 094180-
 50051 ○शिमला: नरेश कुमार - 0177-2625557 ○ऊना:
 अमरजीत - 01975-225022 ○चम्बा: अयोध्या प्रसाद - 01899-
 225704 ○

♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦♦

3 जुलाई 2005

दस महाविद्या साधना शिविर, मुम्बई



निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करै सन्मान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान॥

बल, बुद्धि, शौर्य, निःरता प्राप्ति हेतु
भूतप्रेत, निर्बलता, भय अनिष्ट निवारण हेतु

हनुमान सिद्धि यंत्र

यह सिद्धि बात है कि कृष्ण पक्ष में अर्द्धरात्रि के पश्चात् शहर क्या घने जंगल अथवा शमशान में श्री हनुमान मंत्र, हनुमान चालीसा इत्यादि का पाठ करते हुए निकल जाये तो सर्प, बिचू, जंगली जानवर क्या भूत-प्रेत-पिशाच भी आपके पास नहीं फळ सकते।

मरणान्तक पीड़ा से व्यास कष्ट भोगते हुए रोगियों को हनुमान साधना से अभिमन्त्रित कर जल पिलाया है और हनुमान जी की कृपा से वे पूर्ण स्वरूप हुए हैं, क्योंकि ऐसा चमत्कार केवल राम भक्त हनुमान ही कर सकते हैं, वे आपने भक्त को कष्ट में नहीं दख सकते और उनके लिए कृष्ण भी करना सहज सम्भव है, जो एक संजीवनी बूटी के लिए पूरा पहाड़ उठा कर ले जा सकते हैं, जो रावण जैसे महा-प्रतापी का अहंकार चूर-चूर कर सकते हैं। ऐसे एकादश रात्रि की महिमा उनकी भक्ति करके ही जानी जा सकती है।

श्री हनुमान प्रतीक हैं - ब्रह्मचर्य, बल, पराक्रम, वीरता, भक्ति, निःरता, सरलता और विश्वास के। इनके एक-एक गुण के सम्बन्ध में हजारों अद्याय लिखे जा चुके हैं, निर्बल हो कर अदीन हो कर जीना भी कोई जीना है क्या? शत्रु बाधा या अन्य बाधायें बड़ी अथवा छोटी नहीं होती, वह तो केवल व्यक्ति अथवा घटना होती है और उस पर आत्मविश्वास द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है और जो श्री हनुमान का साधक है, उसके भीतर तो आत्मविश्वास की आत्म शक्ति छलकती रहती है, उसे ज्ञान है कि मेरे पीछे प्रबल पराक्रम देव श्री हनुमान बजरंग बली खड़े हैं, फिर मुझे काहे की चिन्ता।

साधना विधान

साधक मंगलवार को लाल रंग के आसन पर आसन पर दक्षिण की ओर मुँह करके बैठे। सामने तेल का दीपक जलाये उंवं शुद्ध का भोग (धी में गूंथ का 11 माला जप करे।

इस प्रकार नित्य प्रति शत्रि में ही (दस बजे के बाद) 11 दिन तक करे। प्रतिदिन जो भोग लगाएं रात में मूर्ति के सामने ही रहने वें उंवं दूसरे दिन प्रातः यह भोग हनुमानजी के भक्तों में वितरित कर देतथा स्वयं श्री ग्रहण करे। यह अनुष्ठान 11 दिनों कर) लगाये तथा मूँह की सिद्ध माला से निम्न मंत्र का है। बारहवें दिन यंत्र को किसी हनुमान मंदिर में दक्षिणा सहित अर्पित कर दें। साधना काल में साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करे। इस साधना द्वारा साधक को हाथों-हाथ लाभ स्वयं परिलक्षित हो जाता है।

न्यौष्ठावर 300/-

मंत्र

// उँ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा॥

कम्पक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

A.H.W

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 29-30 every Month

Postal No. RJ/WR/19/65/2003-05
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2003-05



माह : मई में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
06-07-08 मई

वर्ष - 25

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

दिनांक
24-25-26 मई

अंक - 04

:: संपर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफ़ोन-0291-2432010
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27182248, टेली फैक्स 11-27196700